

कथक नृत्य के प्रचार-प्रसार में नृत्य-नाटिकाओं का योगदान-एक
विश्लेषणात्मक अध्ययन

**Kathak Nritya ke Prachar - Prasar me Nritya - Natikayon ka
Yogdan: Ek Vishleshnatmak Adhyayan**

Thesis Submitted for the Award of the Degree of

DOCTOR OF PHILOSOPHY

in

Performing Arts - Music

By

Shivani

Registration Number: 41900138

Supervised By

Dr. Smriti Bhardwaj (23748)

Department of Performing Arts

Assistant Professor

Lovely Professional Universty

Co-Supervised By

Dr. Sonia Ahuja (30900)

Department of Performing Arts

Assistant Professor

Lovely Professional University



LOVELY
PROFESSIONAL
UNIVERSITY

**PHAGWARA
PUNJAB (144411)
(2026)**

DECLARATION

I, hereby declared that the presented work in the thesis entitled “कथक नृत्य के प्रचार-प्रसार में नृत्य-नाटिकाओं का योगदान: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन” in fulfilment of the requirements for the degree of Doctor of Philosophy (Ph.D.), is the outcome of original research conducted by me under the supervision of Dr. Smriti Bhardwaj, Assistant Professor and Coordinator, Department of Performing Arts, Lovely Professional University, Punjab, India, and under the co-supervision of Dr. Sonia Ahuja, Assistant Professor, Department of Performing Arts, Lovely Professional University, Punjab, India. In accordance with the standard academic practice of reporting scientific and scholarly work, due acknowledgements have been made wherever the content is based on the findings or work of other researchers. I further declare that this work has not been submitted, either in part or in full, to any other university or institution for the award of any degree.

(Signature of Scholar)

Name of the Scholar: Shivani

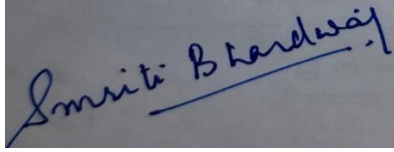
Registration No.: 41900138

Department/ School: Department of Performing Arts

Lovely Professional University, Punjab, India

CERTIFICATE

This is to certify that the work reported in the Ph.D. thesis entitled “कथक नृत्य के प्रचार-प्रसार में नृत्य-नाटिकाओं का योगदान: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन” submitted in fulfillment of the requirement for the award of degree of Doctor of Philosophy (Ph.D.) in the Department of Performing Arts of Lovely Professional University, Punjab is a research work carried out by Shivani Kapoor (Registration No.) 41900138, is bonafide record of his/her original work carried out under my supervision and that no part of thesis has been submitted for any other degree, diploma or equivalent course.



(Signature of Supervisor)

Name of supervisor: Dr. Smriti Bhardwaj

Designation: Assistant Professor & COD

Department: Department of Performing Arts

University: Lovely Professional University, Punjab



(Signature of Co - Supervisor)

Name of Co - Supervisor: Dr. Sonia Ahuja

Designation: Assistant Professor

Department: Department of Performing Arts

University: Lovely Professional University, Punjab

भूमिका

कथक भारत के प्रमुख शास्त्रीय नृत्यों में से एक है, जो अपनी अनूठी सौंदर्यता, सांस्कृतिक महत्ता और गहन अभिव्यक्ति क्षमता के लिए विशेष रूप से पहचाना जाता है। कथक नृत्य का उद्भव उत्तर भारत की प्राचीन कथा-वाचन परंपरा से हुआ, जहाँ कथाकार या कहानीकार पौराणिक कथाओं का जीवंत चित्रण हावभाव, पद-संचालन और संगीत के संयोजन से करते हैं। प्राचीनकाल से आधुनिक काल तक समय के साथ-साथ कथक में विभिन्न सांस्कृतिक प्रभावों का समावेश हुआ, जिसमें मुगल काल का प्रभाव प्रमुख है। इस प्रभाव ने कथक नृत्य शैली में न केवल भक्ति और सूफी प्रवृत्तियों को सम्मिलित किया, अपितु इसकी परंपरा को विविधता और गहराई प्रदान की। कथक का अनूठा रूप इसके नृत्य (तत्कार, चक्कर और लयबद्धता) और अभिनय (भाव प्रदर्शन) के संतुलन में प्रकट होता है, जहाँ शुद्ध नृत्य और कथा-वाचन के माध्यम से मानवीय भावनाओं और समाज की विभिन्न स्थितियों का चित्रण किया जाता है। इस नृत्य शैली में नृत्य-नाटिकाओं का योगदान विशेष महत्व रखता है, क्योंकि इन नाटिकाओं के माध्यम से न केवल पौराणिक और सांस्कृतिक कथाओं को प्रस्तुत किया जाता है, अपितु आधुनिक, सामाजिक और दार्शनिक विषयों को भी गहराई से दर्शाया जाता है। इस विश्लेषणात्मक अध्ययन का उद्देश्य नृत्य-नाटिकाओं के माध्यम से कथक के प्रचार-प्रसार और सांस्कृतिक प्रभावों का अवलोकन करना है।

कथक में नृत्य-नाटिकाओं का प्रारंभिक उद्देश्य प्राचीन कथाओं को जन-जन तक पहुँचाना था। नृत्य-नाटिकाओं ने कथक को एक नये रूप में प्रस्तुत

किया, जहाँ कथक का प्रयोग रामायण, महाभारत और कृष्ण लीला जैसी पौरणिक कथाओं को जीवंत रूप में दर्शाने करने के लिए किया गया। इन नाटिकाओं के माध्यम से कलाकारों ने धार्मिक और सांस्कृतिक संदेशों को अधिक स्पष्टता और प्रभावी रूप से प्रस्तुत किया। नृत्य-नाटिकाओं का यह स्वरूप विशेष रूप से दरबारों में विकसित हुआ, जहाँ कलाकारों ने अपने नृत्य को रंगमंच की विभिन्न तकनीकों के साथ प्रस्तुत करना प्रारम्भ किया। इस ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में नृत्य-नाटिकाओं ने कथक को एक जीवंत और मनोरंजक शैली के रूप में प्रस्तुत किया समकालीन समय में नृत्य-नाटिकाओं ने कथक नृत्य को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर पहुँचाने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। नृत्य-नाटिकाओं ने कथक को एक संपूर्ण नाट्य अनुभव में परिवर्तित कर दिया है, जिसमें दर्शकों को अनुभव मिलता है। नृत्य-नाटिकाओं के माध्यम से प्रस्तुतियाँ दृश्य और श्रव्य दोनों रूपों में अधिक रोचक और प्रभावी हो जाती हैं, जिससे दर्शकों के साथ भावनात्मक और सांस्कृतिक संबंध स्थापित करना सरल होता है। उदाहरण के लिए, शिव तांडव, कृष्ण लीला और अष्ट नायिका जैसी नृत्य-नाटिकाओं ने दर्शकों को कथक की गहराई, लयबद्धता और भावनाओं के जटिल रूपों से परिचित कराया है।

कथक में नृत्य-नाटिकाओं के माध्यम से इस कला का प्रचार-प्रसार करने में कई प्रमुख कलाकारों का योगदान है। पंडित बिरजू महाराज, शोवना नारायण, राजेंद्र गंगानी और कुमुदिनी लाखिया जैसे प्रतिष्ठित कलाकारों ने कथक में नृत्य-नाटिकाओं को नया आयाम दिया। पंडित बिरजू महाराज द्वारा प्रस्तुत “कृष्ण लीला” और “कथा रघुनाथ की” जैसी नृत्य-नाटिकाओं ने धार्मिक कथाओं को जीवंत रूप में प्रस्तुत किया, जबकि शोवना नारायण

ने “मीरा” और “गालिब की दिल्ली” जैसी नृत्य-नाटिकाओं के माध्यम से कथक में दार्शनिक और समकालीन विषयों का समावेश किया। इसी प्रकार, राजेंद्र गंगानी द्वारा प्रस्तुत “शिव तांडव” ने कथक की शक्ति, भक्ति और सौंदर्य का अद्वितीय प्रदर्शन किया। आज के समय में नृत्य-नाटिकाओं का महत्त्व केवल शास्त्रीय प्रस्तुतियों तक सीमित नहीं है। इन नाटिकाओं ने कथक को एक सांस्कृतिक संवाद के रूप में प्रस्तुत किया है, जहाँ पर्यावरण संरक्षण, महिला सशक्तिरण और सामाजिक न्याय जैसे विषयों को दर्शाया जा सकता है। नृत्य-नाटिकाओं के माध्यम से कथक का प्रचार-प्रसार न केवल पारंपरिक दर्शकों में, अपितु नई पीढ़ी में भी हुआ है। इसके अतिरिक्त, डिजिटल प्लेटफार्मों, जैसे-यूट्यूब, सोशल मीडिया और ऑनलाइन प्रसारण के माध्यम से भी नृत्य-नाटिकाओं का विश्वव्यापी प्रचार हुआ है। इस विश्लेषणात्मक अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि नृत्य-नाटिकाओं ने कथक नृत्य के प्रचार-प्रसार में एक अनमोल योगदान दिया है। इन नाटिकाओं के माध्यम से कथक की कथात्मकता, लयबद्धता और सांस्कृतिक महत्ता को एक सशक्त और आकर्षक माध्यम में प्रस्तुत किया गया है। नृत्य-नाटिकाओं ने कथक को जन-जन तक पहुँचाने और इसके गहन सांस्कृतिक मूल्यों को जीवित रखने का कार्य किया है। अतः नृत्य-नाटिकाओं ने कथक को एक नए स्तर पर पहुँचाया है जहाँ यह न केवल एक शास्त्रीय नृत्य रूप है, अपितु सामाजिक और सांस्कृतिक संदेशों को व्यक्त करने का एक माध्यम भी बन गया है। नृत्य-नाटिकाओं के माध्यम से कथक को व्यापक रूप से मान्यता मिली है, और यह कलात्मक नृत्य शैली भारत की सांस्कृतिक आत्मा का एक अभिन्न अंग बन चुकी है।

कीवर्ड: कथक नृत्य, नृत्य-नाटिकाएं, सांस्कृतिक संरक्षण, शास्त्रीय नृत्य, प्रचार-प्रसार, भारतीय संस्कृति

प्राक्कथन

कथक नृत्य के प्रचार-प्रसार में नृत्य-नाटिकाओं का योगदान: एक विश्लेषणात्मक अध्ययन पर अभी तक कोई शोध कार्य प्राप्त नहीं होता है। इसलिए शोधार्थी ने इस विषय पर शोध कार्य करने की अनुमति लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, फगवाड़ा, पंजाब से पाकर शोधकार्य प्रारम्भ किया। प्रस्तुत शोध का प्रथम अध्याय कथक नृत्य की ऐतिहासिक यात्रा का विस्तारपूर्वक विवेचन करता है। इसमें कथक की उत्पत्ति, मंदिर परंपरा से दरबारी परिवेश तक की यात्रा, भक्ति आंदोलन का प्रभाव तथा मुगल काल में हुए सौंदर्यात्मक और संरचनात्मक परिवर्तनों का विश्लेषण किया गया है। इस अध्याय में यह स्पष्ट किया गया है कि किस प्रकार कथक ने धार्मिक भावभूमि से निकलकर श्रृंगार, लय, गति और नाटकीयता को आत्मसात किया तथा विभिन्न सामाजिक, राजनीतिक परिवर्तनों के साथ स्वयं को पुनर्भाषित किया। साथ ही, लखनऊ, बनारस और जयपुर घरानों के विकास और उनकी शैलीगत विशेषताओं को कथक के व्यापक सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया गया है।

द्वितीय अध्याय में कथक और नृत्य-नाटिकाओं से संबंधित उपलब्ध साहित्य की समालोचनात्मक समीक्षा की गई है। इसमें इतिहासकारों, नृत्यविदों, कलाकारों और शोधकर्ताओं द्वारा लिखे गए ग्रंथों, शोध पत्रों और लेखों का विश्लेषण किया गया है। यह अध्याय दर्शाता है कि अब तक कथक के विभिन्न पक्षों पर पर्याप्त अध्ययन हुआ है, किंतु नृत्य-नाटिकाओं के माध्यम से कथक के प्रचार-प्रसार पर केन्द्रित समग्र शोध का अभाव रहा है। इसी अध्याय में शोध की पद्धति, विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण, मौखिक साक्षात्कार,

प्रदर्शन विश्लेषण तथा सीमाओं का स्पष्ट उल्लेख किया गया है, जिससे शोध की वैधानिकता और प्रामाणिकता सुनिश्चित होती है।

तृतीय अध्याय कथक में नृत्य-नाटिकाओं के ऐतिहासिक और सैद्धांतिक विकास पर केन्द्रित है। इस अध्याय में नृत्य और नाट्य तत्वों के समन्वय को कथक नृत्यदृश्यात्मिकाओं के संदर्भ में समझाया गया है। भरतनाट्यम, ओडिसी, मणिपुरी और कुचिपुड़ी जैसी अन्य शास्त्रीय नृत्य परंपराओं के साथ तुलनात्मक अध्ययन करते हुए यह स्पष्ट किया गया है कि कथक नृत्य-नाटिकाएँ किस प्रकार अपनी विशिष्ट नाटकीय संरचना विकसित करती हैं। नवाब वाजिद अली शाह, उदय शंकर, राजा चक्रधर सिंह तथा समकालीन काल में पंडित बिरजू महाराज, शोवना नारायण और राजेंद्र गंगानी जैसे कलाकारों के योगदान के माध्यम से कथक में नृत्य-नाटिकाओं के विकास की निरंतरता को रेखांकित किया गया है।

चतुर्थ अध्याय कथक के प्रचार-प्रसार में पारंपरिक और आधुनिक माध्यमों की भूमिका का विश्लेषण करता है। इसमें गुरु-शिष्य परंपरा, मंचीय प्रस्तुति, प्रकाश, वेशभूषा, संगीत और रंगमंचीय तकनीकों के साथ-साथ आधुनिक संचार माध्यमों जैसे सोशल मीडिया, यूट्यूब, ओटीटी प्लेटफॉर्म, ऑनलाइन फेस्टिवल और वैश्विक मंचों के प्रभाव को विस्तार से समझाया गया है। यह अध्याय यह स्पष्ट करता है कि नृत्य-नाटिकाओं के माध्यम से कथक समकालीन विषयों, जैसे स्त्री-विमर्श, सामाजिक चेतना, सांस्कृतिक पहचान और आधुनिक जीवन की जटिलताओं को प्रभावशाली ढंग से अभिव्यक्त कर रहा है।

अंतिम अध्याय में शोध के समस्त निष्कर्षों को संकलित करते हुए यह स्थापित किया गया है कि नृत्य-नाटिकाएँ कथक नृत्य के प्रचार-प्रसार का एक सशक्त माध्यम हैं। यह अध्ययन दर्शाता है कि कथक की नृत्य-नाटिकाएँ न केवल पौराणिक और ऐतिहासिक कथाओं को पुनः प्रस्तुत करती हैं, अपितु समकालीन सामाजिक यथार्थ को भी मंचीय भाषा प्रदान करती हैं। इस शोध के निष्कर्ष यह प्रमाणित करते हैं कि नृत्यदृनाटिकाओं के माध्यम से कथक एक शास्त्रीय नृत्य रूप से आगे बढ़कर सांस्कृतिक संवाद और सामाजिक अभिव्यक्ति की सशक्त भाषा बन चुका है।

इस प्रकार, प्रस्तुत शोध कथक नृत्य और नृत्य-नाटिकाओं के पारस्परिक संबंध को ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और समकालीन दृष्टिकोण से समझने का एक समग्र प्रयास है, जो कथक के प्रचार-प्रसार के अध्ययन में एक महत्वपूर्ण अकादमिक योगदान प्रदान करता है।

ACKNOWLEDGEMENT/ आभार

इस शोध को शब्दों में समेटते हुए मेरा मन अत्यंत भावुक हो उठता है। लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी, फगवाड़ा, पंजाब के प्रति मेरा हृदयपूर्ण आभार शब्दों में व्यक्त कर पाना मेरे लिए कठिन है। यह संस्थान न केवल मेरे शोध का केंद्र बना, बल्कि मेरे विचारों को आकार देने, मुझे आत्मविश्वास देने, और मेरे अंदर की शोधकर्ता को पहचान देने वाला सच्चा पथ प्रदर्शक भी रहा। यहाँ बिताए वर्षों ने मुझे सिर्फ ज्ञान नहीं दिया, बल्कि एक गहन आत्मिक और अकादमिक यात्रा की अनुभूति करवाई। इस विश्वविद्यालय की सकारात्मक ऊर्जा, अनुशासन, और कला के प्रति आदर ने मेरे भीतर की साधना को जीवंत बनाए रखा।

मैं सबसे पहले अपनी पीएचडी सुपरवाइजर, डॉ. स्मृति भारद्वाज जी के प्रति अपनी गहन कृतज्ञता व्यक्त करती हूँ। उनका मार्गदर्शन मेरे लिए सिर्फ एक शैक्षणिक दिशा नहीं था, बल्कि उन्होंने मुझे एक शोधकर्ता की तरह सोचने और संवेदनशीलता के साथ विश्लेषण करने की दृष्टि दी। उनकी सादगी, स्पष्टता और प्रोत्साहन ने इस कार्य को संभव बनाया। इसी श्रृंखला में मैं डॉ. सोनिया आहूजा जी, मेरे पीएचडी सह-पर्यवेक्षक की भी आभारी हूँ, जिन्होंने समय-समय पर अपने विचारों, सुझावों और प्रेरणास्पद संवादों से इस शोध को संतुलन और विस्तार प्रदान किया।

मेरी पूरी शोध यात्रा के दौरान, परफॉर्मिंग आर्ट्स विभाग, लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी की प्रमुख, डॉ. प्रतिभा शर्मा जी का मार्गदर्शन और सहयोग मुझे निरंतर मिलता रहा। उनका विश्वास और प्रोत्साहन मेरे लिए एक मजबूत

सहारा रहा, जिसके बिना मैं इस मुकाम तक नहीं पहुँच पाती।

अपने व्यक्तिगत जीवन में, मैं अपने पति, **डॉ. आदित्य कपूर** की अतुलनीय भूमिका को शब्दों में नहीं बाँध सकती। उन्होंने मेरे हर संदेह, हर थकान और हर अनिश्चितता में मेरा साथ दिया। उनके प्रेम, धैर्य और अडिग विश्वास ने मुझे निरंतर प्रेरित किया कि मैं इस शोध को पूरे मनोयोग से पूर्ण कर सकूँ। मैं अपने ससुर, **श्री बी.सी. कपूर**, और सास, **श्रीमती सुनीता कपूर** के प्रति भी कृतज्ञ हूँ, जिन्होंने हमेशा मुझे अपने आशीर्वाद और स्नेह से संबलित किया। उनके सहयोग और प्रेरणा ने इस यात्रा को आसान और सुखद बनाया।

अपने माता-पिता, **स्वर्गीय श्री अवतार सिंह** और **स्वर्गीय श्रीमती रेनू बाला**, के प्रति मेरी श्रद्धा और भावनाएँ अनंत हैं। उनके संस्कार, शिक्षा और आशीर्वाद ने मुझे हर संघर्ष में स्थिर रहने और आगे बढ़ने की प्रेरणा दी। मैं उनके दिखाए मार्ग पर चलते हुए ही इस शोध को पूर्ण कर सकी हूँ।

मेरी पहली कथक गुरु, **डॉ. रश्मि नंदा**, और दूसरी कथक गुरु, **डॉ. प्रिया दत्ता जी** को भी मैं हृदय से धन्यवाद देती हूँ। उनके द्वारा दिया गया प्रशिक्षण और कथक के प्रति उनका समर्पण मेरी आत्मा में उतर गया, और इसी ने इस शोध की नींव रखी। **पं. संजीत गंगानी जी**, मेरे नृत्य गुरु, के प्रति मेरी कृतज्ञता विशेष है। उन्होंने न केवल कथक की तकनीक सिखाई, बल्कि उसकी आत्मा और भावनात्मक अभिव्यक्ति को भी समझाया। उनके मार्गदर्शन ने मेरी नृत्य दृष्टि को समृद्ध किया। मैं **डॉ. सुमीत मदान जी**, का भी आभार प्रकट करती हूँ, जिनका सहयोग और समर्थन इस शोध कार्य में प्रेरणास्रोत बना। उनके अनुभव और संवादों ने कई बार मेरे संदेहों का समाधान किया

और मेरी सोच को नई दिशा दी। अंत में मैं अपनी सुपुत्रियों, **आदिशा कपूर** और **आध्या कपूर** का भी आभार प्रकट करती हूँ, जिनका सहयोग और समर्थन मेरे लिए बहुत प्रेरणादायक रहा। यह शोध कार्य सिर्फ एक शैक्षणिक उपलब्धि नहीं है, यह उन सभी भावनाओं, संबंधों, और सहयोगों का प्रतिबिंब है, जिन्होंने मेरी यात्रा को संपूर्ण बनाया। आप सभी के प्रति मेरा हृदयपूर्वक आभार सदा बना रहेगा।

शिवानी कपूर

विषय-सूची

अध्याय - 1

कथक नृत्य का ऐतिहासिक पुनरावलोकन

1.1 अध्ययन की भूमिका.....	1
1.2 कथक शब्द का अर्थ.....	8
1.3 कथक नृत्य का परिचय.....	11
1.4 कथक की परंपरागत प्रयोग परंपरा.....	14
1.5 कथक नृत्य के घराने	29

अध्याय - 2

साहित्य की समीक्षा

2.1 कथक नृत्य पर सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन.....	53
2.2 शोध कार्य की प्रासंगिकता.....	56
2.3 समीक्षा विश्लेषण	57
2.4 शोध प्रविधि (Research Methodology).....	87
2.5 शोध के उद्देश्य	90
2.6 अध्याय का निष्कर्ष.....	91

अध्याय - 3

नृत्य नाटिकाओं का ऐतिहासिक पूर्णावलोकन

3.1 नृत्य नाटिका	93
3.2 नृत्य नाटिकाओं की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि.....	96
3.3 प्राचीन भारतीय नाट्य की उत्पत्ति.....	106

3.4 नृत्य नाटिकाओं द्वारा विभिन्न कलाकारों का योगदान कथक नृत्य के सन्दर्भ में.....	109
3.5 आधुनिक काल के कलाकारों का योगदान.....	119

अध्याय - 4

कथक नृत्य के प्रचार प्रसार में विभिन्न माध्यमों का योगदान

4.1 परिचय	138
4.2 परंपरागत प्रणाली.....	139
4.3 कथक में गुरु-शिष्य परंपरा के मूल सिद्धांत.....	140
4.4 गुरु-शिष्य परंपरा में प्रशिक्षण प्रक्रिया.....	141
4.5 पारंपरिक प्रशिक्षण में गुरु की भूमिका.....	141
4.6 आधुनिक युग में गुरु-शिष्य परंपरा का अनुकूलन.....	142
4.7 पारंपरिक प्रणाली से जुड़ी चुनौतियाँ.....	143
4.8 गुरु-शिष्य परंपरा के संरक्षण का महत्व.....	144
4.9 निष्कर्ष.....	144
4.10 घरानों के माध्यम से प्रचार-प्रसार.....	145
4.11 कथक के प्रमुख घराने.....	146

अध्याय - 5

समग्र निष्कर्ष एवं शोध निष्पत्तियाँ

प्रथम अध्याय

कथक नृत्य का ऐतिहासिक पुनर्वलोकन

1.1. भूमिका

नृत्य संस्कृति का अभिन्न अंग है । समय के साथ भिन्न – भिन्न संस्कृतियों का विकास हुआ और संस्कृति के इसी विकास के साथ साथ विभिन्न नृत्य शैलियाँ भी विकसित हुईं प्राचीनकाल से आधुनिक काल तक कला एवं संस्कृति का विकास मनुष्य एवं समाज के विकास का ही परिणाम है । वैदिक काल से आधुनिक काल तक विभिन्न गुफाओं, मन्दिरों अथवा स्तूपों इत्यादि पर चित्रित आकृतियाँ इस बात को परिमाणित करती हैं कि इतिहास के प्रत्येक युग में कला किसी न किसी रूप में विकसित होती रही । प्रागैतिहासिक काल की गुफाओं और चट्टानों में चित्रित आकृतियाँ इस बात का परिचय देती हैं कि इतिहास के उस अंधकार युग में भी नृत्य मनुष्य के जीवन का हिस्सा था । मानव के जब अपने मन की भावनाओं को भाषा के बिना भी अपनी आंगिक चेष्टों से दर्शाने का प्रथम प्रयास किया होगा , संभवतः वही इस सृष्टि का पहला नृत्य होगा आज भी जब मानव अपने मन के भावों को गीत, संगीत , लय इत्यादि की संगत से पद – संचालन और आंगिक क्रियाओं द्वारा बताने कि चेष्टा करता है , तो वह नृत्य ही कहलाता है ।

कला मानव शक्तियों की अनंत चेतना की अभिव्यक्ति का सहज और अमर प्रतिबिंब है । कला एक ऐसी बहुआयामी अध्यात्मिक मानसिक और सामाजिक तथ्य हैं जिसमें कोई वर्गीकृत भाषा, जाति, रंग नहीं है, यह एक स्वतन्त्र तत्व है जो लय ध्वनि, रंग, भावनाओं और गणना के सौन्दर्यगुणों के सार के तहत समाज को एकजुट करता है ।

भारतीय संस्कृति का अध्ययन करने पर यह ज्ञात होता है कि कला शब्द वैदिक काल से ही प्रयोग में रहा है। इस शब्द का प्रयोग सर्वप्रथम ऋग्वेद में प्राप्त होता है उपनिषदों में भी कला शब्द का प्रयोग हुआ है। मानवीय भावनाओं की अभिव्यक्ति का सर्वश्रेष्ठ साधन 'कला' है। भारतीय विद्वानों के अनुसार चौसठ (64) कलाएँ मानी गई हैं। जिनमें से काव्य, चित्र, मूर्ति और स्थापत्य कला को सर्वश्रेष्ठ मानते हुए इन्हें 'ललित कलाओं' के अन्तर्गत रखा गया है। काव्य चित्र, मूर्ति और स्थापत्य कलाएँ प्रकृति के सौन्दर्य से प्रभावित होती हैं, परन्तु संगीत एक ऐसी ललित कला है, जो प्रकृति को भी प्रभावित करती है। अतः समस्त ललित कलाओं में संगीत को सर्वोत्तम स्थान प्राप्त है। कोई भी नृत्य शैली अपने देश, समाज अथवा संस्कृति का अटूट अंग है, जो समय के साथ-साथ उस देश, समाज अथवा संस्कृति का एक अभिन्न अंग बन जाती है।

'ए डिक्शनरी ऑफ साइंस, लिटरेचर एण्ड आर्ट्स' में नृत्य को कुछ इस प्रकार परिभाषित किया है –

May be that defined as a graceful movement of the figure accompanied by gestures and attitudes indications of certain mental emotions , and by measured step in harmony with a piece of music arranged for the purpose the origin of all dancing is connected with religion and the practice of it involved great labour and skill.”¹

अतः इस परिभाषा से यह भी स्पष्ट होता है कि लगभग सभी नृत्यों की

¹Brande W.T , W. Cox rev George , (2000), A dictionary of science , literature , art p. no. 621

उत्पत्ति का आधार सर्वप्रथम धार्मिक रहा है और नृत्य कला प्राचीनतम कलाओं में से एक है। 'मिले' के अनुसार संगीत नृत्य की संगत के लिए बना तथा गीत नृत्य की व्याख्या के लिए उत्पन्न हुए। धार्मिक कृत्य संबंधी अथवा क्रिया संबंधी परिधान एवं नकाब जो कि नाट्य के प्रतिरूपण के लिए उपयोग किए गए। नाट्य की उत्पत्ति क्रिया संबंधी नकाबपोश नृत्यों से ही हुई। अतः 'मिले' के मतानुसार कलाओं में नृत्य सबसे पहले अस्तित्व में आया और धीरे – धीरे अन्य कलाएँ आवश्यकतानुसार अस्तित्व में आने लगी।

कर्ट साच ने अपनी पुस्तक ' हिस्ट्री ऑफ डांस ' में नृत्य को ही प्रथम स्थान दिया है। वे कहते हैं –

The dance is the mother of the arts music and poetry exist in time, painting and architecture in space. But the dance lives as once in time and space”²

मनुष्य के लिए शारीरिक चेष्टाएँ ही उसके जीवन के अस्तित्व का आधार हैं मनुष्य की उत्पत्ति के साथ ही जो सबसे पहले वह कर सका वे शारीरिक चेष्टाएँ ही थीं। भारतीय संस्कृति में संगीत के अंतर्गत गीतों को माना गया है।



²Sachs curt , (1952) history of dance : An interactive arts approach p. no. 3

अतः नृत्य, वाद्य का अनुगमन करता है व वाद्य गीत के पीछे – पीछे चलता है। ये तीनों ही कलाएँ एक दूसरे की पूरक हैं अपनी पूर्ण अभिव्यक्ति के लिए एक दूसरे पर आश्रित हैं । परन्तु गीत को स्वतन्त्र माना गया है और नृत्य प्रस्तुति के लिए गीत एवं वाद्य दोनों महत्वपूर्ण हैं।³

भारतीय संगीत परम्परा के मनीषियों के अनुसार संगीत में तीन विधाओं का सम्मिलन है:—

पं० शारंगदेव के अनुसार:—

“गीतम् वाद्य व नृत्यम् त्रयं संगीत मुच्यते ।”⁴

अर्थात् गायन – वादन के समूह को संगीत कहते हैं ।

पं० अहोबल के अनुसार :—

“ गीतं वादित्रं नृत्यानां त्रयं संगीतमुच्यते ।”⁵

अर्थात् संगीत वह कलात्मक विद्या है, जिसमें गीत, वाद्य तथा नृत्य का लयात्मक सम्मिलन दिखाई देता है ।

³संगीत रत्नावली ,अशोक कुमार 'यमन' , (2020), p. no.

⁴पं० शारंगदेव, संगीतरत्नाकर , प्रथम स्वरगताध्याय , प्रथम – पदार्थसंग्रह प्रकरण , श्लो. 21 ।

⁵पं० अहोबल , संगीत पारिजात , श्लो 20 ।

भारतीय संस्कृति में नृत्य का इतिहास बहुत प्राचीन रहा है । यहाँ नृत्य का उद्भव देवी – देवताओं से माना गया है तथा नृत्य की उत्पत्ति को लेकर तो अनेक पौराणिक कथाएँ प्रचलित हैं । प्रोफेसर बैनर्जी ने भगवान शिव तथा पार्वती की पौराणिक कथा से नृत्य की उत्पत्ति को जोड़ा है अपनी पुस्तक “कथक डांस थ्रू एज” (Kathak Dance Through Ages) में वर्णन किया है कि माता पार्वती सोने के आसन पर विराजमान हैं तथा शिव उन्हें देख कर इतने मंत्रमुग्ध हो जाते हैं कि नृत्य करने लगते हैं तथा यह देख स्वर्ग के सभी देवी – देवता उनके चारों ओर संगत के लिए जाते हैं। इसी के साथ नृत्य का प्रारम्भ हुआ तथा बाद में यही नृत्य शिक्षा भरतमुनि द्वारा अपने सौ पुत्रों को दी और उन्होंने इसे पृथ्वी लोक तक पहुँचाया ।



नटराज भारतीय शास्त्रीय नृत्य में लय, गति, भाव और संतुलन के माध्यम से ब्रह्मांडीय चेतना की अभिव्यक्ति का प्रतीक हैं, जो नृत्य को केवल कला नहीं बल्कि साधना बनाते हैं।

Once lord Shiva seated Parvati on a golden throne and began to sip the nectar of her beauty by his incessant gaze. He was so absorbed in the charms of parvati that it found spontaneous expression into dance and this is how dance was born. On seeing lord Shiva himself. Dancing all the gods and goddesses from heaven joined him by forming an orchestra round him”⁶

इसी प्रकार नृत्य से सम्बन्धित अनेक पौराणिक कथाएँ प्रचलित रही हैं। परन्तु इस सभी कथाओं में जो समानता देखने को मिलती है। वह है शिव द्वारा नृत्य की उत्पत्ति। शिव अर्थात् नटराज। शिव को नटराज की संज्ञा इसलिए दी गई क्योंकि वे नृत्य में राजा के समान माने गए हैं और नृत्य में अन्य कोई भी उनके समान नहीं है उनकी त्रिभंग मुद्रा इतनी सुन्दर है कि वही भारतीय शास्त्रीय नृत्यों को आधार बन गई।

कीटशू ने अपनी पुस्तक “डान्सेज ऑफ इंडिया” में लिखा है ‘ Natraj means the king of dancers’⁷ और इसके साथ ही नृत्य की उत्पत्ति शिव से मानी है। एक अन्य मत के अनुसार नृत्य की उत्पत्ति भगवान श्री कृष्ण से बताई गई है। भगवान शिव की भांति ही भगवान श्री कृष्ण को भी नृत्यकला में अति निपुण बताते हुए भगवान शिव को नटराज और भगवान कृष्ण को नट-नागर के नाम से सम्बोधित किया जाता है। भगवान कृष्ण की लीलाओं के वर्णन में महारास का उल्लेख स्वयं ही आ जाता है।⁸

⁶Banerji , projesh , (1982), Kathak dance through ages, first edition p. no. 10

⁷Sakakibara , Kiitsu , (1992) , Dancers of Asia first edition , p. no. 18

⁸ , कथक दर्पण / तीर्थ राम आज़ाद / p. no. 18

‘रास’ को ‘कथक’ का प्राचीन रूप मानने के सन्दर्भ में सबसे महत्वपूर्ण तथ्य यह है कि एक लम्बे समय से कथक-नृत्य के साथ ‘नटवर’ नाम जुड़ा हुआ है। कथकाचार्य स्वयं अपने नृत्य को ‘कथक नटवरी’ नृत्य’ कहते हैं।⁹

ऐसी मान्यता है कि हँडिया जिले के सुप्रसिद्ध नृत्याचार्य स्व. प्रगास जी ने 19वीं शताब्दी में ‘कथक’ को ‘रास-नृत्य’ के आधार पर परिष्कृत करने का प्रयास किया। नटवर श्रीकृष्ण के ‘रास-नृत्य’ से सम्बन्धित होने के कारण उन्होंने इसे ‘नटवरी-नृत्य’ के नाम से प्रचलित किया था। तभी से यह ‘कथक नटवरी नृत्य’ कहा जाने लगा।¹⁰

कथक-नृत्य की प्राचीनता, उद्भव, रास एवं मन्दिरों से इनके सम्बन्ध के विषय में डॉ. कपिला वात्सायन का विचार है कि –कथक-नृत्य में कथा, नृत्य, साहित्य, संगीत, रासलीला आदि का कलात्मक सम्मिश्रण हुआ है। ‘रास’ में कथक का स्वरूप झलकता है।¹¹

सुविख्यात कथक नृत्यकार महाराज कृष्णकुमार की मान्यता है –‘कथक’ एवं ‘रास’ दोनों एक ही पेड़ की शाखाएँ हैं। रास-नृत्य प्राचीन है, शास्त्रीय नृत्यकारों ने उसे मुद्रा, अंग, ताल के ज्ञान से सुसंस्कृत कर लिया है।¹²

प्रसिद्ध कथक नृत्यांगना रोहिणी भाटे की मान्यता है कि ‘कथक’ का प्राचीन रूप ‘रास’ ही है, क्योंकि ‘रास’ में प्रयुक्त टुकड़े, टुमके, पदथाप (**step**) ‘कथक’ के सदृश हैं।¹³ भागवत में भी रास का उल्लेख है, जिसका चरमोत्कर्ष है महारास – जिसमें आठ गोपियां और आठ कृष्ण के सम्मिलित

⁹ ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में कथक नृत्य- डॉ. माया टाक p. no. 150

¹⁰ श्री प्रभुदयाल मीतल –ब्रज की कलाओं का इतिहास (1977), पृष्ठ 583

¹¹ उद्धृत: छाया भटनागर-कथक-नृत्य और मन्दिरों की पृष्ठभूमि, कथक-सेमिनार रिपोर्ट(कथक केन्द्र दिल्ली द्वारा आयोजित, 1979), संगीत पत्रिका, जुलाई 1979, पृष्ठ 52

¹² उद्धृत: छाया भटनागर-कथक-नृत्य और मन्दिरों की पृष्ठभूमि, कथक-सेमिनार रिपोर्ट(कथक केन्द्र दिल्ली द्वारा आयोजित, 1979), संगीत पत्रिका, जुलाई 1979, पृष्ठ 56

¹³ उद्धृत: छाया भटनागर-कथक-नृत्य और मन्दिरों की पृष्ठभूमि, कथक-सेमिनार रिपोर्ट(कथक केन्द्र दिल्ली द्वारा आयोजित, 1979), संगीत पत्रिका, जुलाई 1979, पृष्ठ 57

नृत्य का वर्णन है , इसी से सम्भवतः नटवरी नृत्य अर्थात् नटवर कृष्ण के नृत्य का विकास हुआ जो कालान्तर में कथक का पर्याय बन गया ।¹⁴

भारतीय शास्त्रीय नृत्य शैलियों का आधार मन्दिर ही रहे है और ऐसा कहा जाता है कि मन्दिरों में पौराणिक कथाओं को प्रस्तुत किया जाता था अतः कथक की उत्पत्ति का आधार मन्दिरों में पौराणिक कथा – वाचन से माना गया है । इसी प्रकार धीरे – धीरे यह कथावाचन की परंपरा अनेक कालों से टकराते व प्रभावित होते हुए आज अपने विकसित रूप में पहुँची है परन्तु प्राचीन नृत्य कब कथक नृत्य शैली में परिवर्तित हुआ यह कहा जाना कठिन है । इसके ठोस प्रमाण ना होने के कारण 'कथक' शब्द को कथक नृत्य की व्युत्पत्ति का आधार बनाया गया है क्योंकि कथक नृत्य की उत्पत्ति से सम्बन्धित स्पष्ट वर्णन किसी भी ग्रन्थ में प्राप्त नहीं होता हैं ।

1.2. कथक शब्द का अर्थ

'कथक' शब्द संस्कृत व्याकरण की दशमगण की 'कथ' धातु से निर्मित है , जिसका अर्थ है 'कथा कहने वाला', इसकी व्युत्पत्ति के अनुसार 'कथयति यः सः कथक' अर्थात् जो कथन करता है वह कथक है । पारम्परिक नर्तक भी इसकी यही व्याख्या करते हैं " कथा कहे सो कथक " या 'कथन करे सो कथक कहाये' इत्यादि ।¹⁵

'सिद्धान्त कौमुदी में 'कथिक' शब्द का प्रयोग उस वर्ग के लिए है जो आख्यान तथा प्रवचन कला में निष्णात है । यह वर्ग आख्यानों के द्वारा धर्म

¹⁴कथक वितान कथककी तथा – कथा / रश्मि वाजपेयी p. no. 26

¹⁵डॉ. मधुकर आनन्द – कथकका लखनऊ घराना और पंज बिरजु महाराज पृष्ठ – 3-4

– प्रचार का कार्य करता था।¹⁶ 'मानक हिन्दी कोश' में कथक का अर्थ वह है जो कथा अर्थात् किस्से कहानियाँ सुनाने का काम करता है। प्राचीन रंगमंच में वह नट या पात्र जो आरम्भ में नाटक की पूरी कथा या कहानी सुनाया करता था। 'हिन्दी शब्द सागर (भाग-2) में इस शब्द का अर्थ इस प्रकार दिया गया है' एक जाति जिसका काम गाना, बजाना और नाचना है। इस प्रकार प्राचीन व मध्यकालीन ग्रंथों के आधार पर हम कह सकते हैं कि 'कथक' शब्द का प्रयोग प्राचीनकाल में एक व्यक्ति विशेष के लिए हुआ है जो नृत्य और अभिनय के साथ पौराणिक कथाओं को प्रस्तुत करता था। किन्तु आज 'कथक' शब्द नृत्य के लिए प्रयुक्त होता है।¹⁷

प्राचीन ग्रन्थों में कथक शब्द का उल्लेख अनेक स्थानों पर हुआ है। कथक शब्द संस्कृत, भाषा से लिया गया है। जिसका सरल अर्थ है – 'कहने वाला'। इस शब्द का योगारूढ अर्थ— 'कथा से आजीविका कमाने वाला नाट्याचार्य'।

प्राचीनकाल में कथावाचकों द्वारा मन्दिरों में पौराणिक कथाएँ कही जाती थी। कथा के बाद जब कीर्तन होता था, तो उसमें भरत या नट लोग नृत्य करते थे। "कथाकार महाभारत रामायण, भागवत, पुराण आदि की कथायें, संगीत, हावभाव और नृत्य के साथ करते थे। इसी से श्रोताजनों पर अधिक प्रभाव पड़ता था, कथाकार सारे देश में जगह – जगह घूमते थे और धर्मज्ञान के साथ कला का भी प्रचार करते थे। इनमें से जो कथाकार नृत्यकला पर विशेष ध्यान देने लगे, उन्हीं को कथक नृत्यकार कहा जाने लगा।¹⁸ अर्थात् "सामान्य बोलचाल की भाषा में 'कथक' शब्द का अर्थ है कथा कहने वाला (कथ कथा, कहो)। कथक जगत में यह

¹⁶डॉ माया टाक— ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में कथकनृत्य, पृष्ठ-3

¹⁷भारती गुप्ता – कथकऔर अध्यात्म, पृष्ठ-7

¹⁸कथक नृत्य/लक्ष्मीनारायण गर्ग, प्रकाशक-संगीत कार्यालय, हाथरस- 204101 (उ.प्र.) पृ. -35-36

लोकोक्ति सर्वप्रचलित है कि – कथक करे सो कथक कहावे । यह वर्ग प्राचीन काल में कथावाचन और उसके अभिनय के लिए प्रसिद्ध रहा है। 'कथा' शब्द आज भी आख्यान तथा हरिकीर्तन के अर्थ में प्रचलित है । स्पष्ट है कि कथक के कलाकारों का कार्य कथावाचन रहा , परन्तु उसे और अधिक प्रभावशाली बनाने के लिए आगे चलकर उन्होंने नृत्य और गीत का सहारा लिया ।¹⁹

विभिन्न शब्द कोशों में कथक शब्द का अर्थ कथा गायक के रूप में उल्लेखित है तथा कथक का उल्लेख ऐसे कथा गायक समुदाय के रूप में आता है जो कथाओं को प्रभावोत्पादक तथा मनोरंजक व सहज ग्रहणीय बनाने के लिए गायन के साथ वाद्य व नृत्य का भी समावेश करते थे तथा कथागीत के भावों को अभिनय व नृत्यमुद्राओं के माध्यम से दर्शाते थे ।

भिन्न-भिन्न ग्रन्थों व शब्दकोशों में कथक शब्द की व्याख्या इस प्रकार की गई है। "कथक" का शब्दिक अर्थ है – कथक (वि०) (कथ+व्युल) कहानी कहने वाला , वर्णन करने वाला ।

1. मुख्य अभिनेता 2. कहानी सुनाने वाला ।²⁰

'शांति शतक' में कथक शब्द मिलता है जिसका अर्थ है – गाना लय के साथ बोलना , व्यवसायी कथा कहने वाला, मुख्यतः पुराण कथाओं को कहने वाला ।²¹ "पुराण संदर्भ कोश में कथक का अर्थ अभिनेता तथा कहानी सुनाने वाला कहा गया है"²² "ब्रह्म पुराण में अभिनेता, गायक तथा नर्तकों

¹⁹नृत्य बोध (भाग द्वितीय). डॉ. (श्रीमति) प्हेनी पंडया (दलाल), प्रकाशक – श्रीमती वत्सला कर्दम दलाल, 12 ए, कान्तिलाल हाउस, मामा परमानंद मार्ग, ऑपेरा हाउस, बम्बई –400004ए पृ –3-4

²⁰ वामन आप्टे / संस्कृत हिन्दी कोष / मोतीलाल बनारसीदास प्रकाशन

²¹माया टाक / ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में कथकनृत्य / कनिष्क पब्लिकेशन / पृ. 2

²²तीर्थराम आजाद / कथकदर्पण / संजय प्रकाशन / पृ. 13

के लिए 'कथक' शब्द प्रयुक्त किया गया है।²³ सिद्धान्त कौमुदी में कथिक शब्द का प्रयोग उस वर्ग के लिए है जो आख्यान तथा प्रवचन कला में निष्णात है यह वर्ग आख्यानों के माध्यम से धर्म प्रचार करता था।²⁴

“पाली शब्द कोश में इसे उपदेशक के अर्थ में प्रयोग किया गया है नेपाली शब्द कोश में इसका अर्थ वर्णन करने वाला अथवा व्याख्याता बताया गया है।”²⁵

प्रो. माण्डवी सिंह का कथक के सम्बन्ध में अभिमत है – भारत की अन्य नृत्य शैलियों की अपेक्षा कथक नृत्य का सम्बन्ध साहित्य से अधिक है, क्योंकि कथक शब्द की उत्पत्ति ही कथा वाचन से हुई है और 'कथा' साहित्य होती है।²⁶

1.3. कथक का परिचय

कथक, भारत के आठ प्रमुख शास्त्रीय नृत्य रूपों में से एक है, जो भारतीय संस्कृति की समृद्धि और विविधता का प्रतीक है। इसकी जड़ें उत्तर भारत की प्राचीन कहानी कहने की परंपरा में हैं, जहाँ कथाकार या कहानीकार, रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों की कहानियों को नृत्य, संगीत, और हावभाव के माध्यम से प्रस्तुत करते थे। कथक ने समय के साथ विभिन्न संस्कृतियों का प्रभाव ग्रहण किया, विशेष रूप से मुगल दरबारों का। मुगलों के शासनकाल में इस नृत्य शैली में हिन्दू भक्ति और सूफी प्रभावों का सम्मिलन हुआ, जिससे इसकी सुंदरता और समृद्ध हुई। कथक का सौंदर्य

²³ लक्ष्मीनारायण गर्ग / कथकनृत्य / संगीत कार्यालय, हाथरस उ. प्र. / पृ. 35

²⁴ माया टक / ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में कथक नृत्य / कनिष्क पब्लिकेशन / पृ. 3

²⁵ डॉ. पुरुदाधीच / कथक नृत्य शिक्षा (भाग-2) / बिन्दू प्रकाशन / पृ. 73

²⁶ डॉ. मांडवी सिंह / कथक परम्परा / स्वाति पब्लिकेशन / पृ. 102

इसके जटिल तत्कार (फुटवर्क), तेज चक्कर, और अभिव्यक्तिपूर्ण हावभाव में निहित है। इसमें नृत्य (नृत्य की लयबद्धता) और अभिनय (भाव प्रदर्शन) का अद्वितीय संतुलन देखने को मिलता है। कथक की विशेषता इसकी स्वाभाविकता और अभिव्यक्ति है। इसमें कलाकार संगीत के अनुसार स्वतः स्फूर्त रूप से प्रतिक्रिया करते हैं, जिससे प्रस्तुति एक जीवंत संवाद में परिवर्तित हो जाती है। इसकी लयबद्धता, गहरी भावनाओं को दर्शाने की क्षमता, और कथात्मक शैली इसे अद्वितीय बनाती है।

भारतीय संस्कृति में कथक का महत्वपूर्ण स्थान है। इसके माध्यम से न केवल पौराणिक कथाओं का प्रचार-प्रसार होता है, बल्कि भारतीय दर्शन, भक्ति, और नैतिक मूल्यों की भी अभिव्यक्ति होती है। यह नृत्य शैली भगवान कृष्ण और राधा की कहानियों, महाकाव्यों की घटनाओं, और प्रेम, त्याग, और करुणा जैसे सार्वभौमिक मानवीय भावों को प्रस्तुत करने का सशक्त माध्यम है। आज के समय में, कथक का महत्व केवल शास्त्रीय प्रदर्शन तक सीमित नहीं है बल्कि यह सामाजिक, दार्शनिक और सांस्कृतिक संदेशों को प्रसारित करने का एक माध्यम भी बन गया है। डिजिटल मंचों के माध्यम से इस कला को नए दर्शकों तक पहुँच मिली है, जिससे यह नृत्य रूप वैश्विक स्तर पर प्रशंसित हो रहा है। कथक न केवल भारत की सांस्कृतिक धरोहर का संवाहक है, बल्कि एक ऐसा जीवंत माध्यम है जो भारतीय पहचान को विश्व मंच पर मजबूती से स्थापित करता है।

1.3.1. कथक की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

कथक नृत्य उत्तर भारत का प्रमुख शास्त्रीय नृत्य है। सभी शास्त्रीय नृत्य शैलियों में कथक नृत्य का विशिष्ट स्थान है। नृत्य के ऐतिहासिक तथ्य को देखने से यह ज्ञात हो जाता है कि यह नृत्य मात्र मनोरंजन का साधन नहीं

था बल्कि समाज, जनसाधारण तथा धर्म से पूरी तरह जुड़ा हुआ था, क्योंकि इस नृत्य शैली में ताण्डव की उद्धत चारियों के साथ – साथ लास्य की कोमलता भी है । जो इस नृत्य शैली में नृत्त, नृत्य एवं नाट्य तीनों का सम्मिश्रण है ।²⁷

अभिनय दर्पण के अनुसार :

नृत्तः— “भावाभिनयहीनं तु नृत्तमित्यभिधीयते” ।²⁸

अर्थात् नृत्त सदैव भाव और अभिनयविहीन होता है ।

नृत्यः— रसभावव्यंजनादियुक्तं नृत्यमितीर्यते ।।²⁹

अर्थात् रस और भाव की अभिव्यक्ति से युक्त नर्तन की क्रिया नृत्य कही जाती है ।

नाट्यः—“नाट्यं तन्नाटकं चैव पूज्यं पूर्वकथायुतम् ।।³⁰

अर्थात् नाटक वो नाट्य है जो किसी पूर्व प्रचलित कथा पर आधारित हो ।

डॉ पुरु दाधीच के अनुसार :— ग्रंथिक ,कुशीलव, चारण , नट – नटी, बाण, कथक, आदि इन सब जातियों को आज कथक के अंतर्गत ही माना जाता है ।³¹

²⁷डॉ. मधुकर आनन्द – कथकका लखनऊ घराना और पंत्र बिरजू महाराज पृष्ठ – 3

²⁸ कथक ज्ञानेश्वरी, पं. तीरथराम 'आज़ाद' पृष्ठ – 89 ।

²⁹ कथक ज्ञानेश्वरी, पं. तीरथराम 'आज़ाद' पृष्ठ – 90 ।

³⁰ कथक ज्ञानेश्वरी, पं. तीरथराम 'आज़ाद' पृष्ठ – 91 ।

³¹डॉ पुरु दाधीच/ कथकनृत्य शिक्षा (भाग-2) / बिन्दू प्रकाशन / पृ. 82

1.4. कथक प्रयोग परम्परा

‘रामायण में वाल्मिकी ऋषि को ‘कुशीलव’ समुदाय में संबंधित बताया गया है । नाट्यशास्त्र में ‘कुशीलव’ का अर्थ सांगीतिक कौशल से परिपूर्ण कशल वादक के रूप को कहा गया है । श्रीराम के पुत्रों ‘लव-कुश’ को भी ऋषि ने पूरी रामायण गायन शैली में सिखाई थी । अतः स्पष्ट होता है की उस काल में कुशीलव को कुशल वादक के रूप में जाना जाता था । सर्वप्रथम कथक शब्द का प्रयोग महाभारत जैसे महान ग्रंथ से प्राप्त होता है ।

‘कथकाश्चपरे राजन श्रमणश्च वनौकस’ (महाभारत 1/2/3/4)

अर्थात् – वनों में रहने वाले बाह्मण और कथक लोक मधुर स्वरों में दिव्य आख्यान करते हैं । महाभारत काल में ही कथक, कुशीलव, नट, शैलूष, भाट, चारण , सूत , आदि का उल्लेख तत्कालीन साहित्य में प्राप्त होता है जिनका संबंध गायन⁸ एवं विद्याओं में प्राप्त होता है ।

पांचवी शताब्दी से पूर्व पाणिनी के अष्टाध्यायी ग्रंथ में दो नट समुदायों का उल्लेख मिलता है – शिलाली और कृशाश्व , इनके संबंध में यह प्रचलित है कि नट जाति की भांति ये गायन कार्य करके पेट का पालन किया करते थे ।

छठीं से आठवीं शताब्दी के मध्य वैष्णव काल माना जाता है । इस काल में गायन, वादन, नृत्य सहित सभी कलाओं को संरक्षण मिला जिसके फलस्वरूप राधा कृष्ण की लीलाओं से प्रेरित होकर आचार्य बल्लभाचार्य जी ने ‘रास

परम्परा' का प्रारम्भ किया ।

“सातवीं शताब्दी में बाणभट्ट द्वारा रचित दो महाकाव्यों की रचना हुई कादम्बरी एवं हर्षचरित । हर्षचरित में संगीतोपयोगी अनेक जातियों के साथ कथक शब्द का उल्लेख भी प्राप्त होता है ।

*“कृतोपनायनादिक्रियाकलापस्य..... लासक युवा शैललियुवा
शिखण्डक;*

नर्तकी हरिषिका , क्षपठाको वीरदेव; कथको त्रायसेन;..... मनसा

महतामुपहास्यताम् ॥ (हर्षचरित / प्रथम उच्छ्वासः पृ 073-7)³²

हर्षचरित के टीकाकार ने ग्रंथ में प्राप्त सभी शब्दों की व्याख्या की है ।

11 वीं शताब्दी में मानसोल्लास नामक ग्रन्थ जो सोमेश्वर द्वारा रचित है प्राप्त होता है जिसमें कथक शब्द प्राप्त होता है । इस ग्रंथ में कथक नामक व्यक्ति द्वारा किये जाने वाले कार्यों पर भी प्रकाश डाला गया है ।

“कर्णाटभाषया यस्तु शट्पदीपठनोदितः

किन्नरीस्वरसंवादी ध्वनिर्यस्त विराजते

उदाहरण निसंयुक्ताः ॥ स्ता ॥ सौष्ठवेन समन्विताः ॥ तः ॥

³²ज्योतिषी डॉ० चेतना , कथककी ऐतिहासिक अवधारण, पुनर्विचार

वर्णकैः सह तो वक्ति स चित्रकथको वरः ।

गायक्यो ॥ क ॥ यत्र गायन्ति बिना तालैर्मनोहराम्

मार्दङ्गिकद्वयोपेवं सा कथा बहुपुष्पा ॥

कथक शब्द पर प्रकाश डालने वाला उक्त पंक्ति में बहुपुरुषा कथा के प्रसंग प्रमुख वक्ता के रूप में उत्तम 'कथक' की बात है ।

कर्णाट भाषा में छः पदों से युक्त, उदार ध्वनि से पूर्ण गायिका के द्वारा मधुरता से गाई जाने वाली तथा अनेक कवियों द्वारा गाई जाने वाली कथा बहुपुरुषा होती है।³³

भरत मुनि के नाट्यशास्त्र में जिन नृत्यों की मुद्राओं का वर्णन है, उनमें स्वर्गीय नृत्यकारों की देवी क्रियाओं का और उन्हीं क्रियाओं का मानवीय विचारों और ध्येयों के साथ उपयोग का सम्बन्ध दृष्टिगोचर होता है । पुराणों में भगवान शिव की पूजा वीणा, भेरी, मृदंग, गीत दत्तिल, तुम्बरू, कोहल, विशाखि, लोल्लट, उड़भट, शंकुक, कीर्तिथर तथा श्रीहर्ष जैसे नाट्याचार्यों की कृतियाँ प्रमुख आधार रही है । ये कृतियाँ वर्तमान समय में उपलब्ध नहीं हैं , परन्तु इनके मतों का संग्रह 12वीं ई. के अभिनव भारती में अवश्य पाया जाता है ।³⁴

13वीं से 17वीं ई. तक जिन ग्रन्थों में नृत्य की परम्परा सुरक्षित पाई जाती है, उनमें महाराणा कुम्बा का संगीत राज, पार्श्वदेव का संगीत समयसार, पं. दामोदर का संगीत दर्पण, महाराज तुलाजी का संगीतसारामृत तथा नारद

³³सेमेश्वर रचित, डॉ. शिवशेखर मिश्र / मानसोल्लास एवं सांस्कृतिक अध्ययन (कथा विनोद) / चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी / पृ. 440

³⁴डॉ. शरत्चन्द्र श्रीधर परांजये, संगीत बोध, पृ. 169 ।

का संगीत मकरंद आदि प्रमुख हैं।³⁵

13वीं शताब्दी के संगीतरत्नाकर में नृत्य के ऊपर एक स्वतन्त्र अध्याय है। प्रसिद्ध ग्रंथ संगीत रत्नाकर के नर्तनाध्याय में एक स्थान पर सभा सन्निवश में कथक शब्द प्राप्त होता है। यहाँ विभिन्न विद्याओं के प्रतिष्ठित विद्वानों के साथ सभा में 'कथक' व्यक्ति विशेष के होने का उल्लेख है।

कथका बन्दिनश्चात्र विद्यावन्तः प्रियंवदा ।

प्रशंसा कुशलाश्चान्ये सतुराः सर्वमातुषु ।³⁶

17वीं शताब्दी से कथक शब्द का नृत्य से पूर्णतः संबंध होना पाया जाता है। अतः कथा सुनने तथा गाते हुए उसमें रोचकता उत्पन्न करने के लिये उसमें आवश्यकतानुसार नृत्य और अभिनय भी करने लगे और इस तरह गायन, कथा और अभिनय एक मिश्रित नृत्य शैली के रूप में 'कथक नृत्य' हमारे समक्ष आया।³⁷

कथक शब्दरूप में तो प्राचीन काल से प्रयोग में आ रहा है, किन्तु कथक का नृत्य के साथ संबंध होना और उसका कथक नृत्य कहलाना विद्वानों के अनुसार 200–250 वर्ष पहले ही प्रचलन में आया।³⁸

स्वामी सूरदास, कृष्णदास, गोविन्द दास आदि कवि इन्हीं में से थे। राधा कृष्ण के पद और भजन में 'रास', कथक नृत्य के तकनीकी शब्दों नृत्य के

³⁵डॉ शरतचन्द्र श्रीधर परांजये, संगीत बोध, पृ. 169 ।

³⁶शारंगदेव, आचार्य, संगीत रत्नाकर, अ.7

³⁷नागर विधि, कथकनृत्य में सामयिक परिवर्तन एवं अभिनय प्रयोग (शोधग्रन्थ), I.K.S.V.V. KHAIRAGARH, 2002

³⁸गत पचास वर्षों में कथकयात्रा का विश्लेषणात्मक अनुशीलन / श्रीमती शुभला गुप्ता / 2020 पृ. 9

क्रियात्मक बोलों का बहुतायत प्रयोग भारतीय नृत्य की मूल संस्कृति के अवशिष्टों की पृष्टि करता है । इस प्रकार धार्मिक और दरबारी शैलियों के स्वस्थ मिश्रण व समन्वय में 'कथक' नृत्य शैली का जन्म हुआ। इसी के साथ कृष्ण—राधा की परम्परागत नृत्य शैली रास—लीला लोक नृत्य के रूप में स्थापित हुई ।

इसके बाद का काल 'रीति काल' कहलाया जो 1700 से 1900 ई० तक का काल माना जा सकता है। कथक नृत्य शैली श्रृंगारिकता प्रधान हो चुकी थी । चूँकि शासन इस्लामों का था जो कि आश्रयदाता थे, तो कवियों और गायकों को भी अपनी गुजर बसर करने के लिये उनके रुचि अनुसार कार्य करना पड़ा । चमत्कारिक अंग प्रदर्शन, रसों से युक्त आकर्षक हाव—भाव वाली नृत्य शैली स्थापित हुई । श्रृंगार रस के अंतर्गत बहुत ही सुन्दर मुक्त रचनाएँ हिन्दी में हुईं। नायिका भेद का विस्तृत वर्णन इस रसों की ही देन है ।

नवाब आसुफद्दौला और नवाब वाजिद अली के शासन काल में लखनऊ घराना पैर जमाने लगा । नवाब साहब संगीत व नृत्य के उत्तम कोटि के रसिक थे। नृत्य को नाट्यत्मक रूप देने का श्रेय नवाब साहब को जाता है। इन्होंने पटित होते हुये नृत्य व संगीत परम्परा को सभाला। नर्तन पक्ष के तीनों रूप नाट्य, नृत्त व नृत्य को पुनः समृद्ध करके वैभवता प्रदान की। इस प्रकार कई उतार—चढ़ाव के बाद भारतीय नृत्य इतिहास का स्वरूप अति वैविध्य, उन्मुक्त व जीवन्त दृष्टिगोचर होता है ।³⁹

इस प्रकार अध्ययन करने से यह निष्कर्ष निकलता है कि महाभारत से लेकर 17वीं शताब्दी तक कथक एक ऐसी जाति के रूप में उल्लेखित है जो

³⁹गत पचास वर्षों में कथकयात्रा का विश्लेषणात्मक अनुशीलन / श्रीमती शुभला गुप्ता / 2020 पृ. 3

पुराणों, ग्रन्थों के आख्यानो को गायन व नृत्य के माध्यम से लोगो को ईश्वर के गुण, लीलाओ आदर्शो का प्रचार कर ईश्वरोपसना व भक्ति मार्ग को अपनाने के लिए उपदेश करते थे । यह ईश्वर की आराधना का सरल व सहज ग्रहणीय मार्ग था । जहाँ इन ग्रन्थों में कथक की परम्परा का उल्लेख मिलता है वही अनेक विद्वानों ने कथक परम्परा को कुशीलव व अनुगामी माना है । संगीत रत्नाकर में आया प्रसंग्र जहाँ कथको को राजा के बाई और बैठने का संकेत मिलता है उससे यह अनुमान लगाया जा सकता है कि समाज में इनको सम्मानीय स्थान प्राप्त था ।

कथक नृत्य की विभिन्न युगों में जो स्थिति रही है, उसे प्रस्तुत करने के लिए सुविधा की दृष्टि से इसे तीन भागों में बाटो जा सकता है ।

1) प्राचीनकाल

2) मध्यकाल

3) आधुनिक काल

1.4.1. प्राचीनकाल

प्राचीनकाल में महाकाव्यों आदि की कथाओं के प्रचार व शिक्षा का माध्यम मौखिक ही था । कालांतर में इस कार्य के लिये विशिष्ट वर्ग व जातियो अस्तित्व में आई, जिनका कार्य इन कथाओं को गाकर लोगों तक पहुँचाना था, जैसा की प्राचीन ग्रन्थों में वर्णित भी है कि— “यहाँ हम संस्कृत नाट्य साहित्य के उद्धट विद्वान प्रो. आघ रंगाचार्य का स्मरण कर सकते हैं जिन्होंने पुराणों के वक्त (कथाकार) सूत को ही सुत्रधार तथा संस्कृत नाटकों का जन्मदाता माना है एवं कुशीलव को उसका प्रतिप्राण । वे लिखते हैं कि सूत्र (कथाकार) का कार्य इधर—उधर घूमकर वीर गाथाओं एवं लोक कथाओं

का गान करना तथा इसके द्वारा जनरंजन करना था।⁴⁰ कथक नृत्य के इतिहास को लेकर यह भी कहा जाता है, कि मोहनजोदाड़ों एवं हडप्पा की खुदाई से प्राप्त एक कांस्य की मूर्ति भी कथक नृत्य की मुद्रा में है, ऐसा माना जाता है।⁴¹

प्राचीनकाल में कथक नृत्य का धर्म व अध्यात्म से गहरा सम्बन्ध था। इस कारण यह मंदिरों की छत्रछाया में पला व बढ़ा। प्राचीन मंदिरों में नट मण्डप व मंदिरों में उकेरी नृत्य प्रतिमायें इन्हीं धारणाओं की पुष्टि भी करती हैं। मंदिरों के संरक्षण में नृत्य संगीत आदि कलाओं को बहुत ही प्रोत्साहन मिला है, जिनमें से एक कथक भी है।⁴² पं० बिरजू महाराज जी के अनुसार –“ भारतीय नृत्य केवल एक कला प्रदर्शन ही नहीं स्वयं को ईश्वर से जोड़ने का साधन है। अध्यत्मिकता के बिना कोई व्यक्ति अच्छा नर्तक बन ही नहीं सकता।⁴³

1.4.2. मध्यकाल (मुगलकाल) का कथक पर प्रभाव :-

भारत में मध्यकाल का आरंभ 10 वीं शताब्दी के बाद का माना जाता है जो कि मोहम्मद गौरी व गजनी के बाद प्रारंभ हुआ।

“पंडित भातखण्डे व संस्कृत के अन्य विद्वानों ने 12 वीं शताब्दी से 18 वीं शताब्दी तक के काल को मध्यकाल माना है।⁴⁴

इस संदर्भ में एन. ऑगस्टम विलार्ड की मान्यता है— “हिन्दुस्तान पर मुसलमान राजाओं की विजय से यहाँ के संगीत तथा नृत्य के इतिहास का एक

⁴⁰ दाधीच, डॉ पुरु, 'कथक नृत्य शिक्षा', बिन्दु प्रकाशन, इन्दौर, भाग 2, तृ. सं. 2004 पृ. 80

⁴¹ अग्रवाल, डॉ गिरिजा किशोर, 'भारतीय मूर्तिकला परिचय', ललित प्रकाशन, अलीगढ़, प्रथमावृत्ति, सम्वत् 2045 वि. पृ. 6

⁴² बाजपेयी, रश्मि, 'कथक प्रसंग', वाणी प्रकाशन, दिल्ली, प्र. सं. 1992, पृ. 25

⁴³ Banerji, Projesh, (1982), Kathak dance through ages, first edition p. no. 8

⁴⁴ मांडवी सिंह/ कथक परम्परा/ स्वाति पब्लिकेशन / पृ. 4

महत्वपूर्ण युग प्रारंभ होता है। इसी समय से विशुद्ध हिन्दू कलाओं और विज्ञानों के पतन का युग प्रारंभ हुआ। मुसलमानों ने यहाँ के ज्ञान को किंचित् भी संरक्षण प्रदान नहीं किया। उनमें जो अधिक कट्टर थे, वे केवल मूर्तिभंजक ही नहीं, बल्कि देश की प्राचीन परम्पराओं के मार्गों को अवरुद्ध करने के लिए भी सदैव प्रयत्नशील रहा करते थे। संगीतशास्त्र की प्रगति इनके कारण रूक गई और उसका शीघ्रता से पतन होने लगा।⁴⁵



प्रो. डॉ. मांडवी सिंह के अनुसार—

“इस युग से संबंधित बहुत कम ग्रंथ उपलब्ध है जो भी ग्रन्थ थे उन्हें विदेशियों ने नष्ट कर डाला।”⁴⁶

“मध्य युग का कथक, श्रृंगार प्रधान, अलंकार प्रधान और आश्रयदाता की रुचि का प्रसाधन मात्र रह गया। इस काल की कला जनपथ की न होकर

⁴⁵माया टाक / ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में कथक नृत्य / कनिष्क पब्लिकेशन / पृ. 12

⁴⁶मांडवी सिंह / कथक परम्परा / स्वाति पब्लिकेशन / पृ. 4

राजपथ की जो गई।⁴⁷

इसी काल में लिखे गये ग्रन्थ संगीत रत्नाकर जो कि 13 वीं शताब्दी का माना जाता है में कथकों को राजा के बायीं ओर बैठने का संकेत मिलता है, इसके अलावा भी जितने ग्रन्थ नृत्य संबंधित इस युग में लिखे गये सभी में ये प्रमाण मिलता है कि उस समय तक कथक 'नृत्य' अथवा कथा गायन के रूप में दरबारों में पहुँच गया था तथा राजाश्रयों में ही पनपने लगा था। पंडित तीरथराम आजाद के अनुसार—

“दरबारों में रहने के कारण कलाविदों की प्रवृत्ति भी धीरे-धीरे बदलने लगी। वे लोग अपनी कला के दर्शन का लक्ष्य देवता की उपासना के स्थान पर बादशाहों को रिझाना मानने लगे।⁴⁸”

इस प्रकार राजाश्रयों में ये कथक लोग अपने राजा को रिझाने के लिए चमत्कार प्रधान नृत्यों की सर्जना करने लगे

सुभाषिनी कपूर के अनुसार—

“जो देवदासियाँ थीं उसे इस काल में शराब का प्याला देकर नृत्य की आज्ञा दी जाती थी और साथ में उनको यह आदेश भी होता था कि एक बूँद भी जमीन पर न गिरे जो पूरा नृत्य कर लेती थी उसे बादशाह की ओर से ईनाम मिलता था।⁴⁹”

इस प्रकार शराब का संतुलन बनाए रखने के लिए नर्तक का संपूर्ण चित्त पैरों पर ही होता था और देखते-देखते यह नृत्य पैरों का चमत्कार दिखाने वाला नृत्य बन गया।

⁴⁷तृप्त कपूर / उत्तरी भारत में संगीत शिक्षा / हरमन पब्लिकेशन / पृ. 106

⁴⁸तीरथराम आजाद / कथक दर्पण / संजय प्रकाशन / पृ. 147

⁴⁹सुभाषिनी कपूर / कथक नृत्य परिचय / राधा पब्लिकेशन / पृ. 2

एक अन्य मत के अनुसार कथक के तात्कालिक स्वरूप में लयकारी इत्यादि का समावेश 'इन्डो पर्शियन' देन है— "मुस्लिम लोग जब भारत में आए थे, अपने साथ पर्शियन नर्तक भी लाए थे जिनकी विशेषता थी खास तकनीक के साथ पद संचालन। धीरे-धीरे आगे चलकर हिन्दू नृत्यकारों के पद-संचालन का काम और पर्शियन कलाकारों के पद संचालन का काम मिश्रित हो गया जिससे एक नवीन शैली का विकास हुआ।"⁵⁰

प्रो. मांडवी सिंह के अनुसार—

"मुसलमान ईरान से अपने साथ कुछ नाचने वाली लड़कियों को लाये थे जिनका प्रभाव उत्तर भारत के कथक नृत्य में देखने को मिलता है।"⁵¹

इस प्रकार ये मुस्लिम शासक अपने मनोरंजन के लिए देवदासियों के अलावा वेश्याओं या तवायफों को भी इन नृत्य गुरुओं से नृत्य की शिक्षा दिलाने लगे। जिसके लिए इन्हें कोठों पर नियुक्त किया जाता था।

"ब्याह, शादी के मौकों पर वेश्याओं का कहरवा नृत्य या भाड़ो या जनखों के अश्लील नाच से लोग परिचित थे। अब, जब असली नृत्य की तलाश हुई तो सबसे पहले इन वेश्याओं के उस्ताद कथक लोगों का पता चला। इन लोगों के पास काफी इल्म था।"⁵²

इस प्रकार कथक जो प्रभु कथा का प्रचार करने वाले थे पहले मंदिर से निकलकर राजाश्रयों में पहुँचे फिर वहाँ से कोठों पर। इन कोठों पर पहुँचकर इनमें चारित्रिक दोष भी उत्पन्न हो गया। और आराधना का माध्यम नृत्य अपने निम्न स्तर पर पहुँच गया।

⁵⁰माया टाक / ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में कथक नृत्य / कनिष्क पब्लिकेशन / पृ. 16

⁵¹मांडवी सिंह / कथक परम्परा / स्वाति पब्लिकेशन / पृ. 5

⁵²संगीत पत्रिका (1981-82) / गनेश प्रसाद द्विवेदी / संगीत कार्यालय, हाथरस उ.प्र. / पृ. 6

डॉ. गर्ग के अनुसार—

“ईश्वरोपासना की भारतीय कला मनोरंजन के लिए प्रयोग की जाने लगी।”⁵³

अतः कथक नृत्य अपने विकास समय में आध्यात्मिक धारा से हटाकर श्रृंगार व भोग विलासिता से लिप्त कर दिया गया था। जिन गुरुओं ने मुगलों के इन विलासित जीवन को अपना लिया वे कोठों पर वेश्याओं को शिक्षा देने का काम करने लगे और जिसने इन्हें नकार दिया वे अपने जीवन संघर्ष में दर-दर भटकने लगे। इस प्रकार एक आध्यात्मिक आत्मा का नृत्य इस युग में अपनी प्राचीनता खोता जा रहा था और अपनी विकासशील अवस्था में तीन अलग-अलग रूपों में पनप रहा था एक तो मंदिरों में देवदासियों के सानिध्य में अपनी आध्यात्मिक आत्मा के साथ, हिन्दू राजाश्रयों में भी यह ईश्वर के निकट ही थी तथा दूसरी ओर मुसलमानों के विलासिता व भोगों के मध्य ये अपना अलग स्वरूप बना रहा था।

प्रो. मांडवी सिंह के अनुसार—

“नृत्यकला में 3 प्रकार की परम्परायें चलने लगी। मंदिरों में प्राचीन एवं भक्तिपूर्ण कला का विकास होता रहा, दरबारों में चमत्कारपूर्ण और विलासपूर्ण कला का तथा कोठों पर भावपूर्ण अभिनय कला का विकास होता रहा, जिसमें मुजरा आदि अवसरों पर टुमरी या गजल गाकर भाव बताने की अलग परम्परा विकसित होती रही जो कि दरबारी नृत्य का ही एक रूप था जो आगे चलकर कथक नृत्य में समा गया।”⁵⁴

इस प्रकार मुगलशासकों के शासन में कथक नृत्य अपनी यात्रा कर रहा था। मुसलमान शासकों में भी कुछ शासक ऐसे भी थे जिन्होंने भारतीय

⁵³लक्ष्मीनारायण गर्ग / कथक नृत्य / संगीत कार्यालय, हाथरस उ. प्र. / पृ. 36

⁵⁴मांडवी सिंह / कथक परम्परा / स्वाति पब्लिकेशन / पृ. 6

कलाओं को उनकी धार्मिक पृष्ठभूमि के साथ स्वीकार करके उन्हें बढ़ावा दिया । बाबर, हुमायूँ के बाद सन् 1550 से 1605 तक हुमायूँ के पुत्र अकबर का शासन काल रहा। अकबर की शासन की शासन पद्धति अलग थी वह सभी धर्मों का सम्मान करता था तथा जबरदस्ती इस्लाम थोपने के खिलाफ था । इसी धार्मिक सहिष्णुता की प्रवृत्ति के कारण उसने “दीन ए इलाही” धर्म की रचना की जो चल न सका। धर्मों के समान ही अकबर ने भारतीय कलाओं को भी उनकी भारतीयता के साथ प्रोत्साहन देने का प्रयास किया अकबर के दरबार में भारतीय संगीत को काफी सम्मान मिला। कथक नृत्य भी अकबर के काल में सम्मानित हुआ तथा विकास की एक सीढ़ी और चढ़ा।

8 वीं – 9 वीं शताब्दी के समय पूरे देश में जब आक्रमणों का दौर चल रहा था ललित कलायें अपनी स्थापित मान्यताओं और मंदिरों को त्यागने का विवश की जा रही थी। उसी समय दक्षिण में भक्ति आंदोलन की थी चारों ओर विष्णु के विभिन्न अवतारों का प्रचार हो रहा था मुख्य रूप से भगवान विष्णु के गुण चरित्रों का प्रचार चारों ओर छा गया। रश्मि वाजपेयी के अनुसार “इस चेतना का साहित्य, संगीत, चित्रकला क्षेत्र नृत्य पर बहुत व्यापक और गहरा प्रभाव पड़ा।”⁵⁵

सन् 1500 ई. में मुगल शासक बाबर ने हिन्दुस्तान आकर धीरे –धीरे जड़ें जमा ली थीं । सन् 1550 से 1605 तक अकबर सम्राट गद्दी पर रहे। इनके दरबार में संगीतज्ञों तथा नर्तकों का समुचित सम्मान तथा उनकी कला की उन्नति हुई। नृत्य की अपेक्षा संगीत का प्रचलन अधिक उन्नत हुआ। अबुल फजल द्वारा लिखी गई ‘आईने अकबरी’ में अकबर के दरबार में गायकों एवं

⁵⁵रश्मि वाजपेयी/ कथक प्रसंग / वाणी प्रकाशन/पृ. 26

नर्तकों का उल्लेख मिलता है। ठाठा ठाठी नर्तकों का उल्लेख इस समय से प्राप्त होता है। नर्तक युद्ध में योद्धाओं के उत्साहवर्धन के लिये नृत्य करते थे। अकबर के दरबार में प्रसिद्ध नृत्याचार्य श्री बल्लभ जी का विशेष उल्लेख मिलता है।⁵⁶



प्रख्यात नृत्यकार बिरजू महाराज की मान्यता है—“कत्थक को जितना मुस्लिम दरबारों में प्रभावित किया, उससे कहीं अधिक कत्थक ने हिन्दू धर्म व संस्कृति की छाप मुस्लिम शासकों व सामन्तों की कलाभिरुचि पर डाली। यही कारण है कि वाजिद अली शाह जैसे रमिक शासक स्वयं कृष्ण का रूप धारण कर उनकी रासलीलाएँ नृत्याभिनय में उतारते थे।⁵⁷ इस प्रकार समय के साथ-साथ ‘कत्थक नृत्य’ में परिवर्तन होते रहे। प्राचीनकाल में कत्थक नर्तक मन्दिरों अथवा धार्मिक-स्थानों से नृत्य, अभिनय के माध्यम से पौराणिक-कथाओं को प्रस्तुत करता था। आगे चलकर धार्मिक नृत्य मुगल दरबारों में पहुँचा जहाँ इसके स्वरूप में बहुत परिवर्तन हुआ। धार्मिक भावना-प्रधान

⁵⁶नागर, डॉ0 विधि, कत्थक नृत्य में सामयिक परिवर्तन एवं अभिनय प्रयोग (शोध ग्रंथ), पृ0-41, I.K.S.V.V . KHAIRAGARH,2002

⁵⁷ छाया भटनागर-‘भारतीय नृत्यकला का स्रोत भक्तिभाव और कत्थक में उसका स्वरूप’, संगीत: संगीत अंक, 1970, पृष्ठ 59-60।

यह नृत्य, श्रृंगारिक व विलासितापूर्ण हो गया।⁵⁸

1.4.3. आधुनिक काल

कथक, भारत की आठ शास्त्रीय नृत्य शैलियों में से एक, समय के साथ अनेक परिवर्तनों और चुनौतियों का सामना करते हुए आधुनिक स्वरूप में विकसित हुआ है। इसकी उत्पत्ति उत्तर भारत में हुई, जहां 'कथा कहे सो कथक कहाए' के अनुसार, यह नृत्य कथा कहने का माध्यम था। प्रारंभ में, यह मंदिरों में धार्मिक कथाओं के प्रस्तुतीकरण के रूप में प्रचलित था। मध्यकाल में, विशेषकर मुगल शासन के दौरान, कथक दरबारों में स्थानांतरित हुआ। यहां, नृत्य में सौंदर्य और मनोरंजन के तत्वों का समावेश हुआ, जिससे इसकी शैली में परिवर्तन आया। मुगल दरबारों में, कथक ने तत्कालिकता, भावप्रवणता और तकनीकी कौशल को अपनाया, जिससे यह एक परिष्कृत कला रूप बना।

आधुनिक काल में, कथक ने वैश्विक मंच पर अपनी पहचान बनाई है। दूरसंचार और इंटरनेट के माध्यम से, यह नृत्य रूप अंतरराष्ट्रीय दर्शकों तक पहुंचा है। कई कलाकार पारंपरिक कथक में समकालीन संगीत और नृत्य शैलियों का समावेश कर रहे हैं, जिससे यह युवा पीढ़ी के बीच लोकप्रिय हो रहा है। उदाहरण के लिए, कथक नृत्यांगना पंखुड़ी श्रीवास्तव ने दुबई और गयाना में कथक का प्रचार-प्रसार किया, जहां उन्होंने स्थानीय सांस्कृतिक तत्वों के साथ कथक का समन्वय किया। दुबई में, उन्होंने समकालीन विषयों और तकनीकी पक्षों पर जोर दिया, जबकि गयाना में, बहु सांस्कृतिक समाज को ध्यान में रखते हुए, चटनी और सोका संगीत के साथ कथक प्रस्तुत किया। तकनीकी प्रगति के साथ, कथक प्रस्तुतियों में डिजिटल पृष्ठभूमि

⁵⁸ ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में कथक नृत्य- डॉ. माया टाक p. no. 16

और मल्टीमीडिया का उपयोग बढ़ा है, जिससे दर्शकों के लिए अनुभव और भी रोचक हो गया है। हालांकि, इस आधुनिकता के साथ पारंपरिक तत्वों को संरक्षित रखना एक चुनौती है। कई पारंपरिक कलाकार और संस्थान इस संतुलन को बनाए रखने के लिए प्रयासरत हैं, ताकि कथक की मूल आत्मा बनी रहे।

कथक की शिक्षा में भी परिवर्तन आया है। पारंपरिक गुरु-शिष्य परंपरा के साथ-साथ संस्थागत शिक्षा का प्रचलन बढ़ा है। पंखुड़ी श्रीवास्तव के अनुसार, गुरु-शिष्य परंपरा में मौखिक शिक्षण पर जोर दिया जाता है, जहां गुरु अपने शिष्य को न केवल नृत्य की तकनीक, बल्कि जीवन के व्यावहारिक ज्ञान भी प्रदान करते हैं। वहीं, संस्थागत शिक्षा में संरचित पाठ्यक्रम के माध्यम से नृत्य की शिक्षा दी जाती है, जो आज की तेज गति वाली जीवनशैली के अनुरूप है। आर्थिक दृष्टिकोण से, कथक कलाकारों के लिए रोजगार की संभावनाएं सीमित हैं। हालांकि, सांस्कृतिक संस्थानों, शैक्षणिक संस्थानों और सरकारी संगठनों के माध्यम से अवसर उपलब्ध हैं। इसके अलावा, कलाकार स्वयं के संस्थान स्थापित कर स्वरोजगार के माध्यम से भी अपनी कला का प्रसार कर रहे हैं। पंखुड़ी श्रीवास्तव का मानना है कि नृत्य और संगीत के क्षेत्र में करियर बनाने के इच्छुक युवाओं को उचित मार्गदर्शन और प्रशिक्षण प्रदान करना आवश्यक है, ताकि वे इस क्षेत्र में सफल हो सकें। कुल मिलाकर, कथक ने समय के साथ अपने आप को परिवर्तित और अनुकूलित किया है, जिससे यह नृत्य रूप आज भी प्रासंगिक और जीवंत है। पारंपरिक तत्वों और आधुनिक प्रवृत्तियों के समन्वय से, कथक ने अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है और यह प्रक्रिया निरंतर जारी है।

1.5. कथक नृत्य के घराने

कथक में घराना परंपरा का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है, क्योंकि इसी परंपरा के माध्यम से इस शास्त्रीय नृत्य शैली की तकनीक, सौंदर्य, भाव-अभिव्यक्ति और प्रशिक्षण प्रणाली पीढ़ी दर पीढ़ी सुरक्षित और विकसित होती रही है। घराना केवल किसी स्थान या वंश से जुड़ी पहचान नहीं है, बल्कि यह कथक की एक विशिष्ट कलात्मक सोच और दृष्टि को दर्शाता है। प्रत्येक घराने ने अपने सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक परिवेश के अनुसार कथक को आकार दिया है, जिससे इसकी प्रस्तुति शैली, गति, लय और भाव में विविधता उत्पन्न हुई। किसी घराने में पाद-प्रहार, तत्कार और जटिल लयकारी को अधिक महत्व दिया गया, जबकि किसी अन्य घराने में भाव, नजाकत और अभिनय की प्रधानता रही। इस प्रकार घराना परंपरा ने कथक को एकरस होने से बचाया और उसमें बहुआयामी सौंदर्य तथा गहराई बनाए रखी।

घराना परंपरा का एक महत्वपूर्ण पक्ष गुरु-शिष्य परंपरा से भी जुड़ा हुआ है। कथक का ज्ञान केवल पुस्तकों या लिखित स्रोतों तक सीमित नहीं रहा, बल्कि मौखिक परंपरा, नियमित रियाज और गुरु के प्रत्यक्ष मार्गदर्शन के माध्यम से आगे बढ़ता रहा। गुरु अपने शिष्यों को केवल नृत्य की शारीरिक तकनीक ही नहीं सिखाते, बल्कि अनुशासन, मंचीय मर्यादा, सौंदर्यबोध और कला के प्रति समर्पण की भावना भी विकसित करते हैं। इसी कारण कथक केवल एक प्रदर्शन कला न होकर एक साधना का रूप ग्रहण करता है।

समकालीन समय में, जब कथक राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर प्रस्तुत किया जा रहा है और उसमें नवीन प्रयोग भी किए जा रहे हैं, तब घराना परंपरा इसकी शास्त्रीय जड़ों से जुड़े रहने का आधार प्रदान करती है। यह

परंपरा कलाकार को यह समझने में सहायता करती है कि नवाचार तभी सार्थक हो सकता है जब वह परंपरा की सुदृढ़ नींव पर आधारित हो। इस प्रकार, घराना परंपरा कथक की ऐतिहासिक निरंतरता, कलात्मक विविधता और शास्त्रीय गरिमा को बनाए रखने में केंद्रीय भूमिका निभाती है।

1.5.1. घराने शब्द की परिभाषा

भारतीय शास्त्रीय संगीत में घराने शब्द का बहुत अधिक महत्व है। घराना शब्द से अभिप्रायः है— परम्परा, आचार, शिस्त, मांगल्य, अभिजातता, पंथ, स्कूल, बाज, सम्प्रदाय, ढंग, शैली, आनुवांशिकता आदि— आदि। जब भी हम घराने की बात करते हैं तो हमारा अभिप्राय विशेष प्रकार की शैली की ओर इंगित करना होता है।⁵⁹ घराने का सम्बन्ध एक ऐसी कला से है जो कि परम्परागत रूप से पूर्वजों से चली आती है जिसमें घराने का मुख्य कलाकार अपनी अद्भुत प्रतिभा के बल पर कोई नवीन प्रयोग करता है, जब उसकी शैली स्थापित हो जाती है और शैली को अनुशासपूर्वक उसके तकनीकी रूप से बिना छेड़-छाड़ किये आगे बढ़ाए तो वह घराना बन जाता है।⁶⁰ विद्वानों के मतानुसार 'घराना' का आदि स्रोत संस्कृत के शब्द 'गृह' से घर शब्द निकला है, हिन्दी में जिसे साधारणतः 'घर' कहते हैं और घर से विकसित होकर 'घराना' शब्द निर्मित हुआ। घराने वस्तुतः पुरानी गुरुकुल प्रथा के प्रतीक है।⁶¹

यह कला पिता अथवा गुरु से पुत्र अथवा योग्य शिष्य को प्राप्त होती है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरित होती रहती है। अनेक पीढ़ियां व्यतीत हो जाने के बाद उसका स्वरूप परिष्कृत हो, एक नवीन रूप से प्रतिष्ठित हो

⁵⁹दवे, डॉ. प्रेम (2004), कथक नृत्य परम्परा, पृष्ठ 31

⁶⁰आजाद, तीरथराम (2008), कथक ज्ञानेश्वरी, नटेश्वर कला मंदिर, नबावगंज, दिल्ली, पृष्ठ— 245

⁶¹आजाद, तीरथराम (2008), कथक ज्ञानेश्वरी, नटेश्वर कला मंदिर, नबावगंज, दिल्ली, पृष्ठ— 245

जाता है।⁶² अतः वर्तमान समय में कथक नृत्य के चार घराने हैं –

- **जयपुर घराना** - राजस्थान में जयपुर कला का केन्द्र रहा है, जहाँ प्रकृति और मानव ने नृत्य में सौन्दर्य भर दिया। कथक नृत्य में सौन्दर्य भर दिया। कथक नृत्य के क्षेत्र में जयपुर घराना सबसे प्राचीन तथा विशाल है।⁶³ जयपुर घराना हिन्दू नृत्य शैली का प्रतिक है, जिसको हिन्दू राजाओं द्वारा संरक्षण प्राप्त हुआ। कथक नृत्य के विकास में जयपुर घराने का योगदान प्रमुख रहा है। जिसने समाज में बहुत ही उत्तमकोटी के नर्तक व गुरु प्रदान किये। कहावत है राजस्थान में एक पत्थर उठाओतो उसके नीचे अनेक कलाकार मिलेंगे। वैसे तो बीकानेर, जोधपुर, उदयपुर के राजाओं ने भी समय-समय पर कलाकारों को संरक्षण दिया, किन्तु जयपुर राज्य में संगीत एवं नृत्य की सरस अविरल धारा प्रवाहित होती रही।⁶⁴

जयपुर कथक नृत्य का आदि घराना है, जिसे आज 'जयपुर घराने' के नाम से जाना जाता है। भारतीय नृत्य की विविध विधाओं के बीच कथक नृत्य को उच्चकोटी के नृत्य की समस्त विशेषताओं से जोड़कर एक सम्मानपूर्ण स्थान दिलाने में जयपुर घराने ने एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। राजस्थान जो कि कथक नृत्य का जन्म स्थल है वहाँ संगीत एक पैतृक परम्परा के रूप में ग्रहण किया जाता रहा है। कथक नृत्य शैली किसी एक ही वंश-परम्परा में पल्लवित न होकर पूरे राजस्थान में फैले हुए कथकों के असंख्य परिवारों का प्रतिनिधित्व करती है। कथक नृत्य की हिन्दू शैली जयपुर घराने के कथक नृत्य के रूप में सुरक्षित है और जयपुर घराने के कलाकारों ने ही इसका प्रचार-प्रसार सम्पूर्ण भारत में किया है। जयपुर

⁶²डॉ. माया टाक / 2006 / ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में कथक नृत्य पृष्ठ - 156

⁶³महंत भगवानदास मणिक / कथकघराना रायगढ़ (2015) / पृष्ठ - 53, 54

⁶⁴डॉ. प्रेम दवे / कथकनृत्य परम्परा (2004) / पृष्ठ - 42

घराने के प्रवर्तक भानू जी है जो शिव भक्त थे। “कहा जाता है उन्होंने शिव ताण्डव एक सन्त महात्मा से सीखा था। बाद में बहुत खोजने पर भी उन सन्त महात्मा का कुछ पता नहीं चला। जाते-जाते उन्होंने वरदान दिया कि इस नृत्य विधा का प्रसार तुम्हारे परिवार को प्रसिद्धि प्रदान करेगा। भानू जी महात्मा द्वारा दी गई नृत्य-विधा की साधना में संलग्न हो गये।”⁶⁵ जयपुर घराने के कलाकारों की वंश परम्परायें अनेक हैं। भानू जी ने ताण्डव अंग को प्रधान नृत्य बनाया और यही इस घराने की विशेषता है। इस घराने के और प्रसिद्ध कलाकार हैं मालूजी, हनुमान प्रसादजी, जयलालजी, हनुमान प्रसाद के तीन पुत्र मोहनलाल, चिरंजीलाल और नारायण प्रसाद। नारायण प्रसादजी राजा चक्रधर सिंह के शासन काल में रायगढ़ के दरबारी नर्तक थे। उनकी नृत्यकला में कथक के सभी अंगों का समावेश था हरिप्रसाद और हनुमान प्रसाद के घराने के वंशज चुन्नी लाल जी का नाम प्रमुख है। इनके तीन पुत्र जयलाल, सुन्दर प्रसाद और मालूलाल। सुन्दर प्रसाद और जयलाल दोनों अपने जमाने के महान कलाकार माने जाते हैं। सुन्दर प्रसाद जी की शिक्षा दीक्षा परम्परा अनुसार उनके पिता चुन्नीलाल से हुई एवं तत्पश्चात उन्होंने लखनऊ जाकर बिन्दादीन महाराज से भी नृत्य की शिक्षा ली। जयपुर के नर्तकों में सबसे अधिक सुन्दर प्रसाद जी प्रख्यात हुए। जयपुर घराने में श्रंगार के साथ साथ वीर रस भी नृत्य शैली की विशेषता रही। तलवार तथा कटार की गत लेकर उसकी चालों का प्रदर्शन करना अपनी विशेषता मानते थे। यहाँ का राजा कोई भी कार्य आरम्भ करने से पहले देवी देवताओं की स्तुति करते थे। इस घराने के सभी कलाकार गणेश, शिव तथा दुर्गा स्तुति से नृत्य आरम्भ करते हैं, वहाँ पर अधिकतम 9,11,13,15,17,18,24,21,22,28 मात्रा वाले जटिल तालों का प्रयोग होता है।

⁶⁵कथकज्ञानेश्वरी पं तीरथ राम आजाद, पृ. 263

विभिन्न लयकारी युक्त जटिल बंदिश जैसे तमछड़ परनें, फरमाईशी परनें, तिहाईयाँ, एकपाद भ्रमरी, भूमि भ्रमरी तथा आकषभ्रमरी का प्रयोग विशेष है। इस घराने में ताण्डव कवित्त तथा रामायण, महाभारत, शिवपुराण, श्रीमद्भागवत के दशमस्कन्ध आदि पर आधारित कथाओं के ऊपर गत भाव प्रस्तुत करना विशेष उल्लेखनीय है। जयपुर घराने के नृत्त पक्ष में सभी बोल रचना पृथक् रहती है, कोई भी बोल एक दूसरे से नहीं मिलता। भाव—नृत्य दुमरी का अधिक प्रयोग होकर भक्ति रस के काव्य, भजन आदि पर अधिक प्रदर्शन किया जाता है।

कथक नृत्य के सभी घरानों में थाट, तोड़े, टुकड़े, परण इत्यादि प्रदर्शित किए जाते हैं किन्तु उसकी अदायगी, निकास, प्रस्तुतीकरण में भिन्नता होने के कारण प्रत्येक घराना एक—दूसरे से पृथक् एवं स्पष्ट पहचाने जाने में सक्षम होता है। जयपुर घराने की अपनी कुछ पृथक् निम्नलिखित मौलिक विशेषताएँ हैं जिनके द्वारा इसका स्वरूप पृथक् रूप से स्पष्ट दृष्टिगत होता है—

1) गणेश वन्दना

जयपुर घराने के गुरुजनों के राजस्थान तथा मध्यप्रदेश के हिन्दू राजाओं के आश्रय में अधिक रहने के परिणामस्वरूप इस घराने के नृत्य के प्रारम्भ में 'गणेश वन्दना' अथवा किसी भी देवता की 'स्तुति' की प्रथा चलती आई है।

श्रवण	सुन्दर	नाम	गणपति	ज्ञान	नाथ	गजानन	रे
×				2			
ध्रिकृधान	धाधिन्न	किटतक	लम्बोदर	एकदंत	धा-क्रांथै	-तथै-	ताथै-ता
0				3			

‘जयपुर घराने’ में टुकड़े, परण इत्यादि की प्रस्तुति विलम्बित लय में की जाती है। विलम्बितलय होने से बोलों का आकार बढ़ जाता है जिससे इनकी प्रस्तुति कठिन हो जाती है। जबकि अन्य घरानों में थाट, आमद के बाद लय बढ़ा लेते हैं और बराबर की लय में टुकड़े, परन इत्यादि प्रस्तुत करते हैं। लय के चमत्कारपूर्ण प्रयोग, बन्दिशें, जोश-खरोश, तैयारी, भ्रमरी के वैविध्यपूर्ण प्रयोग आदि जयपुर घराने की विशेषताएँ हैं। जयपुर घराने का तोड़ा, टुकड़ा निम्नलिखित प्रकार है:—

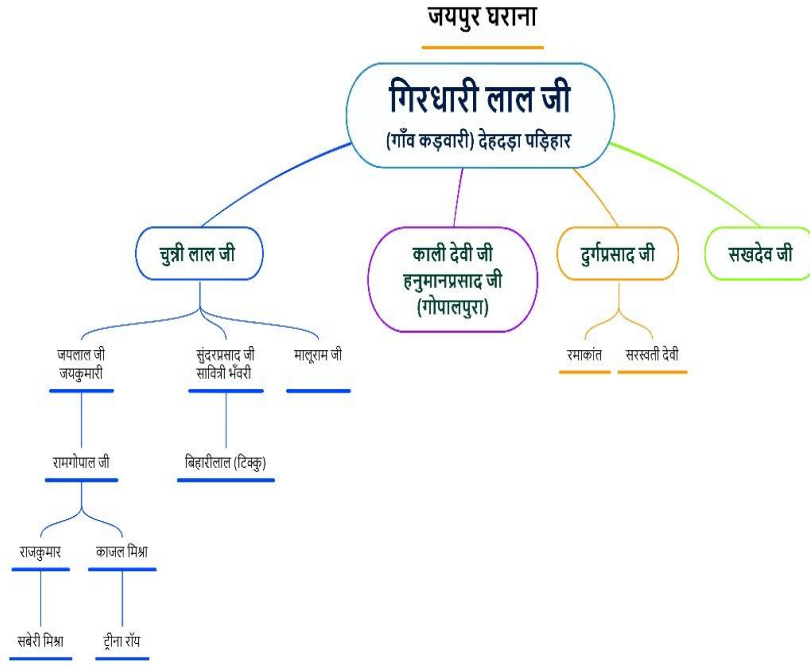
टुकड़ा—(ताल-त्रिताल : मात्रा-16)

- (i) $\begin{array}{c} \text{ताऽ धेई तत धेई} \\ \times \\ \text{तिगधाऽदिगदिग धेईत्राम धेईऽऽ तिगधाऽदिगदिग} \\ 0 \end{array}$ $\begin{array}{c} \text{आऽ धेई तत धेई} \\ 2 \\ \text{धेई त्राम धेईऽऽतिगधाऽदिगदिग धेई त्राम} \\ 3 \end{array}$
- (ii) $\begin{array}{c} \text{ताऽधेई धेईतत आऽधेई धेईतत} \\ \times \\ \text{धेई तत धेई त्राम} \\ 0 \\ \text{धेई त्राम धेई ऽऽ} \\ 2 \end{array}$ $\begin{array}{c} \text{धेई धेई धेई त्राम} \\ 3 \\ \text{धेई ऽऽ धेई धेई} \\ 3 \\ \text{धेई धेई धेई त्राम} \\ 0 \end{array}$ $\begin{array}{c} \text{धेई त्राम धेई तत} \\ \times \\ \text{धेई तत धेई त्राम}^{12} \\ 3 \end{array}$

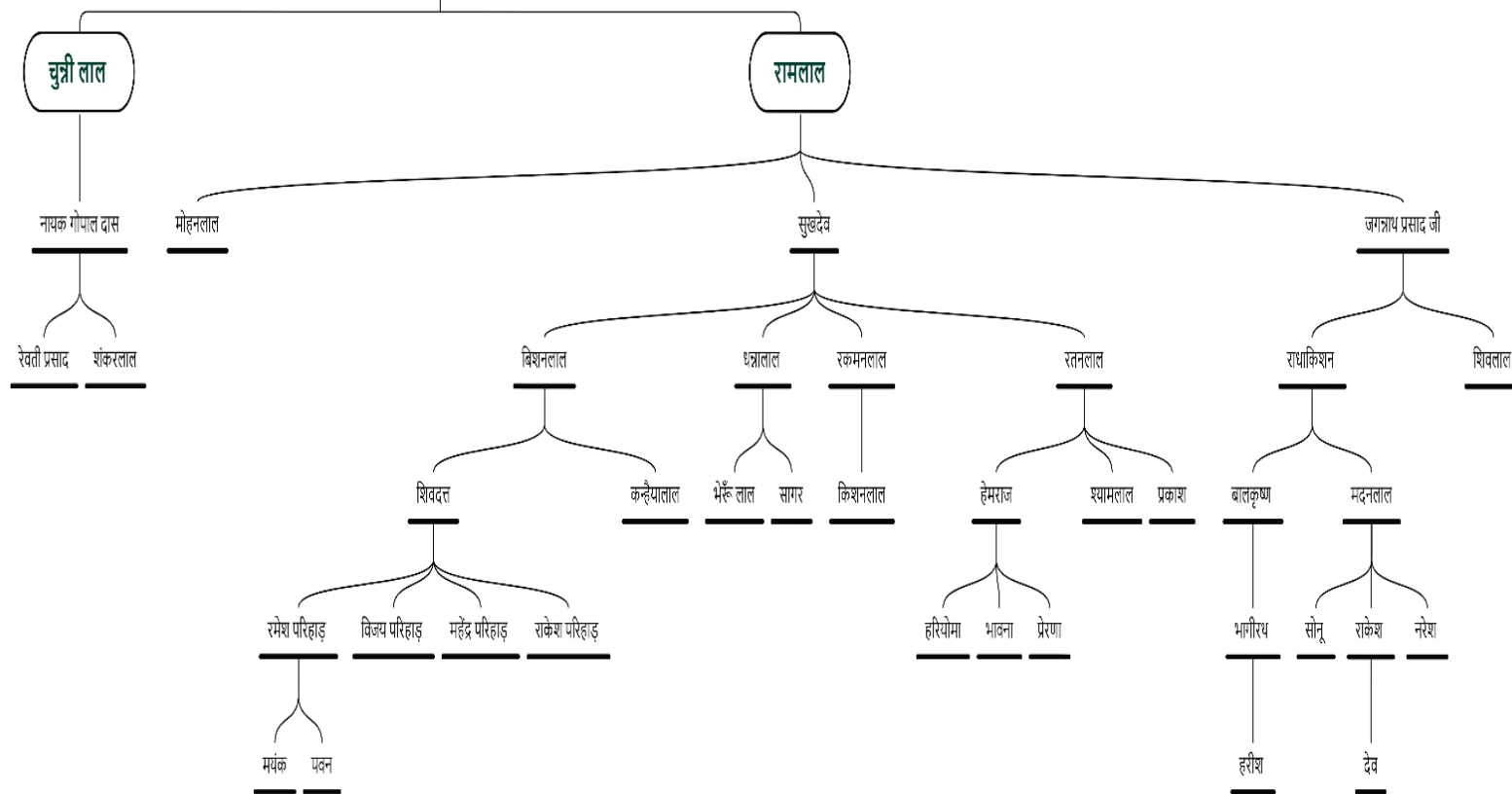
तोड़ा—(ताल-त्रिताल)

- $\begin{array}{c} \text{ताऽ धेई तत धेई} \\ \times \\ \text{धेई धेई तत तत} \\ 3 \\ \text{तिगधाऽदिगदिग धेईत्राम धेईऽऽ तिगधाऽदिगदिग} \\ 0 \\ \text{धेईत्राम धेईऽऽ तिगधाऽदिगदिग धेईत्राम}^{13} \\ 3 \end{array}$ $\begin{array}{c} \text{आऽ धेई तत धेई} \\ 2 \\ \text{ताऽ ऽऽ तत तत} \\ \times \\ \text{धेई धेईताऽ धेई धेईताऽ} \\ 0 \\ \text{ताऽधेई धेईतत आऽधेई धेईतत} \\ 2 \end{array}$

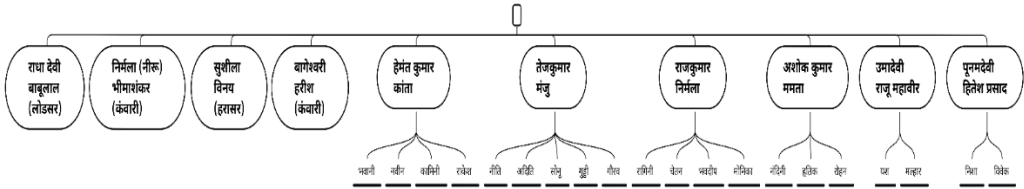
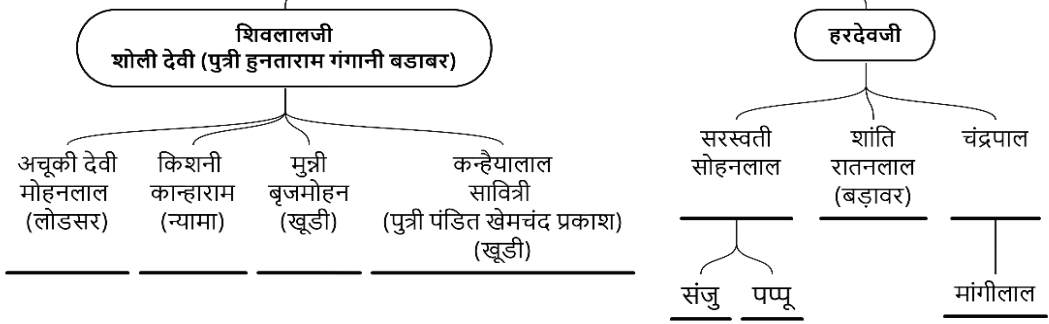
जयपुर घराने की पीढ़ीगत परंपरा

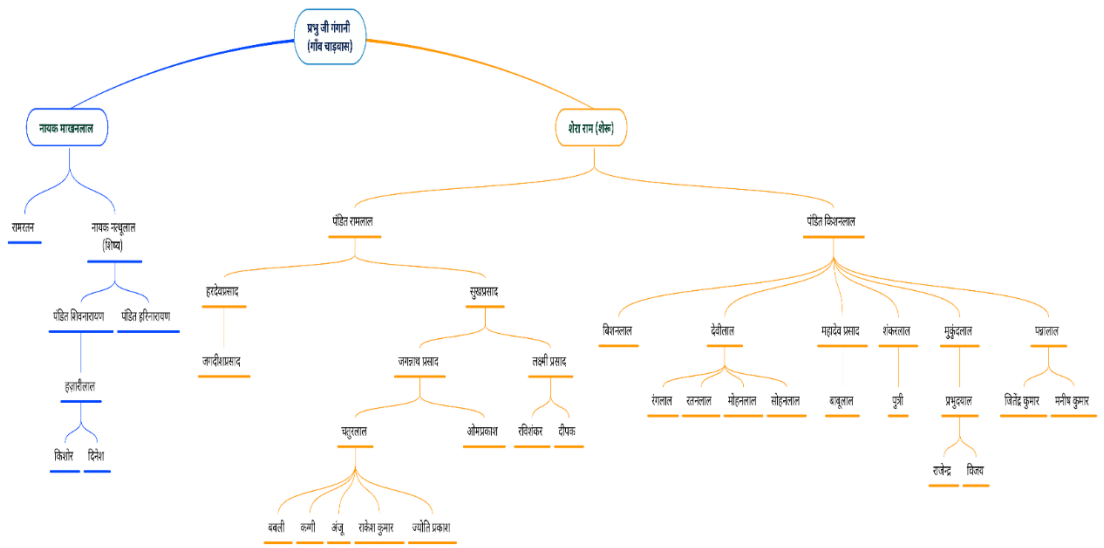


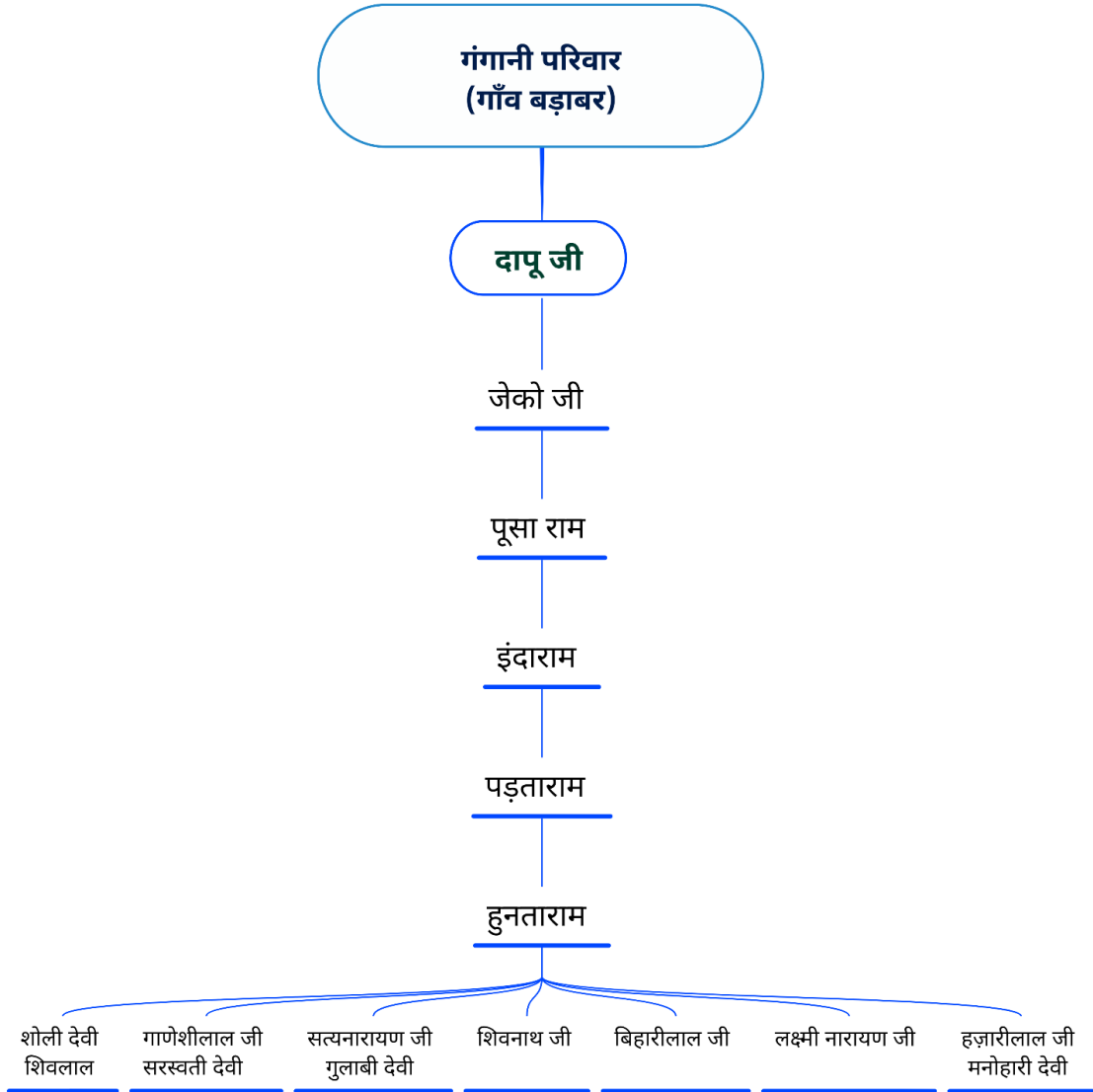
श्री नत्थूलालजी पड़िहार
(न्यामा गाँव)

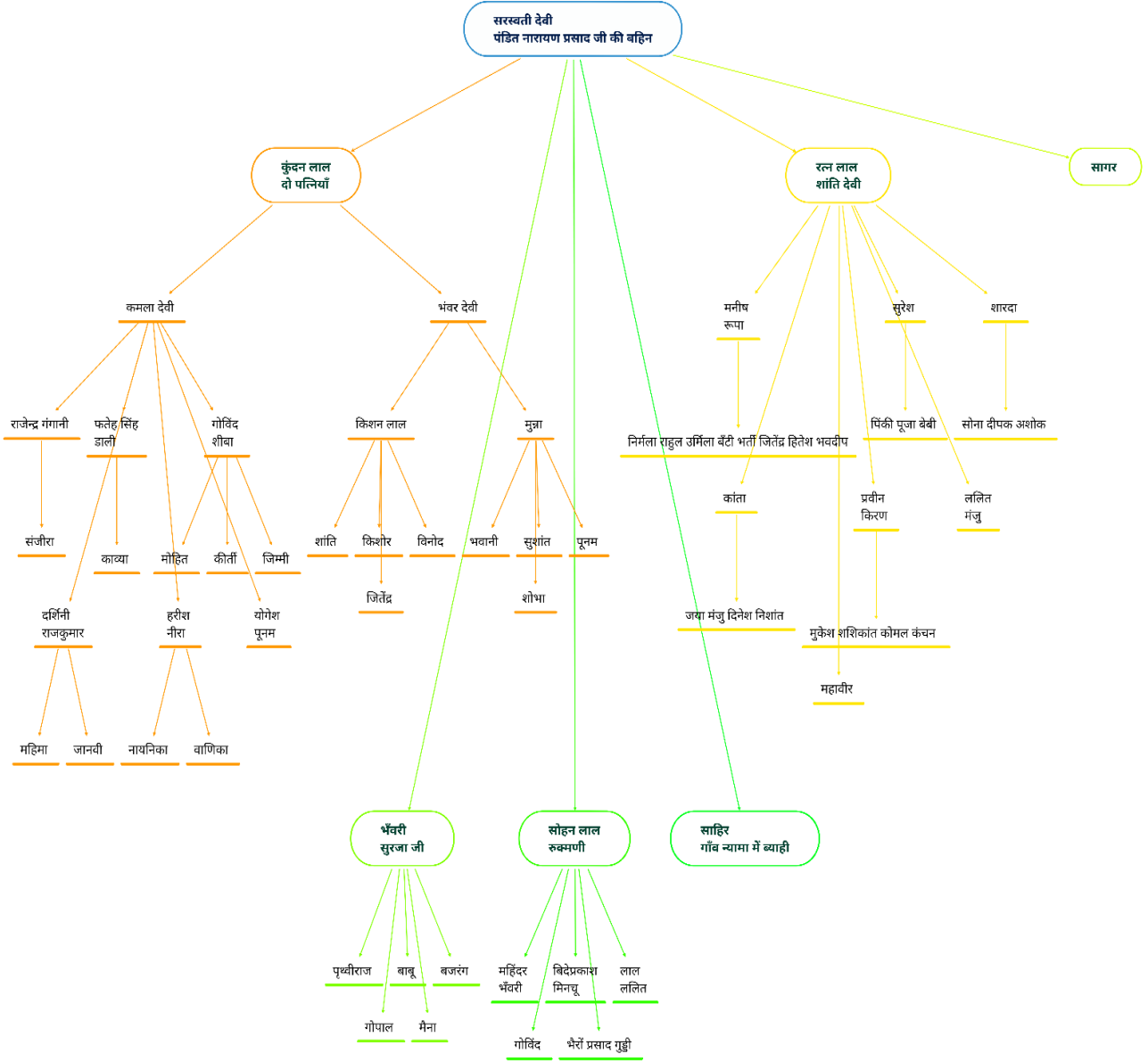


श्री गणेशीलाल जी जवडा
(गाँव ठरडा)







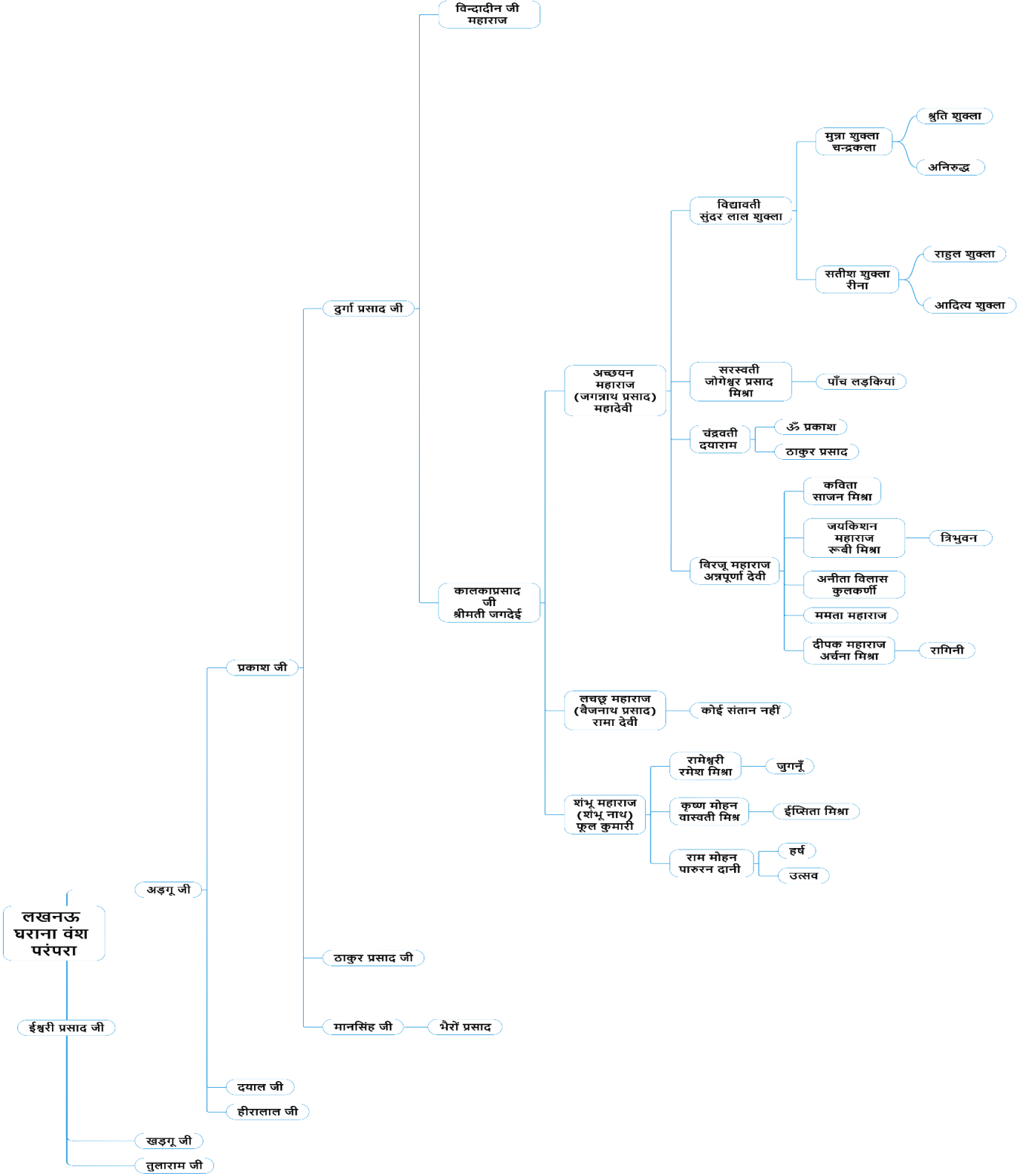


- **लखनऊ घराना** . लखनऊ घराने का उद्भव लखनऊ के नवाब असिफुद्दौला के दरबार में इसका विकास नवाब वाजिद अली शाह के दरबार में हुआ। मिश्र, ब्राह्मण कुलोत्पन्न, हंडिया तहसील के चुलबुला गांव के निवासी श्री ईश्वरीप्रसाद मिश्र लखनऊ घराने के प्रवर्तक माने जाते हैं। कहा जाता है कि स्वयं भगवान श्रीकृष्ण ने उनको स्वप्न में प्रकट होकर कथक नृत्य का प्रचार करने का आदेश दिया। ईश्वरी प्रसाद मिश्र जो स्वयं एक अच्छे नर्तक थे, ने भगवान कृष्ण के आदेशानुसार तथा प्रेरणा से भव्य नृत्यकला का विकास किया तथा उसे 'कथक नटवरी नृत्य' की संज्ञा दी। इस मत के अनुसार ईश्वरी प्रसाद द्वारा कृष्ण लीलाओं पर आधारित नटवरी नृत्य प्रसिद्ध हुआ। जिसकी शिक्षा उन्होंने अपने तीनों पुत्रों अड़गूजी, खड़गूजी, और तुलाराम जी को दी। केवल अड़गूजी ने इस नृत्य की परम्परा को आगे ब अपने तीनों पुत्र प्रकाश जी, दयालजी एवं हरीलालजी को नृत्य की शिक्षा दी, प्रकाशजी के तीन पुत्र दुर्गा प्रकाश जी, ठाकुर प्रकाशजी एवं मानजी का नाम उत्तम एवं अलौकिक नृत्यकार के रूप में प्राप्त होता है। ठाकुर प्रकाशजी वाजिदअलीशाह के गुरु नियुक्त हुए और उस समय से ही कथक नृत्य का व्यापक रूप से प्रचार हुआ। इनके बड़े भाई दुर्गाप्रसाद जी के तीन पुत्र हुए— बिन्दादीन, कालका प्रसाद और भैरोंप्रसाद। आपने छोटे भाई श्री कालका प्रसाद जी के साथ मिलकर 'कालका—बिन्दादीन' युगल नाम की ख्याति देश भर में फैला दी थी। "नृत्य प्रेमी इन्हें 'राम—लक्ष्मण' के नाम से भी पुकारते थे। बिन्दादीनजी ने लगभग 1500 ठुमरियों की रचना करके उनमें भाव के अनुसार अंग—निर्माण किया है। इसी घराने के वंशज कालका प्रसाद जी के तीन पुत्र अच्छन महाराज, शम्भूमहाराज व लच्छू महाराज अपनी—अपनी विद्वता के लिए प्रसिद्ध हुए। शम्भू महाराज अभिनय चक्रवती कहलाए। ठुमरी पर अभिनय में उनका कोई

जोड़ नहीं था। लच्छू महाराज को सात्विकपूर्ण कोमल अंग-भंगिमा के विकास के लिए लास्य सम्राट कहा जाता था। अच्छन महाराज स्थूलकार शरीर के होते हुए भी द्रुतलय में चक्कदार भ्रमरियों के अतिरिक्त तीनताल के अतिरिक्त अन्य कठिन तालों में सुगमतापूर्वक नृत्य करने के लिए प्रसिद्ध थे। अच्छन महाराज जी के तीन पुत्री एवं एक पुत्र बृजमोहन मिश्र (बिरजू महाराज) हुए। वर्तमान समय में लखनऊ घराने के कथक नृत्य को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्धि एवं लोकप्रियता दिलाने का काम पद्म विभूषण पं. बिरजू महाराज ने निष्ठा और लगन से किया है। उन्होंने रस शैली में अनेक प्रकार के नवीन एवं आकर्षक प्रयोग करके रस नृत्य की प्रतिष्ठा को सम्मान दिलाया है। उनके अनेक शिष्य न केवल देशभर में बल्कि दूसरे देशों में भी कथक नृत्य की शिक्षा देकर इसे लोकप्रिय बना रहे हैं। पं. बिरजू महाराज की शिष्या तथा विशिष्ट नृत्यांगना सुश्री सास्वती सेन का कहना है कि “आज के कथक नृत्य का जो सुन्दर नया रूप है वो केवल बिरजू महाराज जी की मेहनत एवं सृजनधर्मिता का फल है।⁶⁶ गाकर भाव बताना इस घराने की प्रमुख विशेषता है। इस शैली में गत दोनों ओर बनाई जाती है। नटवरी तोड़ा का विशेष प्रयोग किया जाता है। नृत्य के बोलों के अतिरिक्त मृदंग की परने भी की जाती है। लखनऊ घराने में नजाकत छोटे-छोटे बोलों द्वारा अंगों की खूबसूरती तथा भाव के विस्तार प्रदर्शन के लिए प्रसिद्ध है।

⁶⁶कथककल्पद्रुम – डॉ. चेतना ज्योतिषी, पृ. 184

लखनऊ घराने की पीढ़ीगत परंपरा



- **बनारस घराना** – कथक नृत्य के क्षेत्र में बनारस घराने का महत्वपूर्ण स्थान है। इस घराने के प्रवर्तक स्व. जानकी प्रसाद जी थे। “कहा जाता है कि इस घराने के लोग भी मूलतः राजस्थान के ही थे मगर बनारस के धार्मिक एवं पवित्र वातावरण से आकर्षित होकर उनके पूर्वज यहाँ आकर बस गये और उन्हीं के वंशजों के प्रयास से एक विशेष कथक शैली का आविर्भाव हुआ जो आज बनारस घराने के नाम से जाना जाता है।”⁶⁷

जानकी प्रसाद जी एक कुशल नर्तक के साथ-साथ संस्कृत के प्रकाण्ड विद्वान थे। इन्होंने नृत्य के पवित्र स्वरूप को बनाये रखने के लिए अथक परिश्रम किया। उनके प्रमुख शिष्य चुन्नीलाल जी एवं शिष्य व भाई दुल्हाराम व गणेशीलालजी थे। दुल्हारामजी के तीन पुत्र थे— बिहारीलाल, पूरनलाल और हीरालाल। इस घराने के और प्रमुख कलाकार हैं— किशनलाल, मोहनलाल, सोहनलाल। गणेशी लाल जी के तीन पुत्र हनुमान प्रसाद, शिवलाल, गोपालदास, तथा शिवलालजी के तीन पुत्र सुखदेव, दुर्गाप्रसाद व कुन्दनलाल हैं। कुन्दनलाल गंगानी जी ने दिल्ली में नृत्य शिक्षक के रूप में कार्य किया तथा जानकी प्रसाद घराने को सर्वाधिक प्रचार-प्रसार व ख्याति प्रदान की। गणेशीलाल जी के पौत्र तथा गोपालजी के पुत्र श्रीकृष्ण कुमार। कृष्ण कुमार जी अपने कलात्मक वैशिष्ट्य में देश के जाने माने कलाकार रहे हैं। भाव-पक्ष एवं पाँवों तत्कार की विविधता में उनका जवाब नहीं था। इनके द्वारा निर्देशित नृत्य नाटिकाओं में “वाजिद अलीशाह”, ‘उमर खैयाल’, तम्ज की कहानी, पनिहारी ने विशेष प्रसिद्धि प्राप्त की। बनारस घराने की सबसे प्रमुख विशेषता है कि इसमें नृत्य शुद्ध बोलों का ही आध्यात्मिक प्रयोग होता है। बोलों के वजन के अनुरूप अंग-संचालन होता है। ऐसी मान्यता है कि ‘एड़ी’ का तत्कार चलन इसी घराने से आरम्भ हुआ है। इस घराने

⁶⁷ भारतीय संस्कृति में कथकपरम्परा, माण्डवी सिंह, पृ. 161

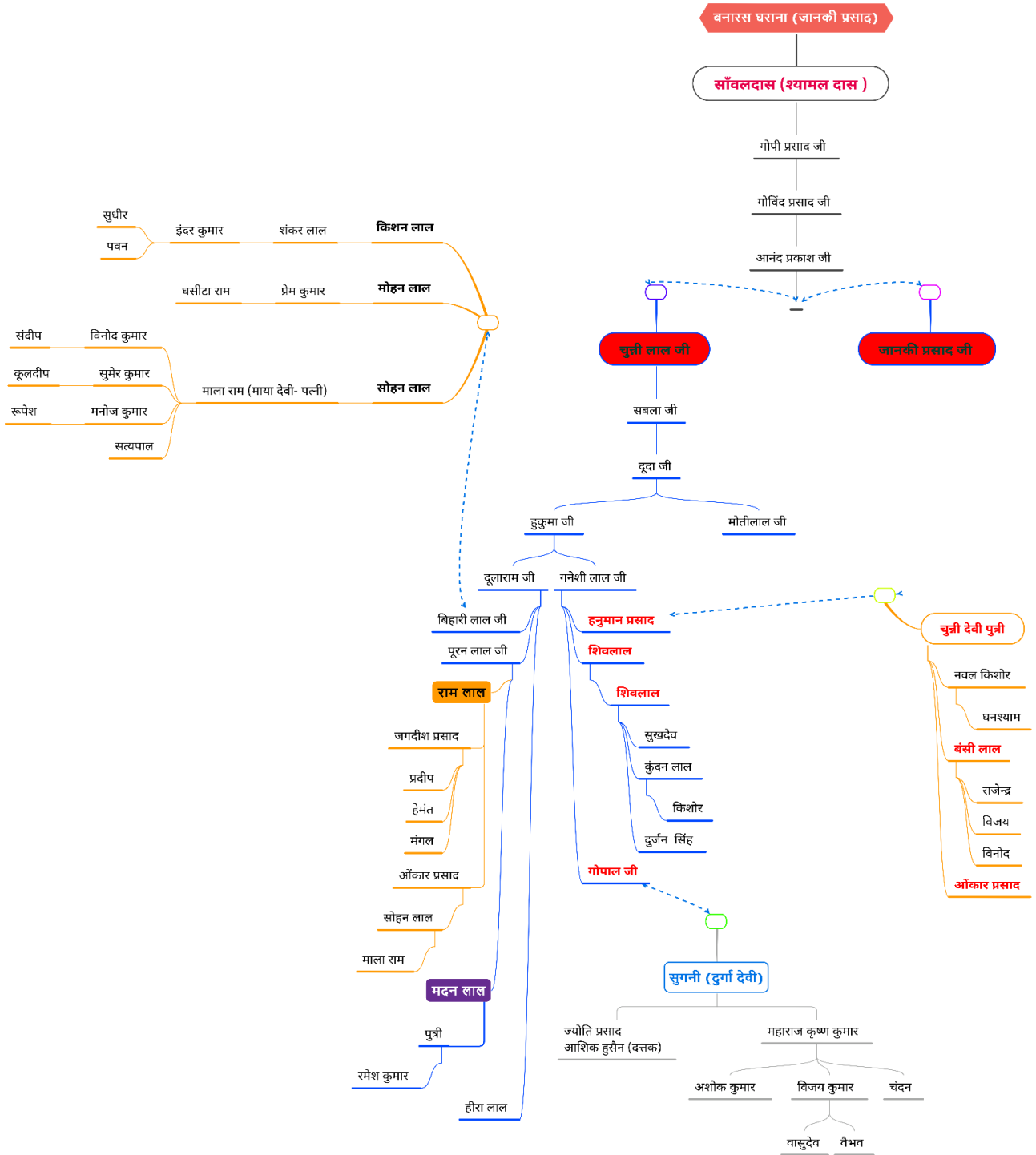
में भावाभिव्यक्ति की कला की समृद्धि के कारण केवल राधा-कृष्ण के छेड़छाड़ को छोड़ सामाजिक जीवन दर्शन से सम्बन्धित प्रसंगों को भी अपने भावाभिनय द्वारा प्रस्तुत करते हैं, इस घराने के नर्तक कोमलता को प्रधानता देते हैं। बनारस के सुखदेव महाराज का कथक को योगदान नजर अन्दाज नहीं किया जा सकता। वह एक अच्छे संगीतकार, संस्कृत विद्वान कवि एवं नर्तक के तथा उन्होंने इन चारों कलाओं के सम्मिश्रण से रूपसज्जा एवं विभिन्न चरित्रों के अनुरूप वेशधारी नृत्यों का प्रदर्शन देश के कोने-कोने में किया। उस समय समाज में स्त्रियों का नृत्य करना अच्छा नहीं समझा जाता था। इन्होंने अपनी पुत्रियों अलकानन्दा, सितारा को स्वयं मंच पर नचाया एवं समाज में उनकी प्रतिष्ठा एवं जनसमाज में उनके प्रति रूचि आदरभाव उत्पन्न किया। “श्रीमती सितारादेवी की मान्यता है कि मेरे पिता श्री सुखदेव प्रसाद जी ने उस समय नृत्य को उभारा था जब मुगल राजा के विलासी व श्रृंगारिक वातावरण तथा अंग्रेजों के सामन्तवादी समय में कथक नृत्य के भक्तिभाव का लोप होता जा रहा था, कथक नृत्य पतन के गर्त की ओर गिर रहा था। उस समय कथक नृत्य का चलन बाईजी अथवा वेश्याओं में अधिक था जिसके परिणामस्वरूप सभ्य समाज इसे हेय दृष्टि से देखता था। ऐसे नाजुक समय में इन्होंने धार्मिक पृष्ठभूमि के आधार पर लोगों का इस नृत्य के प्रति ध्यान आकर्षित करने का प्रयास किया। इसके लिए उन्होंने राधा-कृष्णका नृत्य एवं शिव-पार्वती का नृत्य कहकर कथक नृत्य का प्रचार व प्रसार किया। इस प्रकार भगवान के नाम से नृत्य देखे व सराहे गए। कला चल पड़ी और कथक नृत्य पुनः प्रतिष्ठित हो गया।”⁶⁸

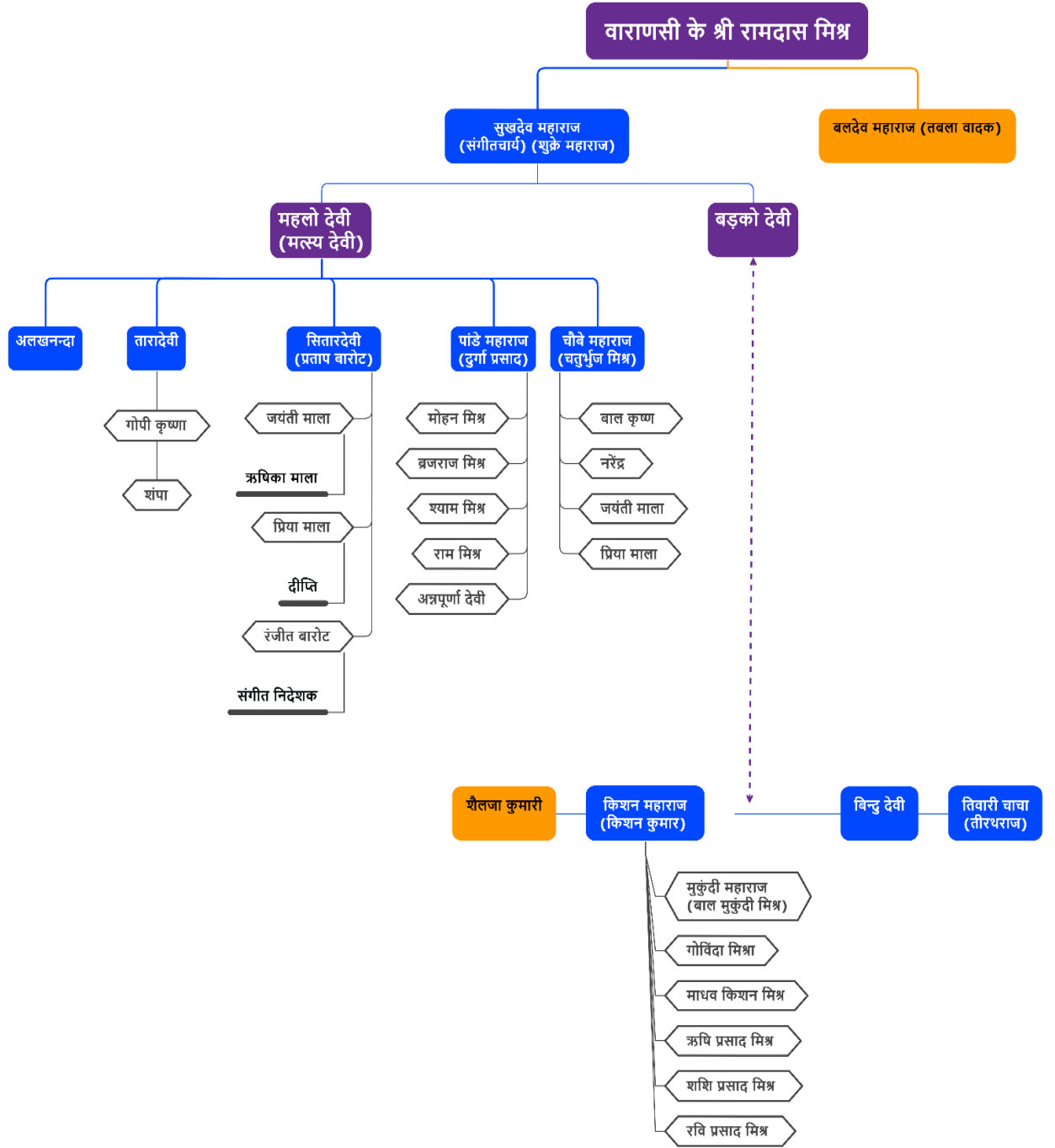
सुखदेव प्रसाद जी की तीन पुत्रियों अलकानन्दा, तारा व सितारादेवी व दौ पुत्र श्री पाण्डे महाराज (दुर्गाप्रसाद) व चौबे महाराज हैं। स्व. सितारादेवी

⁶⁸ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में कथकनृत्य, डॉ. माया टाक, पृष्ठ- 202

जी देश की जानी-मानी सुविख्यात कथक नृत्यांगना हैं। संगीत-नृत्य के क्षेत्र में शायद ही कोई इनके नाम से अनभिज्ञ हो। तारा देवी के एक पुत्र गोपीकृष्ण ने अपने कला-कौशल से विशेष ख्याति अर्जित की। चौबे महाराज के एक पुत्र अमरनाथ मिश्र भी उदीयमान कथक नर्तक हैं। सुखदेव प्रसाद घराने की नींव धार्मिक पृष्ठभूमि पर आधारित है। इसी कारण इस घराने में वन्दना का विशेष महत्व है। इस घराने में 'ताण्डव' जैसी वीर तथा रौद्र रचनाओं का प्राधान्य है। इस घराने के नृत्यकारों की मान्यता है कि इस घराने के नृत्यकारों की मान्यता है कि पढ़न्त के बिना कथक नहीं हो सकता। कथक नृत्य शैली में 'तराना' द्वारा नृत्याभिनय सुखदेवप्रसाद घराने द्वारा ही प्रारम्भ हुआ। इस घराने में वेशभूषा का अत्याधिक महत्व है।

बनारस घराने की वंश परम्परा





- **रायगढ़ घराना** - वर्तमान समय में कथक नृत्य के घरानों की श्रृंखला में जयपुर, लखनऊ, बनारस की भांति ही रायगढ़ घराना भी प्रकाश में आया है। राजा चक्रधर सिंह के शासनकाल में 1904–1947 कथक के जयपुर व लखनऊ दोनों ही घरानों को पूर्ण संरक्षण द्वारा एक अभिनव शास्त्रीय पद्धति का विकास किया और यही पद्धति वर्तमान समय में अपनी विशिष्टताओं के फलस्वरूप 'कथक रायग' विशिष्टताओं के फलस्वरूप 'कथक रायगढ़ घराना' में नाम से विख्यात हुई। राजा चक्रधर सिंह की मृत्यु के बाद रायगढ़ दरबार में हुए उत्कृष्ट कार्य पर विराम लग गया था किन्तु पिछले दो तीन दशक से रायगढ़ शैली के ऊपर किये तथा परिचर्चा आदि के माध्यम से इसका प्रचार – प्रसार हुआ और रायगढ़ दरबार की विशेष शैली को रायगढ़ घराने के रूप में मान्यता प्राप्त हो गई है। राजा चक्रधर सिंह स्वयं एक उच्च कोटि के संगीतज्ञ थे। वे एक कुशल नर्तक तथा तबला व पखावज वादक थे। उनके पूर्वज संगीत के पारखी थे। अतः संगीत उन्हें विरासत में मिला था। उन्होंने संगीत–नृत्य सम्बन्धी चार कृतियाँ 'नर्तन–सवंस्वम्', 'ताल–तोय–निधि', 'राग–रतन मंजूशा' और 'मुरज–परन–पुष्पाकर' की रचना की। जिनमें से 'नर्तन'–'सर्वस्वम्' नामक विशाल ग्रंथ की रचना की, चूंकि रायगढ़ कथक नृत्य गुरु ही नहीं वरन विभिन्न संगीताचार्यों व साहित्यकारों का भी जमघट था। राजा रचनाधर्मी थे अतः सभी विद्वानों के समागम एवं विचार–विमर्श से कथक नृत्य की अनेक रचनाओं का निर्माण किया। ये रचनाएं पूर्व में प्रचलित रचनाओं से भिन्न हैं तथा प्रत्येक रचना स्वतः ही विशेष अर्थों को इंगित करती है।

राजा चक्रधर सिंह

कार्तिक राम
रामलाल

कल्याण दास

फिरतूदास

बर्मनदास

निष्कर्षतः कथक नृत्य, जो प्राचीन काल में मंदिरों और धार्मिक स्थलों पर पौराणिक कथाओं को नृत्य और अभिनय के माध्यम से प्रस्तुत करने की एक विधा थी, समय के साथ अनेक परिवर्तनों से गुजरा है। मुगल काल में, यह नृत्य मंदिरों से दरबारों तक पहुँचा, जहाँ इसकी शैली और तकनीक में महत्वपूर्ण बदलाव हुए। धार्मिक भावनाओं से परिपूर्ण यह नृत्य-शैली श्रृंगार प्रधान बन गई, और इसकी शब्दावली में उर्दू शब्दों का समावेश हुआ, जैसे आमद, निकास, अदा, सलामी आदि। वेशभूषा में भी परिवर्तन आया, जिससे यह नृत्य-शैली समयानुसार विकसित होती गई।

आधुनिक समय में, कथक ने अपनी प्राचीन जड़ों को संरक्षित रखते हुए समकालीन परिवेश के साथ तालमेल बिठाया है। यह नृत्य-शैली अब केवल धार्मिक या दरबारी प्रस्तुतियों तक सीमित नहीं है, बल्कि वैश्विक मंचों पर अपनी पहचान बना चुकी है। कई कलाकार पारंपरिक कथक में समकालीन संगीत और नृत्य शैलियों का समावेश कर रहे हैं, जिससे यह युवा पीढ़ी के बीच भी लोकप्रिय हो रहा है। तकनीकी प्रगति के साथ, कथक प्रस्तुतियों में डिजिटल पृष्ठभूमि और मल्टीमीडिया का उपयोग बढ़ा है, जिससे दर्शकों के लिए अनुभव और भी रोचक हो गया है।

हालांकि, इस आधुनिकता के साथ पारंपरिक तत्वों को संरक्षित रखना एक चुनौती है। कई पारंपरिक कलाकार और संस्थान इस संतुलन को बनाए

रखने के लिए प्रयासरत हैं, ताकि कथक की मूल आत्मा बनी रहे। कथक की शिक्षा में भी परिवर्तन आया है। पारंपरिक गुरु-शिष्य परंपरा के साथ-साथ संस्थागत शिक्षा का प्रचलन बढ़ा है, जिससे अधिक से अधिक लोग इस कला से जुड़ रहे हैं। कुल मिलाकर, कथक ने समय के साथ अपने आप को परिवर्तित और अनुकूलित किया है, जिससे यह नृत्य-शैली आज भी प्रासंगिक और जीवंत है। पारंपरिक तत्वों और आधुनिक प्रवृत्तियों के समन्वय से, कथक ने अपनी विशिष्ट पहचान बनाई है और यह प्रक्रिया निरंतर जारी है।⁶⁹

1.5.2. कथक में घराना परंपरा: विद्वानों के दृष्टिकोण

कथक की घराना परंपरा को लेकर विद्वानों के मत एकरूप नहीं हैं। कुछ विद्वान इसे कथक की आत्मा मानते हैं, जबकि कुछ इसे सीमित करने वाली संरचना के रूप में देखते हैं। इन मतों का मुख्य अंतर परंपरा की सुरक्षा और विशेषीकरण के कारण उत्पन्न बंधन को लेकर दिखाई देता है।

परंपरावादी विद्वानों का मानना है कि घराना परंपरा ने कथक की शास्त्रीय पहचान को सुरक्षित रखा है। उनके अनुसार, घरानों के कारण ही कथक की तकनीक, लयकारी, भाव-अभिनय और प्रस्तुति की सूक्ष्मताएँ संरक्षित रह सकीं। वे यह तर्क देते हैं कि यदि घराना व्यवस्था न होती, तो कथक एक मिश्रित या अस्पष्ट नृत्य शैली बन सकता था। इस दृष्टिकोण में घराना को ज्ञान के अनुशासित हस्तांतरण का माध्यम माना गया है, जहाँ गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से विशिष्ट कौशल विकसित होता है और शास्त्रीयता बनी रहती है।

⁶⁹ ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में कथक नृत्य- डॉ. माया टाक p. no. 17-18

इसके विपरीत, कुछ समकालीन और आलोचनात्मक विद्वानों का मत है कि घराना परंपरा कई बार कथक को अत्यधिक विशेषीकरण तक सीमित कर देती है। उनके अनुसार, जब किसी कलाकार को केवल एक ही घराने की शैली में प्रशिक्षित किया जाता है, तो उसकी रचनात्मक स्वतंत्रता सीमित हो सकती है। वे यह भी मानते हैं कि घराना-आधारित पहचान कभी-कभी नवाचार, प्रयोग और अंतःशैली संवाद में बाधा बन जाती है। इस दृष्टि से घराना परंपरा को एक प्रकार का सांस्कृतिक ढांचा माना जाता है, जो संरक्षण के साथ-साथ सीमाएँ भी निर्धारित करता है।

कुछ विद्वान इन दोनों मतों के बीच संतुलित दृष्टिकोण प्रस्तुत करते हैं। उनके अनुसार घराना परंपरा कथक की नींव है, परंतु इसे कठोर ढांचे के रूप में नहीं देखा जाना चाहिए। वे मानते हैं कि विशेषीकरण आवश्यक है, किंतु उसका उद्देश्य कलाकार को बाँधना नहीं, बल्कि उसे सशक्त बनाना होना चाहिए। इस प्रकार, विद्वानों के मतों में अंतर इस बात पर केंद्रित है कि घराना परंपरा को संरक्षण का साधन माना जाए या रचनात्मक विस्तार में बाधा, और आज का कथक इन्हीं दोनों के बीच संतुलन खोजने का प्रयास करता दिखाई देता है।

द्वितीय अध्याय

साहित्य की समीक्षा

2.1. सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन (Literature Review)

किसी भी शोध कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन एक अनिवार्य प्रक्रिया है। यह प्रक्रिया शोधकर्ता को विषय की मौजूदा जानकारी और शोध क्षेत्र में पहले किए गए कार्यों को समझने का अवसर प्रदान करती है। साथ ही, यह सुनिश्चित करती है कि शोधकर्ता का अध्ययन मौलिक हो और नई जानकारियों को सामने लाने में सक्षम हो। पुनरावलोकन का उद्देश्य यह समझना है कि अब तक विषय पर क्या कार्य हुआ है, क्या निष्कर्ष निकाले गए हैं, और कौन-कौन सी समस्याएं अभी भी अनसुलझी हैं। इससे शोध के लिए सही दिशा का निर्धारण होता है।

साहित्य पुनरावलोकन की प्रक्रिया शोधकर्ता को पिछले शोध कार्यों के संकलन, उनके विश्लेषण और उनका मूल्यांकन करने में मदद करती है। यह सुनिश्चित करने में भी सहायक होती है कि शोधकर्ता अनावश्यक रूप से उन्हीं विषयों को दोहराए नहीं, जिन पर पहले ही गहन अध्ययन हो चुका है। उदाहरण के लिए, यदि कोई शोधकर्ता शिक्षा में डिजिटल तकनीकों के प्रभाव पर काम करना चाहता है, तो उसे यह जानना होगा कि इस विषय पर पहले क्या कार्य हुआ है और उन शोधों से कौन-कौन से निष्कर्ष निकले हैं। इस प्रक्रिया का एक महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह शोधकर्ता को पूर्व के शोध में उपयोग की गई पद्धतियों और दृष्टिकोणों को समझने का अवसर देती है। इससे वह अपने शोध के लिए उपयुक्त पद्धति का चयन कर सकता

है। साथ ही, यह भी पता लगाया जा सकता है कि किन पद्धतियों ने बेहतर परिणाम दिए हैं और किनसे समस्याएं उत्पन्न हुई हैं। इस प्रकार साहित्य पुनरावलोकन न केवल शोध के लिए आधार तैयार करता है, बल्कि शोध की गुणवत्ता और उसकी दिशा को भी बेहतर बनाता है।

पुनरावलोकन से शोधकर्ता यह भी जान सकता है कि शोध के दौरान कौन-कौन सी समस्याएं सामने आ सकती हैं और उनका समाधान कैसे किया जा सकता है। उदाहरण के लिए, यदि किसी शोध में डेटा संग्रहण में समस्याएं आई थीं, तो नया शोधकर्ता उस समस्या से बचने के लिए अपनी योजना पहले ही बना सकता है। इसके अतिरिक्त, यह प्रक्रिया विषय से संबंधित नवीनतम तथ्यों और खोजों को भी सामने लाने में मदद करती है।

साहित्य पुनरावलोकन के लिए कई चरणों का पालन किया जाता है। सबसे पहले प्रासंगिक स्रोतों का चयन और पहचान की जाती है। इसमें शोध पत्र, पुस्तकें, रिपोर्ट, जर्नल आर्टिकल, कॉन्फ्रेंस प्रोसिडिंग्स और ऑनलाइन स्रोतों का चयन किया जाता है। यह सुनिश्चित करना आवश्यक है कि चुने गए स्रोत प्रामाणिक और विश्वसनीय हों। इसके बाद, इन स्रोतों का गहन अध्ययन और विश्लेषण किया जाता है। यह देखा जाता है कि स्रोत में कौन-कौन सी पद्धतियों का उपयोग किया गया है, उनके निष्कर्ष क्या रहे हैं और उनकी सीमाएं क्या थीं। इसके बाद, पुनरावलोकन के दौरान प्राप्त जानकारी को वर्गीकृत किया जाता है। उदाहरण के लिए, इसे विषय के प्रमुख सिद्धांतों, पद्धतियों और तकनीकों के विश्लेषण, निष्कर्षों और उनके प्रभाव, तथा अनसुलझे प्रश्नों और भविष्य की संभावनाओं के आधार पर विभाजित किया जा सकता है। अंत में, समीक्षा को व्यवस्थित ढंग से लिखा जाता है ताकि यह शोध प्रक्रिया के सभी प्रमुख पहलुओं को कवर कर सके।

साहित्य पुनरावलोकन का सबसे बड़ा लाभ यह है कि यह अनावश्यक पुनरावृत्ति को रोकता है। उदाहरण के लिए, यदि एक शोधकर्ता यह अध्ययन कर चुका है कि सामाजिक मीडिया का युवा पीढ़ी पर प्रभाव सकारात्मक है, तो नया शोधकर्ता इस निष्कर्ष को दोहराने के बजाय इसके विस्तृत प्रभाव, जैसे कि मानसिक स्वास्थ्य या रोजगार के संदर्भ में अध्ययन कर सकता है। इसके अलावा, यह प्रक्रिया नवाचार को बढ़ावा देती है। इससे शोधकर्ता को यह समझने में मदद मिलती है कि किस क्षेत्र में नवीनता की आवश्यकता है। पुनरावलोकन शोध की विश्वसनीयता और प्रामाणिकता में भी वृद्धि करता है। यह शोधकर्ता के तर्कों को समर्थन प्रदान करता है और उनके निष्कर्षों को प्रमाणित करता है। इसके माध्यम से शोध समस्या को सही ढंग से समझा जा सकता है। यदि किसी विषय पर पहले ही व्यापक अध्ययन किया जा चुका है, तो शोधकर्ता इसे नए दृष्टिकोण से देखने का प्रयास कर सकता है। इस प्रक्रिया को प्रभावी बनाने के लिए यह आवश्यक है कि शोधकर्ता केवल उच्च गुणवत्ता वाले और प्रासंगिक स्रोतों का चयन करें। अध्ययन करते समय अनावश्यक जानकारी को शामिल करने से बचा जाए। समीक्षा को थीम, अवधारणाओं या समय-सीमा के आधार पर व्यवस्थित रखना चाहिए। उद्धरण और संदर्भों का सही उपयोग भी आवश्यक है ताकि समीक्षा की विश्वसनीयता बनी रहे।

कुल मिलाकर, साहित्य पुनरावलोकन किसी भी शोध कार्य का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह शोध की गुणवत्ता को बढ़ाने, उसकी दिशा को स्पष्ट करने और नए विचारों को सामने लाने में मदद करता है। यह शोधकर्ता को मौजूदा ज्ञान के आधार पर अपने अध्ययन को आगे बढ़ाने और नई संभावनाओं की खोज करने के लिए प्रेरित करता है। सही तरीके से किया गया पुनरावलोकन न केवल शोध को प्रभावी बनाता है, बल्कि उसके निष्कर्षों

को भी प्रासंगिक और मूल्यवान बनाता है।

2.2. शोध कार्य की प्रासंगिकता (Relevance of the Research Work)

प्रस्तुत शोध कार्य कथक नृत्य के प्रचार-प्रसार में नृत्य-नाटिकाओं के योगदान को समझने और उसके सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और कलात्मक प्रभावों का समग्र विश्लेषण करने का एक प्रयास है। कथक नृत्य भारतीय शास्त्रीय नृत्य परंपराओं में से एक है, जिसकी नृत्य-नाटिकाओं ने सांस्कृतिक और सामाजिक स्तर पर महत्वपूर्ण योगदान दिया है। नृत्य-नाटिकाओं के माध्यम से कथक नृत्य ने न केवल अपनी प्रस्तुति की सीमाओं का विस्तार किया है, बल्कि कथा कहने की कला में भी नई ऊंचाइयों को छुआ है।

इस शोध में कथक नृत्य की नृत्य-नाटिकाओं की ऐतिहासिक यात्रा को पुनः देखा गया है। यह देखा गया है कि कैसे विभिन्न कालखंडों में नृत्य-नाटिकाओं का विकास हुआ और उन्होंने कथक की प्रस्तुति शैली को गहराई प्रदान की। नृत्याचार्यों द्वारा प्रस्तुत प्रमुख नृत्य-नाटिकाओं की संरचना, विषय, और प्रस्तुति की तकनीक का विशेष अध्ययन किया गया है ताकि इनके योगदान को बेहतर तरीके से समझा जा सके।

शोध के प्रमुख उद्देश्य इस प्रकार हैं:

1. नृत्य-नाटिका के संदर्भ में कथक नृत्य शैली का ऐतिहासिक पुनरावलोकन करना।

2. प्रमुख कथक नृत्याचार्यों द्वारा सृजित नृत्य-नाटिकाओं का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना।

3. कथक नृत्य के प्रचार-प्रसार में नृत्य-नाटिकाओं के योगदान का विश्लेषण करना।

विभिन्न स्रोतों जैसे शोध आलेख, साक्षात्कार, कथक प्रस्तुतियों के वीडियो और साहित्यिक दस्तावेजों का गहन अध्ययन इस शोध कार्य का आधार है। नृत्य-नाटिकाओं के माध्यम से कथक नृत्य ने न केवल भारत में बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी सांस्कृतिक पहचान को मजबूती दी है।

यह शोध केवल नृत्य की सराहना तक सीमित न होकर, नृत्य-नाटिकाओं के माध्यम से कथक की तकनीकी बारीकियों और उनकी सांस्कृतिक प्रासंगिकता को तार्किक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से समझने का एक गंभीर प्रयास है।

2.3. समीक्षा विश्लेषण

उत्तरा आशा कुरलावाला (1992) के समीक्षा लेख "Illustrating Kathak" में कथक के विकास, तकनीक, और प्रदर्शन के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला गया है। यह लेख सुनील कोठारी की पुस्तक "कथक इंडियन क्लासिकल डांस आर्ट" की समीक्षा के रूप में लिखा गया है, जिसमें कथक के ऐतिहासिक, तकनीकी और सामाजिक आयामों की चर्चा की गई है।

कुरलावाला ने बताया कि कथक, भारत के प्रमुख शास्त्रीय नृत्य रूपों में से एक है, जिसकी उत्पत्ति कथक या कहानी कहने वाले कलाकारों से जुड़ी

है। यह नृत्य प्रारंभ में धार्मिक कथाओं को गाने, नृत्य करने और सुनाने की परंपरा से विकसित हुआ। समय के साथ, कथक ने मुगल दरबारों में अपनी जगह बनाई, जहां इसने फारसी और सेंट्रल एशियाई प्रभावों को आत्मसात किया। वर्तमान में, कथक न केवल बड़े मंचों पर, बल्कि पारंपरिक और अंतरंग प्रस्तुतियों के रूप में भी प्रदर्शन किया जाता है। इसकी विशेषताएं जटिल और तेज गति वाले पैरों की थाप, गोल और सर्पाकार हाथों की हरकतें, और भावपूर्ण कहानी कहने की शैली में निहित हैं। कोठारी ने अपनी पुस्तक में कथक के ऐतिहासिक विकास को प्राचीन ग्रंथों जैसे नाट्यशास्त्र और अन्य साहित्यिक स्रोतों के संदर्भ में वर्णित किया है। उन्होंने 11वीं सदी में घरानों (कथक की शैलियों) के विकास और उनके संरक्षक रहे नवाबों और महाराजाओं की भूमिका पर भी चर्चा की है। पुस्तक में घरानों की परंपराओं और कलाकारों के वंश वृक्ष का भी उल्लेख किया गया है।

इस समीक्षा में बताया गया है कि कोठारी ने कथक की तकनीकी विशेषताओं को तस्वीरों और व्याख्यात्मक पाठ के माध्यम से प्रस्तुत किया है। उन्होंने थाट और स्पिन जैसी तकनीकों को समझाने के लिए प्रसिद्ध कलाकार बिरजू महाराज की तस्वीरों का उपयोग किया है। यह पुस्तक कथक की समकालीन प्रस्तुति और इसके अग्रणी कलाकारों के योगदान को भी उजागर करती है। कुरलावाला ने इस बात पर भी ध्यान दिया कि कोठारी ने कथक और रसलीला के बीच संभावित संबंधों पर चर्चा की है। हालांकि, उन्होंने इस विवादास्पद विषय पर विस्तार से चर्चा करने से बचते हुए इस तथ्य को स्वीकार किया कि दोनों नृत्य रूपों की संगीत और धार्मिक परंपराओं में समानता है। इस समीक्षा में कुरलावाला ने कोठारी की पुस्तक को कथक नृत्य पर एक व्यापक और गहन अध्ययन के रूप में सराहा है। यह पुस्तक कथक के इतिहास, तकनीक, और इसकी वर्तमान स्थिति का एक समग्र

परिचय प्रदान करती है। इसके साथ ही यह उन पाठकों के लिए उपयोगी है जो कथक के बारे में गहरी समझ विकसित करना चाहते हैं।⁷⁰

वॉकर (2004) ने अपने डॉक्टरल शोध में कहा है कि कथक, जो कि उत्तर भारत का शास्त्रीय नृत्य है, अपने जटिल पैर की थाप, तेज चक्कर और सूक्ष्म अभिव्यक्तियों के लिए जाना जाता है। इसे परंपरागत रूप से हिंदू और मुस्लिम दोनों के रूप में, भक्तिमय और मनोरंजनकारी के रूप में देखा गया है। कथक के ऐतिहासिक विवरण में कई विरोधाभास और खाली जगहें हैं। मार्गरेट एडिथ वॉकर का शोध कथक के इतिहास की गहराई से जांच करता है, मिथकों को खारिज करता है और इसके मिश्रित विकास का पता लगाता है। यह शोध कथक के स्वीकृत रेखीय इतिहास को चुनौती देकर शुरू होता है, जिसमें इसके उद्गम को मंदिर नृत्य के रूप में माना गया है, जिसे कथक जाति के बर्दों द्वारा किया जाता था, जो हिंदू महाकाव्यों को कहानी कहने के माध्यम से प्रस्तुत करते थे। यह शोध इस बात पर सवाल उठाता है कि यह कला कैसे मुस्लिम शासन के तहत दरबारी नृत्य में परिवर्तित हुई और 20वीं शताब्दी में एक शास्त्रीय नृत्य के रूप में उभरी। लेखक ने नृवंशविज्ञान, प्रतिमा विज्ञान और पाठ विश्लेषण सहित अंतःविषय तरीकों का उपयोग करते हुए कथक के इतिहास का पुनर्मूल्यांकन किया है।

शोध का पहला भाग पाठीय प्रमाणों की जांच करता है, जिसमें संस्कृत ग्रंथ जैसे नाट्यशास्त्र और अभिनयदर्पण और इंडो-फारसी पांडुलिपियां शामिल हैं। हालांकि ये ग्रंथ नृत्य के संहिताबद्ध सिद्धांत प्रदान करते हैं, लेकिन इनमें

⁷⁰ Coorlawala, Uttara Asha. "Illustrating Kathak." *Dance Chronicle*, vol. 15, no. 1, 1992, pp. 88-93.

कथक का सीधा उल्लेख नहीं मिलता। उपनिवेशीय विवरण और 20वीं सदी की शुरुआती रचनाओं की भी आलोचना की गई है, जो कथक को प्राच्यवाद और राष्ट्रवाद के दृष्टिकोण से दर्शाते हैं। निष्कर्ष बताते हैं कि ऐतिहासिक वर्णन में विसंगतियां हैं, क्योंकि प्रारंभिक विवरण कथक को मुख्य रूप से मुगल दरबारों में महिलाओं द्वारा किया गया नृत्य बताते हैं, जो वंशानुगत कथक परिवारों द्वारा प्रचारित पुरुष प्रधान विवरण से विपरीत है। लेखक सुझाव देते हैं कि कथक के दस्तावेजीकरण का अधिकांश हिस्सा सांस्कृतिक और राजनीतिक एजेंडा द्वारा आकारित किया गया था।

शोध के दूसरे भाग में कथक जाति और नृत्य के विकास में इसकी भूमिका की पड़ताल की गई है। ऐतिहासिक रूप से, कथक जाति के लोग मंदिरों और गाँव के चौकों में कहानी सुनाने वाले के रूप में प्रदर्शन करते थे। मुगल संरक्षकों के अधीन दरबारी नृत्य में परिवर्तन ने कथक में फारसी सौंदर्यशास्त्र को शामिल किया, जिससे यह एक परिष्कृत प्रदर्शन कला में बदल गया। तवायफों के योगदान पर प्रकाश डाला गया है, जिन्होंने कथक को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। ये महिलाएं, जो मुगल दरबार की संस्कृति का केंद्र थीं, उन्होंने कथक में अभिव्यंजक अभिनय और तुमरी संगीत को जोड़ा। उनके महत्वपूर्ण योगदान के बावजूद, 20वीं सदी के विवरणों में तवायफों को ष्टुद्ध कथक को हिंदू परंपराओं के साथ जोड़ने के प्रयासों के तहत हाशिए पर डाल दिया गया।

तीसरा खंड नौटंकी संस्कृति और कथक के इतिहास में घरानों के उदय की जांच करता है। नौटंकी संस्कृति, जो पेशेवर महिला कलाकारों से जुड़ी थी, ने कथक के विकास में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। हालांकि, औपनिवेशिक दृष्टिकोण ने नौटंकी नर्तकियों को नैतिक रूप से भ्रष्ट के रूप में देखा, जिससे कथक की धारणा प्रभावित हुई। इस कलंक ने कथक को

एक "सम्मानजनक" कला रूप के रूप में पुनः स्थापित करने के प्रयासों को प्रेरित किया। 19वीं और 20वीं सदी में घरानों (शैलीगत स्कूलों) का उदय कथक के इतिहास में और अधिक जटिलता जोड़ता है। लखनऊ, जयपुर और बनारस घरानों पर चर्चा की गई है, जो क्षेत्रीय प्रभाव और व्यक्तिगत शैली को दर्शाते हैं। हालांकि, घराना प्रणाली को इसकी विशिष्टता और पदानुक्रम संरचनाओं को बनाए रखने के लिए आलोचना की गई है।

चौथा खंड 20वीं सदी में कथक के पुनरुत्थान पर केंद्रित है, जिसे राष्ट्रवादी आंदोलनों द्वारा प्रेरित किया गया था। कथक को भारत की सांस्कृतिक धरोहर के प्रतीक के रूप में पुनर्परिभाषित किया गया, जिसमें इसके हिंदू मूल पर जोर दिया गया और इसके इस्लामी और दरबारी प्रभावों को कम आंका गया। नृत्य संस्थानों और गैर-वंशानुगत कलाकारों ने इस परिवर्तन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। बिरजू महाराज और सितारा देवी जैसे प्रमुख व्यक्तित्वों के योगदान की भी चर्चा की गई है, जिन्होंने कथक को वैश्विक मंचों पर लोकप्रिय बनाया। इसके अलावा, छोटे सैलून प्रदर्शनों से बड़े कॉन्सर्ट हॉल तक के बदलाव ने नृत्य की सौंदर्यशास्त्र और दर्शकों के साथ बातचीत को काफी हद तक बदल दिया।

शोध इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि कथक एक सांस्कृतिक कोलाज है, जो हिंदू और मुस्लिम परंपराओं, मंदिर और दरबारी संदर्भों, और पुरुष और महिला कलाकारों के बीच सदियों के आदान-प्रदान से आकार लिया गया है। यह कथक के इतिहास की अधिक समावेशी समझ का आह्वान करता है, हाशिए पर रहने वाले समुदायों के योगदान को स्वीकार करता है और संकीर्ण विवरणों को चुनौती देता है। अपने आलोचनात्मक दृष्टिकोण के माध्यम से, यह शोध कथक को एक गतिशील और बहुआयामी कला रूप

के रूप में प्रस्तुत करता है।⁷¹

मार्गरेट वॉकर (2004) के शोध “Kathak Log ya Kathak Nrtya: The Search for a Dance Called Kathak” में कथक के विकास और इतिहास का गहन विश्लेषण किया गया है। यह शोध इस बात पर केंद्रित है कि कथक, जो वर्तमान में एक शास्त्रीय नृत्य के रूप में प्रसिद्ध है, प्राचीन भारतीय मंदिरों से लेकर मुगल दरबारों और आधुनिक मंचों तक कैसे विकसित हुआ। वॉकर ने यह स्पष्ट किया कि कथक का इतिहास केवल एक धर्म विशेष से जुड़ा नहीं है, बल्कि यह एक संकरित कला रूप है, जो हिंदू और मुस्लिम परंपराओं, दरबारी और लोक कलाओं, और सांस्कृतिक आदान-प्रदान का परिणाम है।

वॉकर ने यह समझाने के लिए प्राचीन ग्रंथों जैसे नाट्यशास्त्र और संगीतरत्नाकर का संदर्भ दिया है कि कथक का सीधा संबंध मंदिर नृत्यों से जोड़ने का दावा कमजोर है। उन्होंने बताया कि इन ग्रंथों में वर्णित नृत्य शैलियां कथक के वर्तमान स्वरूप से काफी भिन्न हैं। इसके अलावा, उन्होंने इस पर भी प्रकाश डाला कि कथक का नाम संस्कृत शब्द "कथा" से लिया गया है, जिसका अर्थ कहानी कहना है। इस प्रकार कथक की उत्पत्ति एक कहानी कहने की परंपरा के रूप में मानी जा सकती है, लेकिन इसे एक धार्मिक नृत्य के रूप में प्रस्तुत करने का दावा ऐतिहासिक साक्ष्यों से समर्थित नहीं है।

शोध में यह भी बताया गया कि मुगल शासन के दौरान कथक में फारसी

⁷¹ Walker, M. E. *Kathak Dance: Critical History*. Doctoral dissertation, 2004, https://www.academia.edu/33750153/Kathak_Dance_A_Critical_History.

और मध्य एशियाई तत्वों का समावेश हुआ। दरबारी नृत्य के रूप में कथक को संरक्षक प्राप्त हुए, जिससे यह एक जटिल और भव्य नृत्य शैली के रूप में विकसित हुआ। मुगल दरबारों में कथक ने न केवल अपनी तकनीकी जटिलता में वृद्धि की, बल्कि इसमें संगीत, कविता, और भावनात्मक अभिव्यक्ति का भी समावेश हुआ। वॉकर ने यह भी विश्लेषण किया कि 20वीं सदी में कथक का पुनरुद्धार भारतीय राष्ट्रवाद से प्रभावित था। इस दौरान कथक को एक शास्त्रीय नृत्य के रूप में मान्यता देने और इसे भारतीय सांस्कृतिक धरोहर के प्रतीक के रूप में प्रस्तुत करने के लिए इसे हिंदू मंदिर परंपराओं से जोड़ा गया। यह प्रक्रिया कई बार मुस्लिम दरबारी योगदानों और महिला कलाकारों, जैसे तवायफों, के योगदानों को नजरअंदाज करती है।

वॉकर का शोध यह तर्क प्रस्तुत करता है कि कथक को समझने के लिए इसके समग्र इतिहास, जिसमें धार्मिक, सामाजिक, और सांस्कृतिक प्रभाव शामिल हैं, पर ध्यान देना आवश्यक है। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि कथक का वर्तमान स्वरूप एक दीर्घकालिक सांस्कृतिक आदान-प्रदान और विकास का परिणाम है, जिसे केवल प्राचीन भारतीय परंपराओं से जोड़कर देखना सही नहीं होगा। इस प्रकार, वॉकर का यह शोध कथक के इतिहास और उसकी पहचान पर एक व्यापक दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है, जो न केवल इसकी जटिलता को दर्शाता है, बल्कि इसके विभिन्न आयामों को भी उजागर करता है।⁷²

⁷² Walker, M. "Kathak Log ya Kathak Nrtya: The Search for a Dance Called Kathak." *Scribd*, n.d., <https://www.scribd.com/document/788868392/Kathak-Log-ya-Kathak-Nrtya-The-Search-fo>.

चक्रवर्ती (2006) अपने अध्ययन **Dancing into Modernity: Multiple Narratives of India's Kathak Dance** में कथक नृत्य के आधुनिक युग में बदलते स्वरूप का गहन विश्लेषण प्रस्तुत करती हैं। वह आधुनिकता और सांस्कृतिक वैश्वीकरण के संदर्भ में कथक के विकास को समझने का प्रयास करती हैं। यह अध्ययन तीन प्रमुख हिस्सों में विभाजित है। कथक का नृत्य और नौच के बीच का संबंध, राष्ट्रीय वर्चस्व और नए संरक्षक और नई सौंदर्यशास्त्र की ओर बढ़ते कदम।

चक्रवर्ती बताती हैं कि ब्रिटिश उपनिवेशवाद के दौरान कथक को जौच के रूप में देखा गया, जो मुख्य रूप से तवायफों और दरबार के कलाकारों द्वारा किया जाता था। 19वीं सदी में, सामाजिक सुधार आंदोलनों ने इस कला को "नैतिकता" और "पवित्रता" के नाम पर कलंकित कर दिया। हालांकि, 20वीं सदी में स्वतंत्रता आंदोलन के दौरान, कथक को एक "राष्ट्रीय" और "राष्ट्रीय" कला रूप के रूप में पुनः परिभाषित किया गया। इसे हिंदू भक्ति परंपराओं से जोड़ा गया और मुगल प्रभावों को दरकिनार कर दिया गया। वह यह भी बताती हैं कि स्वतंत्रता के बाद, सरकार ने कथक को एक राष्ट्रीय सांस्कृतिक प्रतीक के रूप में बढ़ावा दिया। दिल्ली के कथक केंद्र जैसे संस्थानों ने एकीकृत मानक स्थापित किए, लेकिन इससे विभिन्न घरानों और व्यक्तिगत शैलियों की विविधता प्रभावित हुई। लखनऊ घराना विशेष रूप से केंद्र में रहा, और बिरजू महाराज जैसे कलाकारों ने कथक के मानक रूप को परिभाषित किया।

चक्रवर्ती का शोध यह भी दर्शाता है कि वैश्वीकरण और आर्थिक उदारीकरण ने कथक के प्रदर्शन और संरचना में महत्वपूर्ण परिवर्तन किए। नए मीडिया जैसे केबल टीवी, सैटेलाइट चैनल और बॉलीवुड ने कथक को एक नई

शैलीगत पहचान दी। कथक अब केवल शास्त्रीय नृत्य नहीं रह गया, बल्कि एक वैश्विक और समकालीन नृत्य शैली के रूप में उभरा, जिसमें फ्लेमिंगो और टैप डांस जैसे पश्चिमी तत्व शामिल हुए। अंततः, पल्लबी चक्रवर्ती का यह अध्ययन कथक को एक गतिशील कला रूप के रूप में प्रस्तुत करता है, जो परंपरा और आधुनिकता के बीच संतुलन स्थापित करता है। वह तर्क देती हैं कि कथक का यह संकरण इसे न केवल भारतीय बल्कि वैश्विक संदर्भ में भी प्रासंगिक बनाता है।⁷³

रंगनाथन और लोकेट (2009) अपने लेख “**Teaching Kathak in France: The Interdisciplinary 'Milieu'**” में फ्रांस में कथक जैसे पारंपरिक भारतीय शास्त्रीय नृत्य को सिखाने से जुड़े चुनौतियों और रणनीतियों की चर्चा करते हैं। वे "मिलियू" की अवधारणा पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जो एक ऐसा अंतर-विषयक स्थान है जहां भारतीय और फ्रांसीसी सांस्कृतिक ढांचे आपस में जुड़ते हैं। यह मिलियू शिक्षक और छात्रों के बीच एक गतिशील आदान-प्रदान को संभव बनाता है, जो कथक के पारंपरिक कोड्स और फ्रांसीसी छात्रों की सांस्कृतिक आदतों के बीच सेतु का काम करता है।

लेखक फ्रांस में कथक सिखाने की तीन चरणों वाली प्रक्रिया को रेखांकित करते हैं—आत्मसात करना, कोडिंग करना, और संस्थागतकरण। पहले चरण में, छात्रों को अपने परिचित सांस्कृतिक संदर्भों के माध्यम से कथक से

⁷³ Chakravorty, P. "Dancing Into Modernity: Multiple Narratives Of India's Kathak Dance." *Dance Research Journal*, vol. 38, no. 1, 2006, pp. 115-136, <https://www.cambridge.org/core/journals/dance-research-journal/article/abs/dancing-into-modernity-multiple-narratives-of-indias-kathak-dance/6F027A8D6EA0CFB2B3146E9662DCDA7A>.

जुड़ने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है, जैसे कि प्पानी भरने जैसी दैनिक गतिविधियों का अभिनय करना। कोडिंग चरण में, शिक्षक कथक के पारंपरिक कोड्स जैसे विशेष मुद्राएं, तालबद्ध हरकतें, और चेहरे के भाव पेश करते हैं। अंत में, संस्थागतकरण के चरण में, इन तत्वों को एक संरचित शिक्षण पद्धति के माध्यम से औपचारिक रूप दिया जाता है, जिसमें कथक की सांस्कृतिक अखंडता को बनाए रखते हुए इसे विदेशी शैक्षणिक संदर्भ में अनुकूलित किया जाता है।

रंगनाथन और लोकेट कथक को अंतर-विषयक ढांचे में सिखाने की सांस्कृतिक चुनौतियों पर भी चर्चा करते हैं। वे कथक की पारंपरिक आत्मा को कमजोर करने के जोखिम को स्वीकार करते हैं, लेकिन इस बात पर जोर देते हैं कि प्रभावी शिक्षाशास्त्र की आवश्यकता है जो इसकी प्रामाणिकता को बनाए रखे और इसे विविध छात्रों के लिए सुलभ बनाए। वे तर्क देते हैं कि यह अंतर-विषयक मिलियू एक अंतर-सांस्कृतिक संवाद को बढ़ावा देता है, यह सुनिश्चित करते हुए कि कथक के प्रतीकात्मक और तकनीकी पहलू संरक्षित रहें और इसे वैश्विक संदर्भ में अनुकूलित किया जा सके। उनका अध्ययन इस बात को रेखांकित करता है कि कथक की परंपराओं का सम्मान करते हुए इसे एक नए सांस्कृतिक वातावरण में विकसित करने के लिए एक लचीली और गतिशील शिक्षण पद्धति कितनी महत्वपूर्ण है। इससे यह नृत्य शैली अंतरराष्ट्रीय दर्शकों के लिए प्रासंगिक और सुलभ बनती है।⁷⁴

⁷⁴ Ranganathan, M., and Loquet, M. "Teaching Kathak in France: The Interdisciplinary 'Milieu'." *Dance Research Journal*, vol. 41, no. 1, 2009, pp. 69-81, <https://muse.jhu.edu/article/263296>.

मोरेली (2010) अपने शोध **Intergenerational Adaptation in North Indian Kathak Dance** में उत्तर भारतीय कथक नृत्य की तीन पीढ़ियों के गुरुओं और शिष्यों के बीच शिक्षण और नृत्य तकनीकों में हुए बदलावों का गहन अध्ययन करती हैं। वह गुरु-शिष्य परंपरा के संदर्भ में कथक की शिक्षण शैली और इसके सांस्कृतिक और सामाजिक अनुकूलन की प्रक्रियाओं पर प्रकाश डालती हैं।

मोरेली इस बात की पड़ताल करती हैं कि 20वीं सदी की शुरुआत में तवायफ संस्कृति के पतन और स्वतंत्रता आंदोलन के उदय से लेकर कथक के 20वीं सदी के उत्तरार्ध में उत्तरी अमेरिका में स्थानांतरण तक, सामाजिक और ऐतिहासिक परिवर्तनों ने कथक की शैलीगत विकास को कैसे प्रभावित किया। वह दिखाती हैं कि कथक के बुनियादी तत्व भी समय के साथ बदले हैं और यह लचीलापन गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से इस एकल प्रदर्शन परंपरा के शिक्षण का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रहा है।

इस अध्ययन में यह भी बताया गया है कि स्वतंत्रता के बाद कथक के शिक्षण में संस्थागत बदलाव हुए। पारंपरिक गुरु-शिष्य संबंधों की जगह औपचारिक शिक्षण संस्थानों ने ले ली, जहां छात्रों और शिक्षकों के बीच संबंध सीमित हो गए। इसके साथ ही, गुरुओं ने छात्रों की सामाजिक स्थिति, लिंग और व्यक्तिगत क्षमताओं के अनुसार नृत्य शिक्षण में बदलाव किए।

मोरेली का अध्ययन यह भी रेखांकित करता है कि कथक के शिक्षण और प्रदर्शन में अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर विस्तार ने इसके शैलीगत और तकनीकी पहलुओं को कैसे प्रभावित किया। उदाहरण के लिए, पंडित चित्रेश दास जैसे गुरुओं ने पश्चिम में कथक सिखाने के दौरान शारीरिक अनुशासन और गति पर जोर दिया। हालांकि, उन्होंने अपने छात्रों की भौतिक और सांस्कृ

तिक जरूरतों के अनुसार शैली में लचीलापन भी जोड़ा। अंततः, मोरेली का शोध कथक को एक गतिशील कला रूप के रूप में प्रस्तुत करता है, जो ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और व्यक्तिगत प्रभावों के प्रति संवेदनशील है। यह अध्ययन दिखाता है कि कथक ने न केवल अपनी पारंपरिक जड़ों को बनाए रखा है, बल्कि बदलते समय और स्थान के अनुसार खुद को पुनर्परिभाषित भी किया है।⁷⁵

वॉकर (2014) अपनी महत्वपूर्ण कृति इंडियाज कथक डांस इन हिस्टोरिकल पर्सपेक्टिव में कथक की संकरित उत्पत्ति का गहन विश्लेषण करती हैं, जो पारंपरिक कथा को चुनौती देती है जो इसे केवल हिंदू मंदिर परंपराओं से जोड़ती है। वह कथक के उस मिश्रित इतिहास को उजागर करती हैं जो हिंदू और मुस्लिम प्रभावों से निर्मित हुआ है और इसे एक भक्तिपूर्ण और मनोरंजनात्मक कला रूप के रूप में विकसित होते हुए दिखाती हैं। वॉकर ग्रामीण थिएटर, लयबद्ध परंपराओं और तवायफों की प्रदर्शन कलाओं की भूमिका पर जोर देती हैं, जिन्होंने कथक की पहचान को आकार दिया। उनके विश्लेषण से यह समझने में मदद मिलती है कि उपनिवेशवाद और राष्ट्रवाद ने कथक को कैसे पुनर्परिभाषित किया, इसे भारत की सांस्कृतिक धरोहर के साथ जोड़ा, जबकि इसके इस्लामी और दरबारी योगदानों को हाशिये पर रख दिया।⁷⁶

⁷⁵ Morelli, S. "Intergenerational Adaptation in North Indian Kathak Dance." *Anthropological Notebooks*, vol. 16, no. 3, 2010, pp. 77-91, https://www.academia.edu/38018639/Intergenerational_Adaptation_in_North_Indian_Kathak_Dance.

⁷⁶ Walker, M. E. *India's Kathak Dance in Historical Perspective*. Taylor & Francis, 2014.

स्कीबा (2016) के शोध “**A Heroine in the Pangs of Separation or a Soul Longing for the Divine?**” में कथक नृत्य की थुमरी परंपरा के पाठ और प्रदर्शन में परिवर्तन की गहन जांच की गई है। यह अध्ययन कथक के ऐतिहासिक संदर्भों और सामाजिक-राजनीतिक परिवर्तनों पर आधारित है, जो इस नृत्य रूप को धार्मिक और सांस्कृतिक संदर्भों से जोड़ता है। शोध में बताया गया है कि कथक नृत्य, जो मूल रूप से हिंदू और मुस्लिम सांस्कृतिक प्रभावों से समृद्ध है, अब मुख्य रूप से संस्कृत सौंदर्य सिद्धांतों पर आधारित हिंदू कथाओं को दर्शाता है। इसमें विशेष रूप से भगवान कृष्ण और गोपियों के रास-लीला के दृश्य शामिल हैं, जिन्हें नृत्य के विभिन्न पहलुओं में प्रदर्शित किया जाता है। थुमरी, जो कथक की अभिव्यक्ति का एक प्रमुख हिस्सा है, में भक्ति और श्रृंगार रस के बीच एक जटिल संबंध देखने को मिलता है।

थुमरी के प्रदर्शन में देखा गया है कि 20वीं सदी के मध्य से इसकी सामग्री को षुद्ध करने और इसे अधिक भक्ति-आधारित बनाने के प्रयास किए गए। थुमरी, जो पहले दरबार और तवायफ संस्कृति का हिस्सा थी, अब एक क्लासिकल नृत्य रूप के रूप में पुनः परिभाषित की गई है। यह परिवर्तन कथक की ष्वाध्यात्मिकता को बढ़ाने के लिए किया गया, ताकि यह भारतीय सांस्कृतिक धरोहर के प्रतीक के रूप में उभर सके। कातर्जिना स्कीबा ने तवायफों और उनके योगदान को भी इस प्रक्रिया में शामिल किया है। उनका तर्क है कि तवायफों ने न केवल थुमरी को समृद्ध किया, बल्कि कथक नृत्य को भी नए आयाम दिए। हालांकि, औपनिवेशिक युग और "एंटी-नौच" आंदोलनों ने तवायफों की भूमिका को सीमित कर दिया। इस प्रक्रिया में, कथक को "क्लासिकल" रूप देने के लिए उसकी सामग्री और प्रस्तुति को संशोधित किया गया।

शोध यह भी रेखांकित करता है कि आधुनिक कथक कलाकारों ने पुराने प्रदर्शन तत्वों जैसे कि "सीटेड अभिनय" को छोड़ दिया है और नृत्य को अधिक गतिशील और व्यापक दर्शकों के अनुकूल बनाया है। इसके अलावा, संगीत और नृत्य के पारंपरिक मेल को बदलकर अधिक संरचित और पेशेवर बनाया गया है। इस अध्ययन में बताया गया है कि कथक का पुनरुद्धार न केवल इसकी परंपराओं का पुनर्निर्माण है, बल्कि यह एक नई सांस्कृतिक पहचान की रचना भी है।

यह शोध कथक की भक्ति और श्रृंगार रस की जटिलताओं को समझने और उसकी ऐतिहासिक गहराई का विश्लेषण करने में महत्वपूर्ण योगदान देता है। कातर्जिना स्कीबा का यह काम कथक नृत्य की बहुआयामी प्रकृति को उजागर करता है और इसे भारतीय सांस्कृतिक धरोहर का एक अभिन्न हिस्सा मानता है।⁷⁷

उपाध्याय और पंत (2017) अपने शोध “तबला एवं कथक नृत्य के अंतर्संबंधों का विकास एक विश्लेषणात्मक अध्ययन” में कथक नृत्य और तबला के बीच गहरे संबंधों और उनके ऐतिहासिक और कलात्मक विकास का विस्तृत विश्लेषण प्रस्तुत करते हैं। यह अध्ययन बताता है कि कैसे ये दोनों शास्त्रीय कला रूप एक-दूसरे के साथ सह-अस्तित्व में रहते हुए विकसित हुए और एक-दूसरे को समृद्ध किया। कथक की उत्पत्ति मंदिरों में भक्ति संगीत और कथा कहने की परंपरा से हुई थी, लेकिन समय के साथ यह कला मुगल दरबारों में स्थानांतरित हुई। इस परिवर्तन ने कथक को एक मनोरंजन के

⁷⁷ Skiba, K. "A Heroine in the Pangs of Separation or a Soul Longing for the Divine? Re-appropriated Voices in the Poetry of Kathak Dance Repertoire." *The Polish Journal of the Arts and Culture*, vol. 4, 2016, pp. 47-78, <https://doi.org/10.4467/24506249PJ.16.010.6241>.

रूप में एक अलग पहचान दी और इसकी संरचना में अधिक परिष्कार और जटिलता आई। इसी काल में पखावज का परिष्कृत रूप तबला अस्तित्व में आया, जो कथक की जटिल लयबद्ध संरचनाओं के लिए उपयुक्त साबित हुआ। तबला और कथक के संगम ने इन दोनों कला रूपों के बीच एक गहरा संबंध स्थापित किया। कथक और तबला एक-दूसरे के पूरक हैं। कथक की तालबद्धता, जिसमें तिहाई, परन, और गति जैसे तत्व शामिल हैं, तबला के साथ सहज रूप से मेल खाती है। तबला ने कथक के इन जटिल ताल संरचनाओं को सहजता से प्रस्तुत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। तबला की विभिन्न बंदिशें, जैसे कायदा, रेला, तुकड़ा और परन, कथक के मूवमेंट्स और भाव-भंगिमाओं के साथ पूरी तरह से तालमेल बनाती हैं। यह संगति कथक और तबला को एक ऐसा साझेदार बनाती है जो दर्शकों के सामने एक संपूर्ण प्रदर्शन प्रस्तुत करता है।

अध्ययन में लखनऊ और बनारस घराने जैसे विभिन्न घरानों के योगदान पर भी चर्चा की गई है। लखनऊ घराने की शैली तबला की मधुरता और कथक की भावनात्मक अभिव्यक्ति का अद्भुत संयोजन प्रस्तुत करती है। वहीं बनारस घराना अपनी जटिलता और तकनीकी कौशल के लिए जाना जाता है, जो कथक के परन और तत्कार के साथ तालमेल स्थापित करता है। यह घरानों की विविधता कथक और तबला दोनों की शैलीगत विशेषताओं को और भी समृद्ध बनाती है।

कथक और तबला का संबंध केवल संगीत और नृत्य तक सीमित नहीं है, बल्कि यह एक गहन सांस्कृतिक संवाद का प्रतीक भी है। कथक के नर्तक और तबला वादक के बीच का सामंजस्य दोनों की रचनात्मकता और तकनीकी क्षमता का प्रतिबिंब है। इस सामंजस्य ने कथक के शुद्ध नृत्य और भावनात्मक अभिनय दोनों को समृद्ध किया है। आधुनिक समय में कथक

और तबला दोनों ने अपनी पारंपरिक जड़ों को बनाए रखते हुए नए संदर्भों में खुद को अनुकूलित किया है। तबला की लयबद्धता और कथक के तकनीकी कौशल का मेल आज भी दर्शकों को मंत्रमुग्ध करता है। दोनों कला रूपों ने विभिन्न वैश्विक मंचों पर भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व करते हुए अपनी पहचान बनाई है।

यह अध्ययन दर्शाता है कि कथक और तबला का सह-विकास न केवल उनकी पारंपरिक जड़ों को संरक्षित करता है, बल्कि यह उनके सामंजस्यपूर्ण संबंधों को भी रेखांकित करता है। इन दोनों कला रूपों का गहरा संबंध भारतीय शास्त्रीय कला की गहराई और विविधता को दर्शाता है। यह अध्ययन इस बात पर जोर देता है कि कथक और तबला का यह संबंध भारतीय सांस्कृतिक धरोहर का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसे संजोकर रखना आवश्यक है। कथक और तबला की यह परस्पर निर्भरता इन दोनों कला रूपों के सतत विकास को एक समृद्ध सांस्कृतिक विरासत के रूप में प्रस्तुत करती है।⁷⁸

अरोरा (2017) अपने अध्ययन कथक एस एम्प्लॉयड बाय संजय लीला भंसाली इन थ्री की वर्क्स में यह विश्लेषण करती हैं कि संजय लीला भंसाली ने अपने फिल्मों हम दिल दे चुके सनम (1999), देवदास (2002), और बाजीराव मस्तानी (2015) में कथक नृत्य शैली को कैसे शामिल किया। अरोरा इस बात की पड़ताल करती हैं कि भंसाली कथक का उपयोग कहानी कहने को बढ़ाने के लिए कैसे करते हैं, जिसमें भक्ति, प्रेम, और

⁷⁸ Upadhyay, D., and Pant, M. C. "Development of the Interrelations of Tabla and Kathak Dance: An Analytical Study (With Special Reference to the Compositions of Tabla and Kathak Dance)." *International Journal of Research - Granthaalayah*, vol. 5, no. 4, 2017, pp. 339-351, <https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v5.i4.2017.1828>.

पहचान जैसे विषयों के साथ-साथ वर्ग, स्त्रीत्व और परंपरा जैसे सामाजिक-राजनीतिक मुद्दों को भी शामिल किया गया है। अध्ययन में बॉलीवुड द्वारा शास्त्रीय नृत्य शैलियों के अनुकूलन पर चर्चा की गई है, जो पारंपरिक तत्वों को सिनेमाई सौंदर्यशास्त्र के साथ मिश्रित करता है। हालांकि इस प्रकार के समायोजन पर प्रामाणिकता को कमजोर करने के लिए आलोचना की जाती है, अरोरा यह स्वीकार करती हैं कि यह सांस्कृतिक संरक्षण और पुनर्व्याख्या के लिए एक मंच भी प्रदान करता है। कथक के ऐतिहासिक विकास को, जो मंदिरों की धार्मिक परंपराओं से शुरू होकर मुगल संरक्षण के तहत परिष्कृत हुआ, समझने के लिए इसका पृष्ठभूमि के रूप में उपयोग किया गया है। भंसाली के कार्यों में इस विरासत का प्रतिबिंब देखा जाता है, जो उनकी फिल्मों में कथक के भक्ति और कथात्मक पहलुओं को शामिल करता है।

अरोरा भंसाली की तीन प्रमुख फिल्मों के प्रदर्शन का विश्लेषण करती हैं। हम दिल दे चुके सनम के गीत निम्बूड़ा निम्बूड़ा में, कथक का उपयोग रोमांटिक तनाव को दर्शाने के लिए किया गया है, जो तालबद्ध पैर की थाप और गीतात्मक कोरियोग्राफी को मिलाकर अनकहे भावनाओं को व्यक्त करता है। देवदास के मार डाला में, जिसे माधुरी दीक्षित ने प्रस्तुत किया, कोरियोग्राफी एक तवायफ की भावनात्मक उथल-पुथल को उजागर करती है और कथक की अभिव्यंजक कहानी कहने की क्षमता को दर्शाती है। अंत में, बाजीराव मस्तानी के मोहे रंग दो लाल में, दीपिका पादुकोण का प्रदर्शन कथक की सुंदर और काव्यात्मक हरकतों के माध्यम से भक्ति और प्रेम के तत्वों को जोड़ता है।

अरोरा इस निष्कर्ष पर पहुंचती हैं कि भंसाली का दृष्टिकोण कथक की पारंपरिक जड़ों और आधुनिक सिनेमाई कहानी कहने के बीच की खाई को

पाटता है। उनकी फिल्मों में सावधानीपूर्वक तैयार किए गए "शुद्ध" नृत्य खंडों के माध्यम से कथक की प्रामाणिकता संरक्षित की गई है, जो इस शास्त्रीय कला रूप की समकालीन सिनेमा में अनुकूलता और स्थायी प्रासंगिकता को दर्शाता है। अरोरा का विश्लेषण स्क्रीन पर कथक के प्रतिनिधित्व में परंपरा और नवाचार के बीच संतुलन बनाए रखने के महत्व को रेखांकित करता है।⁷⁹

Satsik (2017), Performing the Sacred in Kathak Dance, दस्तावेज कथक नृत्य के पवित्र और कलात्मक तत्वों के गहरे संबंध को उजागर करता है। यह नृत्य की यात्रा को मंदिर परंपराओं से लेकर आधुनिक वैश्विक मंचों तक विस्तार से दर्शाता है। दस्तावेज बताता है कि कथक की उत्पत्ति मंदिरों में हुई थी, जहां इसे पौराणिक कथाओं और धार्मिक महाकाव्यों को देवी-देवताओं के समर्पण के रूप में प्रस्तुत किया जाता था। यह पवित्र संबंध तालबद्ध पैटर्न (नृत्त), भावनात्मक कहानी कहने (नृत्य), और आध्यात्मिक मुद्राओं (मुद्राएं) के माध्यम से व्यक्त किया गया, जिसने कलाकार और ईश्वर के बीच गहरा जुड़ाव स्थापित किया।

कथक की यात्रा में एक महत्वपूर्ण मोड़ तब आया जब यह मंदिरों से मुगल दरबारों तक पहुंचा। इस प्रक्रिया में, कथक ने फारसी और दरबारी प्रभावों को आत्मसात किया और एक मनोरंजन के रूप में विकसित हुआ। हालांकि, इसकी पवित्रता और भक्ति भाव संरक्षित रहे। इसकी संरचना ने हमेशा इसके धार्मिक और आध्यात्मिक मूल्यों को प्रतिबिंबित किया, भले ही यह दरबारी

⁷⁹ Arora, K. "Kathak: As Employed by Sanjay Leela Bhansali in Three Key Works." *ResearchGate*, 2017, https://www.researchgate.net/publication/321320176_Kathak_As_Employed_by_Sanjay_Leela_Bhansali_in_Three_Key_Works.

सौंदर्यशास्त्र के अनुकूल हो गया हो। आधुनिक समय में, कथक कलाकार पारंपरिक तत्वों को नवीन तकनीकों के साथ जोड़कर इसके आध्यात्मिक पहलुओं को बनाए रखते हैं। इस समकालीन दृष्टिकोण ने इसे विभिन्न दर्शकों के लिए आकर्षक और प्रासंगिक बनाए रखा है। दस्तावेज प्रदर्शन स्थलों के बदलावकृमंदिरों से दरबारों और बाद में कंसर्ट हॉल और वैश्विक मंचों तककृके प्रभाव पर भी चर्चा करता है, यह बताते हुए कि इन परिवर्तनों ने कथक के पवित्र संबंधों को कैसे प्रभावित किया है।

अंततः, **Performing the Sacred in Kathak Dance** कथक को एक जीवंत और बहुआयामी कला रूप के रूप में प्रस्तुत करता है, जो इसके पवित्र और कलात्मक पहलुओं के बीच संतुलन स्थापित करता है। यह नृत्य के उस अद्वितीय गुण पर जोर देता है, जो बदलते संदर्भों के बावजूद इसकी आध्यात्मिक पहचान को बनाए रखने में सक्षम है। यह दस्तावेज कथक को एक पवित्र प्रदर्शन परंपरा के रूप में उसके सांस्कृतिक और ऐतिहासिक महत्व के साथ प्रासंगिक बनाए रखने की आवश्यकता को रेखांकित करता है।⁸⁰

स्वरूपा उन्नी (2018) अपने लेख “Shifting Kathak ‘His’tory to ‘Her’story” में पल्लवी चक्रवर्ती के योगदान को उजागर करती हैं, जिन्होंने कथक को एक नारीवादी और सामाजिक-राजनीतिक दृष्टिकोण से देखा। पल्लवी, जो कथक नृत्यांगना, नृविज्ञान विशेषज्ञ और लेखिका हैं, कथक के इतिहास में महिलाओं की अनदेखी आवाजों पर ध्यान केंद्रित करती हैं,

⁸⁰ Stasik, D., editor. *Performing the Sacred in Kathak Dance*. 2017.

विशेष रूप से तवायफों और भाईजी के योगदान पर। उनकी पुस्तक *Bells of Change: Kathak Dance Women and Modernity in India* कथक की जड़ों को कोलकाता की तवायफ परंपरा से जोड़ती है और तुमरी और गजलों में उनके प्रभाव को रेखांकित करती है। पल्लवी की कथक यात्रा उनके गुरु वंदना सेन के मार्गदर्शन में शुरू हुई और हिंदुस्तानी संगीत व पाकीजा और मुगल-ए-आजम जैसी फिल्मों के प्रभाव से प्रेरित हुई। उन्होंने अपने प्रदर्शन और समकालीन दर्शकों के बीच असामंजस्य को महसूस किया, जिससे उन्होंने कथक के पुरुष-प्रधान और पितृसत्तात्मक ढांचे पर सवाल उठाया, जो अक्सर घरानों से जुड़ा होता है। उन्होंने तवायफों और गौहर जान जैसी महिला कलाकारों के इतिहास का अध्ययन किया, जिन्होंने कथक परंपराओं को संरक्षित और प्रचारित किया। उनके कार्य का उद्देश्य इन अनदेखे योगदानकर्ताओं को आवाज देना और पारंपरिक कथाओं को चुनौती देना है।

अपनी नृत्य संस्था *Courtyard Dancers* के माध्यम से, पल्लवी कथक को पुनर्संदर्भित करती हैं और इसके काव्यात्मक और भावनात्मक पहलुओं को सामाजिक-राजनीतिक विषयों में जोड़ती हैं। उनके प्रोजेक्ट्स जैसे *Asunder* (भारत-पाकिस्तान विभाजन पर आधारित), *Mahatma is Fasting* (गुजरात दंगों पर आधारित), और *Find Metiabruz* (नवाब वाजिद अली शाह के निर्वासन पर आधारित) उनके अकादमिक शोध और रचनात्मक अभिव्यक्ति को जोड़ते हैं। उनकी पुस्तक *This is How We Dance Now* भारतीय डांस रियलिटी शो और उनकी सांस्कृतिक प्रासंगिकता का नृवंशीय विश्लेषण प्रस्तुत करती है।

Courtyard Dancer कोलकाता में समुदाय के लिए आउटरीच कार्यक्रम भी

चलाती है, जिससे वंचित समूहों को कथक सीखने और प्रदर्शन करने के अवसर मिलते हैं। 120 Square Feet जैसे प्रोजेक्ट ने विभिन्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमियों के नर्तकों को एक साथ लाकर एक सकारात्मक सामुदायिक वातावरण बनाया। पल्लवी का मानना है कि प्रतिभा केवल विशेषाधिकार प्राप्त समुदायों तक सीमित नहीं है और वह समावेशी अवसरों के माध्यम से छुपी हुई क्षमताओं को उजागर करने की वकालत करती हैं। उनका कार्य न केवल व्यक्तिगत जीवन को बदलता है, बल्कि कथक की सांस्कृतिक कहानी को भी बदलता है, यह दर्शाता है कि कथक समाज में बदलाव लाने की क्षमता रखता है।⁸¹

जयसवाल और उपाध्याय (2023) ने अपने शोध “The Banaras Gharana of Kathak Dance: A Study from the Past to Present” में बनारस घराने के ऐतिहासिक और वर्तमान परिप्रेक्ष्य का गहन विश्लेषण किया है। यह अध्ययन बनारस घराने की वंशावली, इसकी विशिष्ट शैली और कथक नृत्य के क्षेत्र में इसके योगदान पर केंद्रित है। शोध में बताया गया है कि "घराना" शब्द संस्कृत के "गृह" से उत्पन्न हुआ है, जिसका अर्थ है एक विशेष शैली या परंपरा। बनारस घराने की स्थापना की कहानी जनकी प्रसाद और पंडित सुखदेव महाराज के नामों से जुड़ी है। जनकी प्रसाद ने बनारस में कथक नृत्य सिखाने और विकसित करने का कार्य किया, जबकि सुखदेव महाराज ने इस घराने को भक्ति रस के साथ जोड़ा। उनके द्वारा शिव तांडव, राम परन और दुर्गा परन जैसे अनेक भक्ति-आधारित परन रचे गए, जो आज भी कथक प्रदर्शन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

⁸¹ Unni, S. *Shifting Kathak 'His'tory to 'Her'story*. NatyaLoka, 2018.

बनारस घराना कथक नृत्य में अपने अद्वितीय भक्ति रस और साहित्यिक परनों के लिए जाना जाता है। इसकी शैली में जटिल तालबद्ध पैटर्न और शुद्ध नृत्य तकनीक पर जोर दिया गया है। यह घराना अपने साहित्यिक योगदान और शास्त्रीय तालों के अद्वितीय संयोजन के लिए भी प्रसिद्ध है। बनारस घराने की नृत्य शैली में अभिव्यक्ति और लय का उत्कृष्ट सामंजस्य देखने को मिलता है। पंडित सुखदेव महाराज ने अपने बच्चों, खासकर सितारा देवी और गोपी कृष्ण जैसे कलाकारों को नृत्य सिखाया। सितारा देवी ने कथक को एक अंतरराष्ट्रीय मंच पर पहचान दिलाई और उन्हें कथक क्वीन कहा गया। उन्होंने न केवल नृत्य को समृद्ध किया बल्कि इसे फिल्मों में भी एक नई पहचान दी। गोपी कृष्ण ने कथक और बॉलीवुड नृत्य का अद्वितीय मिश्रण प्रस्तुत किया, जिससे यह कला रूप आधुनिक दर्शकों के बीच लोकप्रिय हुआ।

बनारस घराने के वर्तमान कलाकार, जैसे पंडित मटाप्रसाद मिश्रा, पंडित रविशंकर मिश्रा और विशाल कृष्ण, इस परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं। ये कलाकार न केवल भारत में बल्कि अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भी कथक को प्रस्तुत कर रहे हैं। इनका उद्देश्य न केवल घराने की परंपराओं को संरक्षित करना है, बल्कि इसे नई तकनीकों और वैश्विक दर्शकों के लिए प्रासंगिक बनाना भी है। यह शोध बनारस घराने के कथक नृत्य को भारत की सांस्कृतिक धरोहर का एक महत्वपूर्ण हिस्सा मानता है। यह दिखाता है कि कैसे बनारस घराने ने भक्ति और कला का समागम करके कथक को समृद्ध किया है। विदुषी जयसवाल और डॉ. रंजना उपाध्याय का यह अध्ययन घराने की परंपरा, इसके कलाकारों के योगदान और इसकी निरंतर प्रासंगिकता पर प्रकाश डालता है। यह शोध बनारस घराने को एक गतिशील और बहुआयामी कला परंपरा के रूप में प्रस्तुत करता है, जो भारतीय सांस्कृतिक और

कलात्मक विरासत का एक अभिन्न हिस्सा है।⁸²

शर्मा और मक्कर (2024) के अनुसार, कथक, भारत का एक प्रमुख शास्त्रीय नृत्य, अपनी जटिल चालों, भावपूर्ण इशारों और अद्वितीय कहानी कहने की शैली के लिए प्रसिद्ध है। इसकी उत्पत्ति प्राचीन भारतीय मंदिरों में हुई, जहां इसे "कथक" नामक कथा कहने वाले धार्मिक नृत्य के रूप में प्रस्तुत किया जाता था। समय के साथ, यह नृत्य मंदिरों से दरबारों तक पहुंचा और मुगल संरक्षण के तहत समृद्ध हुआ। इस दौरान कथक में फारसी और सेंट्रल एशियाई तत्वों का समावेश हुआ, जिससे इसकी शैली और भी विकसित हुई। औपनिवेशिक काल में कथक ने पश्चिमी प्रभावों को अपनाया और एक आधुनिक कला रूप के रूप में उभरा। मुगल शासकों की छत्रछाया में कथक ने अपनी तकनीकी और भावनात्मक गहराई में सुधार किया। इस काल में फारसी कविता, हिंदुस्तानी संगीत और सेंट्रल एशियाई नृत्य शैली के तत्व कथक का हिस्सा बने। क्षेत्रीय स्तर पर, यह विभिन्न शैलियों में विकसित हुआ, जैसे लखनऊ घराना, जो अपनी कोमलता और भावनात्मक अभिव्यक्ति के लिए जाना जाता है, और जयपुर घराना, जो जटिल तालों और तकनीकी उत्कृष्टता पर जोर देता है। इन घरानों की विशिष्ट विशेषताओं ने कथक को बहुआयामी और विविधतापूर्ण नृत्य रूप बना दिया।

आधुनिक युग में कथक ने वैश्विक मंचों पर अपनी पहचान बनाई है। डिजिटल मीडिया और वैश्वीकरण ने कथक के प्रदर्शन को नए आयाम दिए

⁸² Jaiswal, V., and Upadhyay, R. "THE BANARAS GHARANA OF KATHAK DANCE: A STUDY FROM THE PAST TO PRESENT." *ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts*, vol. 4, no. 2, 2023, pp. 149-160, https://www.researchgate.net/publication/373387372_THE_BANARAS_GHARANA_OF_KATHAK_DANCE_A_STUDY_FROM_THE_PAST_TO_PRESENT.

हैं। नर्तक अब इसे अन्य नृत्य शैलियों और मल्टीमीडिया के साथ जोड़कर नए प्रयोग कर रहे हैं, जिससे यह नृत्य रूप और भी प्रासंगिक और आकर्षक बन गया है। पंडित बिरजू महाराज और सितारा देवी जैसे दिग्गज कलाकारों ने कथक को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय बनाया। उनकी कोरियोग्राफी और अद्वितीय प्रदर्शन शैली ने न केवल इसकी पारंपरिक जड़ों को संरक्षित किया, बल्कि इसमें नवाचार भी जोड़ा। कथक में नवाचार और वैश्विक सहयोग के माध्यम से विकास की असीम संभावनाएं हैं। यह नृत्य रूप न केवल भारत की सांस्कृतिक धरोहर का प्रतीक है, बल्कि आधुनिक युग में भी अपनी प्रासंगिकता बनाए हुए है। कथक परंपरा और आधुनिकता का एक सामंजस्यपूर्ण संगम है, जो भावनाओं, संस्कृति और आध्यात्मिकता को व्यक्त करता है। यह न केवल एक नृत्य है, बल्कि एक जीवनशैली है, जो सदियों से अपनी सुंदरता और आकर्षण से दर्शकों को मंत्रमुग्ध करता आ रहा है।⁸³

अदनान के अनुसार, कथक, उत्तर भारत का एक प्रमुख शास्त्रीय नृत्य रूप है, जो अपने जटिल पैर के संचालन, तीव्र घुमाव, और सूक्ष्म अभिव्यक्तियों के लिए जाना जाता है। यह नृत्य परंपरा, जिसका मूल कथा कहने की परंपरा में है, 1500 ईसा पूर्व दक्षिण एशिया में आरंभ हुई। यह एक साधारण कला के रूप में शुरू हुई, जो 2500 वर्षों में विकसित होकर 10वीं शताब्दी तक एक परिपक्व नृत्य रूप बन गई।

कथक शब्द संस्कृत के "कथक" से लिया गया है, जिसका अर्थ है

⁸³ Sharma, S., and Makkar, A. S. "Evolution Of The Presentation Of Indian Classical Dance Kathak." *Educational Administration: Theory and Practice*, vol. 30, no. 5, 2024, pp. 4834-4844, <https://kuey.net/index.php/kuey/article/view/3715>.

कथाकार। प्रारंभ में, यह नृत्य हिंदू धर्म से गहराई से जुड़ा था और मंदिरों में प्रस्तुत किया जाता था। 8वीं शताब्दी में अफगानिस्तान, ईरान और तुर्की से मुस्लिम प्रभाव ने इस कला को एक नई दिशा दी। कथक ने मुस्लिम संगीत, नृत्य, परिधान और सौंदर्यशास्त्र को अपनाया। 11वीं शताब्दी में यह मंदिरों और सड़कों से राजपूत और मुगल शासकों के दरबारों में पहुंचा, जिससे इसमें अधिक परिष्कार, तकनीक और भव्यता आई।

कथक के दो मुख्य पहलू हैं नृत्त (तकनीकी पक्ष) और नृत्य (अभिव्यक्तिपरक पक्ष)। नृत्त, शुद्ध नृत्य है जो ताल और लय पर केंद्रित होता है। दूसरी ओर, नृत्य, अभिनय और भावनाओं के माध्यम से कहानी कहने पर केंद्रित है। कथक में विभिन्न प्रकार के तालों का उपयोग किया जाता है, जो आमतौर पर विलंबित, मध्यम और तीव्र लय में होता है। नृत्य प्रदर्शन आमतौर पर वंदना, आमद, ठाठ, और सलामी से शुरू होता है। वंदना देवताओं की प्रार्थना होती है, जबकि आमद मंच पर प्रवेश दर्शाता है। ठाठ और सलामी क्रमशः खड़े होने की शैली और दर्शकों को सलाम करने का तरीका है। इसके बाद, नर्तक बने-बनाए ष्बोल (संगीत के लिए स्मरणीय शब्द) का उपयोग करके प्रदर्शन करते हैं।

कथक प्रदर्शन में षतिहाई, षष्कविता, षष्पाति, और प्लारी जैसे तत्वों का उपयोग किया जाता है। नृत्य का भावनात्मक पक्ष आमतौर पर ठुमरी, दादरा, कजरी, भजन, और गजल जैसी संगीत शैलियों के साथ किया जाता है। इसमें कलाकार अपनी रचनात्मकता और कल्पना का उपयोग करते हैं और भावनाओं और अभिव्यक्तियों के माध्यम से दर्शकों के साथ संवाद करते हैं। कथक के पांच प्रमुख घराने हैं बनारस, जयपुर, लाहौर, लखनऊ और रायगढ़। प्रत्येक घराना अपनी विशिष्ट विशेषताओं और शैली के लिए जाना जाता है। बनारस घराना हिंदू जड़ों पर अधिक केंद्रित है, जबकि जयपुर

घराना अपनी जटिल तालों और तकनीकी उत्कृष्टता के लिए प्रसिद्ध है। लखनऊ घराना नृत्य और नृत्त दोनों पर समान ध्यान देता है, और रायगढ़ घराना विभिन्न शैलियों के समागम से विकसित हुआ।

मुगल प्रभाव ने कथक की पोशाक और प्रदर्शन शैली में परिवर्तन किया। पुरुष नर्तक आमतौर पर धोती पहनते थे, जबकि महिलाओं के लिए साड़ी और बाद में लहंगा-चोली प्रचलित हुआ। 21वीं सदी में, कथक ने वैश्विक साहित्य, संगीत और कला को भी अपनाया और यह भारत और पाकिस्तान की संस्कृति और कला का एक अद्भुत प्रतिनिधित्व बन गया। कथक की यह यात्रा इसे एक सुंदर, परिष्कृत और विशिष्ट कला रूप बनाती है, जो इतिहास, परंपरा और आधुनिकता का समागम है।⁸⁴

शोवना नारायण अपने लेख **कथक और हिंदी सिनेमा** में कथक और हिंदी फिल्मों में इसकी प्रस्तुति के बदलते संबंधों पर चर्चा करती हैं। वह बताती हैं कि कैसे भारतीय सिनेमा की शुरुआती फिल्मों, जो पौराणिक और धार्मिक विषयों से प्रेरित थीं, में कथक को स्वाभाविक रूप से शामिल किया गया। इसकी सांस्कृतिक जड़ें गंगा के मैदानी इलाकों में थीं। इंडिया सत्यनारायण और नर्तकी जैसी फिल्मों ने इस नृत्य शैली की पारंपरिक और ऐतिहासिक कहानियों से जुड़ाव को दर्शाया, जिसमें धार्मिक और सांस्कृतिक कथानक पर जोर दिया गया।

शोवना उन प्रमुख कथक कलाकारों के योगदान पर भी प्रकाश डालती हैं जैसे लच्छू महाराज, गोपी कृष्ण और रोशन कुमारी, जिन्होंने हिंदी सिनेमा में

⁸⁴ Adnan, A. *Kathak*. n.d. Academia, <https://www.academia.edu/18174596/Kathak>.

शास्त्रीय तत्वों को प्रामाणिकता के साथ प्रस्तुत किया। उदाहरण के लिए, जलसागर जैसी फिल्मों में पारंपरिक कथक के तत्व, जैसे टोडा, तुकड़ा और गत भाव, को दर्शाया गया, जो इस नृत्य शैली की गहराई को दर्शाता है। हालांकि, वह यह भी आलोचना करती हैं कि फिल्मों में कथक की प्रस्तुति में धीरे-धीरे प्रामाणिकता का अभाव होता गया। वेशभूषा और कोरियोग्राफी को अक्सर गलत तरीके से प्रस्तुत किया गया, जहां अंगरखा पोशाक को नाच के साथ जोड़ा गया, जबकि भरतनाट्यम को धार्मिक भक्ति का प्रतीक बनाया गया, जिससे उत्तर और दक्षिण भारत की शास्त्रीय नृत्य परंपराओं के बीच एक स्पष्ट अंतर पैदा हुआ। शोवना इस बात पर भी चर्चा करती हैं कि 1970 और 1980 के दशक में बॉलीवुड में कथक के साथ पश्चिमी और मध्य पूर्वी प्रभावों को जोड़कर इसे एक नई हाइब्रिड शैली में बदल दिया गया। इसने कथक की पारंपरिक पहचान को कमजोर कर दिया और एक नई शैली "बॉलीवुड नृत्य" का उदय हुआ, जिसने कथक की शास्त्रीय शुद्धता को पीछे छोड़ दिया। हाल के वर्षों में, वह एक सकारात्मक प्रवृत्ति की ओर इशारा करती हैं, जहां फिल्म निर्माता पारंपरिक कथक गुरुओं के साथ काम कर रहे हैं ताकि फिल्मों में इसकी प्रामाणिक प्रस्तुति सुनिश्चित की जा सके। यह पुनरुत्थान कथक की कलात्मक अखंडता और भारतीय सिनेमा में इसकी भूमिका के प्रति एक नए सम्मान को दर्शाता है। अपने विश्लेषण के माध्यम से, शोवना एक संतुलित दृष्टिकोण की वकालत करती हैं, जो कथक की शास्त्रीय जड़ों का सम्मान करते हुए इसे समकालीन दर्शकों के लिए रचनात्मक रूप से अनुकूल बनाने पर जोर देता है।⁸⁵

⁸⁵ Narayan, S. *Kathak and Hindi Cinema*. n.d. Academia, https://www.academia.edu/26525870/Kathak_and_Hindi_Cinema.

वॉकर अपनी कृति **Revival and Reinvention in India's Kathak Dance** में कथक नृत्य के पुनरुद्धार के जटिल इतिहास की चर्चा करती हैं, जो भारत के राष्ट्रवादी आंदोलन के दौरान हुआ। वह यह विश्लेषण करती हैं कि कथक कैसे तवायफों और मुगल दरबारों से जुड़ी अपनी ऐतिहासिक पहचान से बदलकर 20वीं सदी में भारत की सांस्कृतिक धरोहर का प्रतीक बन गया। वॉकर तर्क देती हैं कि कथक का पुनरुद्धार केवल एक खोई हुई परंपरा को पुनः प्राप्त करने की प्रक्रिया नहीं थी, बल्कि इसके विवरण को पुनर्परिभाषित करने का एक सुविचारित प्रयास था।

वॉकर औपनिवेशिक काल के दौरान कथक के परिवर्तन की पड़ताल करती हैं, जब इसे तवायफों और कथित रूप से भोग-विलास से जुड़े होने के कारण कलंकित किया गया। राष्ट्रवादी आंदोलन ने कथक को हिंदू भक्ति परंपराओं में स्थापित एक शास्त्रीय कला रूप के रूप में पुनः संदर्भित करने का प्रयास किया, जिससे इसके मुगल प्रभावों को अलग कर दिया गया। इस प्रक्रिया में संरक्षण का स्थान तवायफों और शाही दरबारों से हटकर मध्यवर्गीय संस्थानों और शहरी केंद्रों में स्थानांतरित हो गया। पुनरुद्धार की प्रक्रिया ने कथक के एक परिष्कृत संस्करण को बढ़ावा दिया, जिसमें इसकी कथा शैली और तालबद्ध तत्वों पर जोर दिया गया, जबकि इसकी भावनात्मक और दरबारी कनेक्शनों को कम महत्व दिया गया।

वह यह भी बताती हैं कि इस पुनरुद्धार के दौरान पुरुष वंशानुगत कलाकार, जिन्हें कथक कहा जाता था, ने इस कला को पुनः प्राप्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। इन कलाकारों ने स्वयं को हिंदू मंदिर परंपराओं से जोड़कर अपनी वैधता स्थापित की और कथक के संरक्षक बन गए। कथक का यह

परिष्कृत स्वरूप शहरी संस्थानों में मध्यम वर्ग की महिलाओं द्वारा सिखाया और प्रदर्शन किया जाने लगा, जिससे इसे एक सम्मानजनक शास्त्रीय नृत्य का दर्जा मिला।

वॉकर इस पुनरुद्धार के दौरान विकसित हुई एकरस कथा की आलोचना करती हैं, जो कथक को पुरुष-प्रधान और हिंदू भक्ति परंपरा के रूप में प्रस्तुत करती है। वह तर्क करती हैं कि यह कथा कथक के मिश्रित इतिहास और संकरित जड़ों को छुपा देती है। यह कथक के विकास में तवायफों के योगदान और मुगल सौंदर्यशास्त्र के प्रभावों को अनदेखा करता है, जिन्होंने कथक की अभिव्यक्तिपरक और तालबद्ध विशेषताओं को आकार दिया। अंततः, वॉकर कथक के पुनरुद्धार को राष्ट्रवादी विचारधाराओं से प्रेरित एक सांस्कृतिक पुनराविष्कार के रूप में प्रस्तुत करती हैं। वह कथक के संकरित इतिहास को मान्यता देने और इसे भक्ति, दरबारी, और लोक परंपराओं के समागम के रूप में स्वीकार करने का आह्वान करती हैं। उनका अध्ययन भारतीय शास्त्रीय नृत्य के विकास में संस्कृति, पहचान, और राजनीति के बीच के संबंधों पर मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है।⁸⁶

नारायण और काल्हा ने अपने शोध **“In Search of Kathak Villages”** में कथक के ऐतिहासिक और सामाजिक संदर्भों का गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया है। यह अध्ययन उत्तर प्रदेश, बिहार और राजस्थान के कथक गांवों पर केंद्रित है, जो कथक के प्राचीन और समृद्ध सांस्कृतिक धरोहर को उजागर करता है। लेखक बताते हैं कि कथक गांवों का नामकरण कथक

⁸⁶ WalKer, M. "Revival and Reinvention in India's Kathak Dance." *MUSICultures*, pp. 171-184, n.d., <https://journals.lib.unb.ca/index.php/MC/issue/archive>.

लोक समुदाय के नाम पर किया गया था, जिन्हें स्थानीय शासकों द्वारा जागीर के रूप में भूमि प्रदान की गई थी। ये गांव मंदिर परंपराओं से जुड़े ब्राह्मण समुदाय के निवास स्थान थे, जो धार्मिक कथाओं, काव्य और नृत्य के माध्यम से धर्म का प्रचार-प्रसार करते थे।

शोध में बताया गया है कि कथक लोक ब्राह्मण समुदाय का एक हिस्सा थे, जो धार्मिक कथाओं को नृत्य, संगीत और अभिनय के माध्यम से प्रस्तुत करते थे। वे मंदिरों में नियमित रूप से अपनी कला का प्रदर्शन करते थे और धार्मिक त्योहारों के दौरान इसे व्यापक रूप से प्रस्तुत करते थे। कथक लोक की परंपरा में नाट्य सेवा का महत्वपूर्ण स्थान था, जहां वे पवित्र श्लोकों का गायन, उनका अर्थ और नृत्य प्रदर्शन करते थे। महाभारत के आदिपर्व में कथक लोक का उल्लेख मिलता है, जहां उन्हें कथाओं और गायन के माध्यम से राजा अर्जुन के साथ जोड़ा गया है। प्राचीन प्राकृत शिलालेखों और ग्रंथों जैसे काव्यप्रकाश और नाट्यशास्त्र में भी कथक नृत्य और काव्य की परंपरा का उल्लेख किया गया है।

मुगल काल और ब्रिटिश शासन के दौरान, कथक लोक को मंदिरों से दरबारों में स्थानांतरित होना पड़ा। इस बदलाव ने कथक को धार्मिक कथाओं से मनोरंजन के एक रूप में बदल दिया। मुगल प्रभाव और ब्रिटिश औपनिवेशिक शासन ने कथक की संरचना और प्रस्तुति शैली को बदल दिया, जिससे यह दरबारी नृत्य और फिर आधुनिक समय में एक प्रदर्शन कला के रूप में उभरा।

शोवना नारायण और गीतिका काल्हा का यह शोध बताता है कि कथक केवल एक नृत्य रूप नहीं है, बल्कि यह भारतीय सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराओं का अभिन्न हिस्सा है। यह अध्ययन कथक की गहराई और

विविधता को उजागर करता है और इसकी जड़ों की ओर लौटने की आवश्यकता पर जोर देता है। लेखकों का मानना है कि कथक लोक और उनके गांव भारतीय सांस्कृतिक विरासत का एक महत्वपूर्ण हिस्सा हैं, जिन्हें संरक्षित और समझा जाना चाहिए।⁸⁷

2.4. शोध प्रविधि (Research Methodology)

किसी भी अनुसंधान कार्य की सफलता के लिए एक स्पष्ट और व्यवस्थित शोध प्रविधि का चयन अत्यंत आवश्यक है। शोध प्रविधि एक वैज्ञानिक ढांचा प्रदान करती है, जिसके माध्यम से शोध कार्य की संपूर्ण संरचना तैयार की जाती है। यह सुनिश्चित करती है कि शोध तार्किक, मौलिक और विषय के अनुसार प्रासंगिक हो। इस शोध में “कथक नृत्य के प्रचार-प्रसार में नृत्य-नाटिकाओं के योगदान” का गहन विश्लेषण करने के लिए एक बहुआयामी और व्यवस्थित दृष्टिकोण अपनाया गया है। इस दृष्टिकोण में सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, और कलात्मक तत्वों का गहराई से अध्ययन शामिल है।

2.4.1. शोध प्रविधि के तहत उपयोग किए गए स्रोत और

उपकरण:

इस शोध में विभिन्न स्रोतों और उपकरणों का उपयोग किया गया है ताकि सभी आवश्यक जानकारियां एकत्रित की जा सकें। प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों के समन्वय से व्यापक डेटा संग्रहित किया गया है।

⁸⁷ Narayan, Shovana, and Geetika Kalha. "In Search of Kathak Villages." n.d.

– **प्राथमिक स्रोतों में:** कथक नृत्याचार्यों और नृत्य विशेषज्ञों के साक्षात्कार, नृत्य-नाटिकाओं के लाइव प्रदर्शन, तथा नृत्य-निर्देशकों और कलाकारों के साथ संवाद शामिल हैं। इन स्रोतों ने वास्तविक समय में प्राप्त अनुभवों और विचारों को समझने में मदद की।

– **द्वितीयक स्रोतों में:** कथक नृत्य और नृत्य-नाटिकाओं पर आधारित शोध आलेख, पुस्तकें, नृत्य प्रस्तुतियों के वीडियो, पुराने नृत्य आयोजनों के अभिलेख, और साहित्यिक सामग्रियों का गहन अध्ययन किया गया।

2.4.2. शोध प्रक्रिया के प्रमुख चरण:

1. समस्या की पहचान:

शोध प्रक्रिया की शुरुआत समस्या की सटीक पहचान और स्पष्ट समस्या वक्तव्य तैयार करने से की गई। इस शोध की मुख्य समस्या कथक नृत्य में नृत्य-नाटिकाओं के महत्व और उनके प्रचार-प्रसार में योगदान का विश्लेषण करना है। इसमें यह भी शामिल है कि किस प्रकार नृत्य-नाटिकाओं ने कथक नृत्य की प्रस्तुति शैली को व्यापक रूप से प्रभावित किया है। इसके लिए कथक नृत्य की पारंपरिक शैली, समकालीन प्रस्तुतियों, और विभिन्न भाषाओं तथा सांस्कृतिक संदर्भों में उनके प्रभाव को समझने की आवश्यकता है।

2. सूत्रों का चयन और संग्रहण:

शोध कार्य के लिए प्रासंगिक और विश्वसनीय स्रोतों का चयन एक महत्वपूर्ण चरण है। इसमें प्रमुख कथक नृत्याचार्यों, कलाकारों, और विद्वानों द्वारा लिखित साहित्य का संग्रहण किया गया। इसके अतिरिक्त, उन नृत्य प्रस्तुतियों

का भी अध्ययन किया गया जो नृत्य-नाटिकाओं के संदर्भ में महत्वपूर्ण मानी जाती हैं। यह सुनिश्चित किया गया कि चुने गए सभी स्रोत मौलिक, अद्यतन और शोध के उद्देश्य के अनुरूप हों।

3. साहित्य पुनरावलोकन:

शोध प्रविधि का एक अनिवार्य हिस्सा साहित्य पुनरावलोकन है। इस चरण में कथक नृत्य की नृत्य-नाटिकाओं से संबंधित पिछले शोध कार्यों, पुस्तकों और लेखों का गहन अध्ययन किया गया। साहित्य पुनरावलोकन ने यह सुनिश्चित किया कि शोध कार्य में न केवल मौजूदा ज्ञान का पुनः उपयोग किया जाए, बल्कि नए दृष्टिकोण और अनछुए पहलुओं को भी उजागर किया जाए।

4. डाटा संग्रहण और विश्लेषण:

डाटा संग्रहण में विभिन्न स्रोतों से प्राप्त जानकारी का तकनीकी और विश्लेषणात्मक अध्ययन किया गया। नृत्य-नाटिकाओं की संरचना, उनमें उपयोग किए गए संगीत और उनके भावनात्मक आयामों को गहराई से समझा गया। इस प्रक्रिया में प्रमुख नृत्य प्रस्तुतियों के वीडियो और ऑडियो फुटेज का भी विश्लेषण किया गया। साथ ही, नृत्याचार्यों और नर्तकों के अनुभवों और उनके द्वारा दिए गए साक्षात्कारों से प्राप्त जानकारी को समेकित रूप से समझने का प्रयास किया गया।

5. सावाक् विश्लेषण विधि का उपयोग:

शोध कार्य में "सावाक् विश्लेषण विधि (टमतइंस |दंसलेपे डमजीवक)" का उपयोग नृत्य-नाटिकाओं के विभिन्न आयामों को समझने के लिए किया गया। इस विधि के अंतर्गत नृत्य-नाटिकाओं में शामिल संवाद, नृत्य मुद्राएं,

संगीत संयोजन और कथावस्तु का गहन विश्लेषण किया गया। नृत्य-नाटिकाओं की प्रस्तुति में उनके भावनात्मक और सांस्कृतिक महत्व को समझने में यह विधि प्रभावी रही।

6. प्राप्त निष्कर्षों का मूल्यांकन:

शोध के दौरान प्राप्त निष्कर्षों का गहन मूल्यांकन किया गया। यह सुनिश्चित किया गया कि सभी निष्कर्ष तार्किक और साक्ष्य-आधारित हों। नृत्य प्रस्तुतियों, साक्षात्कारों और अन्य स्रोतों से प्राप्त जानकारियों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया ताकि यह स्पष्ट हो सके कि नृत्य-नाटिकाओं ने कथक नृत्य के प्रचार-प्रसार में कैसे योगदान दिया।

2.5. शोध कार्य के उद्देश्य और दिशा

इस शोध का प्रमुख उद्देश्य कथक नृत्य की नृत्य-नाटिकाओं के महत्व को ऐतिहासिक और सांस्कृतिक दृष्टिकोण से समझना है। नृत्य-नाटिकाओं ने किस प्रकार कथक नृत्य को व्यापक जनसमूह तक पहुंचाने और उसकी प्रासंगिकता बनाए रखने में योगदान दिया, यह इस अध्ययन का केंद्रीय बिंदु है। इसके साथ ही, इस शोध का एक अन्य उद्देश्य यह भी है कि भविष्य में होने वाले अनुसंधानों के लिए यह कार्य एक मार्गदर्शक की भूमिका निभाए। यह शोध केवल नृत्य की सराहना करने तक सीमित नहीं है, बल्कि नृत्य-नाटिकाओं के माध्यम से कथक नृत्य की तकनीकी बारीकियों, सांस्कृतिक प्रभावों और प्रस्तुति शैली की गहराई को तार्किक और वैज्ञानिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत करता है।

2.6. निष्कर्ष (Conclusion)

एक व्यवस्थित और वैज्ञानिक शोध प्रविधि किसी भी शोध कार्य की सफलता की नींव होती है। प्रस्तुत शोध कार्य में “कथक नृत्य के प्रचार-प्रसार में नृत्य-नाटिकाओं के योगदान” को समझने और उनके सांस्कृतिक महत्व का गहन अध्ययन करने के लिए प्राथमिक और द्वितीयक स्रोतों का प्रभावी उपयोग किया गया है। शोध की सफलता के लिए विभिन्न चरणों का व्यवस्थित ढंग से पालन किया गया, जिनमें समस्या की पहचान, साहित्य पुनरावलोकन, डाटा संग्रहण और विश्लेषण शामिल हैं। इस शोध में प्राथमिक स्रोतों जैसे कथक नृत्याचार्यों और नृत्य विशेषज्ञों के साक्षात्कार, लाइव प्रस्तुतियों के अवलोकन, और नृत्य-नाटिकाओं से जुड़ी घटनाओं को शामिल किया गया। इन स्रोतों ने कथक नृत्य की प्रस्तुति में नृत्य-नाटिकाओं के महत्व को प्रत्यक्ष रूप से समझने में मदद की। द्वितीयक स्रोतों में शोध आलेख, पुस्तकें, पुरालेख, और नृत्य प्रस्तुतियों के वीडियो का गहन अध्ययन किया गया। शोध प्रक्रिया में “सावाक् विश्लेषण विधि (Verbal Analysis Method)” का प्रभावी उपयोग किया गया, जिसने नृत्य-नाटिकाओं की संरचना, संगीत संयोजन, भावनात्मक अभिव्यक्ति और सांस्कृतिक प्रभाव को गहराई से समझने में मदद की। इस विधि ने नृत्य-नाटिकाओं में कथावस्तु, नृत्य मुद्राओं और संगीत के बीच के समन्वय को उजागर किया, जिससे उनके प्रभाव का वैज्ञानिक और तार्किक मूल्यांकन संभव हुआ।

प्राप्त निष्कर्षों से यह स्पष्ट हुआ कि नृत्य-नाटिकाओं ने कथक नृत्य के प्रचार-प्रसार में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। उन्होंने कथक की पारंपरिक सीमाओं से बाहर जाकर उसे एक व्यापक सांस्कृतिक माध्यम के

रूप में प्रस्तुत किया, जिससे कथक नृत्य को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान मिली। नृत्य-नाटिकाओं ने कथक नृत्य को न केवल कलात्मक दृष्टिकोण से समृद्ध किया, बल्कि इसे सामाजिक और सांस्कृतिक चेतना के साथ भी जोड़ा। यह शोध कार्य केवल नृत्य की प्रशंसा करने तक सीमित नहीं है, बल्कि इसके माध्यम से कथक की तकनीकी बारीकियों और सांस्कृतिक प्रासंगिकता को तार्किक दृष्टिकोण से स्थापित किया गया है। निष्कर्षों से यह भी स्पष्ट होता है कि नृत्य-नाटिकाओं ने भारतीय सांस्कृतिक धरोहर को समृद्ध करने में अमूल्य योगदान दिया है। भविष्य में इस शोध के निष्कर्ष अन्य शोधकर्ताओं और कलाकारों के लिए मार्गदर्शक साबित हो सकते हैं।

तृतीय अध्याय

नृत्य नाटिकाओ का ऐतिहासिक पूर्णावलोकन

3.1. नृत्य नाटिका

नृत्य नाटिका (Dance - Drama) भारतीय शास्त्रीय परंपरा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जहाँ नृत्य और नाटक के तत्वों को एक साथ मिलाकर कथा प्रस्तुत की जाती है। यह कला भारतीय सांस्कृतिक धरोहर का अभिन्न अंग है और इसकी चर्चा कई पुस्तकों में की गई है। नृत्य नाटिका शब्द दो मुख्य तत्वों से मिलकर बना है

- नृत्य (Dance): जिसमें शारीरिक गतिविधियों, मुद्राओं और हाव-भावों के माध्यम से कहानी कही जाती है।
- नाटिका (Drama): जिसमें नाटक के तत्व, जैसे पात्रों का संवाद और अभिनय, कथा में गहराई लाते हैं।⁸⁸

जब किसी कथानक को नृत्य के माध्यम से रंगमंच पर प्रस्तुत किया जाए तो उसे 'नृत्य-नाटिका' कहा जाता है। वैसे तो यदि हम प्राचीन भारतीय संस्कृत नाट्य प्रयोग परम्परा की ओर निहारें तो हम पाते हैं कि उनमें संवाद, गीत, नृत्य आदि सभी तत्व मिले-जुले हैं अतः उन सभी को नृत्य -नाट्य कहा जा सकता है।⁸⁹

⁸⁸ Venkataraman, Leela. *Indian Classical Dance: The Renaissance and Beyond*. p67

⁸⁹ कथक नृत्य शिक्षा डॉ. पुरु दाधीच पृष्ठ 56।

महत्वपूर्ण पुस्तकें एवं उनके सन्दर्भ में नृत्य नाटिकाओं का वर्णन

नाट्यशास्त्र (भरत मुनि द्वारा)

- यह पुस्तक भारतीय नाट्य और नृत्य कला की मूलभूत समझ देती है। इसमें नृत्य नाटिका के सिद्धांतों और तकनीकों की विस्तृत व्याख्या की गई है। भरत मुनि ने नाटक और नृत्य के संगम को एक शक्तिशाली माध्यम के रूप में वर्णित किया है, जिसमें दोनों का संतुलित उपयोग कथा के प्रभाव को बढ़ाता है।
- पुस्तक में नृत्य की मुद्राओं, हाव-भावों, और रसों (भावनाओं) को समझाने पर ध्यान दिया गया है, जो नृत्य नाटिका की प्रस्तुति में महत्वपूर्ण होते हैं।

अभिनवगुप्त की अभिव्यक्ति

- इस ग्रंथ में "नाट्य" और नृत्य को एक साथ जोड़ने की प्रक्रिया को विस्तार से समझाया गया है। अभिनवगुप्त ने नृत्य और अभिनय को एक साथ जोड़ने के महत्व को रेखांकित किया है। उन्होंने बताया है कि किस प्रकार नृत्य नाटिका में शारीरिक और मानसिक अभिव्यक्ति का संतुलन महत्वपूर्ण होता है।
- इस पुस्तक में अभिव्यक्तियों (Expressions) और रस (मूल भावना) की महत्ता का भी विश्लेषण किया गया है।

कथक: भारतीय नृत्य परंपरा

- यह पुस्तक विशेष रूप से कथक नृत्य पर केंद्रित है, जिसमें नृत्य नाटिका की प्रमुखता को समझाया गया है। इसमें बताया गया है कि कैसे कथक, जो एक शास्त्रीय नृत्य शैली है, का उपयोग नाटिकाओं को मंचित करने में किया जाता है।
- यह पुस्तक नृत्य और नाटक के पारस्परिक संबंध को स्पष्ट करती है और

बताती है कि कैसे नृत्य नाटिका में कथक जैसे शास्त्रीय नृत्य का उपयोग किया जा सकता है।

भारतीय शास्त्रीय नृत्य

- इस पुस्तक में सभी प्रमुख भारतीय शास्त्रीय नृत्य रूपों की चर्चा है और विशेष रूप से नृत्य नाटिका के महत्व को रेखांकित किया गया है। पुस्तक में कहा गया है कि नृत्य नाटिका न केवल मनोरंजन का साधन है, बल्कि यह भावनाओं और कथाओं को गहरे और अर्थपूर्ण तरीके से प्रस्तुत करने का एक अद्वितीय माध्यम भी है।

भारतीय लोक नाट्य परंपरा

- इस पुस्तक में भारतीय लोक नाटकों और उनके नृत्य संबंधी पहलुओं की चर्चा की गई है। इसमें बताया गया है कि कैसे लोकनृत्यों और नाटकों में नृत्य नाटिका का स्वरूप पारंपरिक और ग्रामीण जीवन के विभिन्न पहलुओं को दर्शाने में उपयोग किया जाता है।

नृत्य नाटिका भारतीय शास्त्रीय और लोक परंपरा का एक महत्वपूर्ण अंग है, जिसमें नृत्य और नाटक का अद्भुत संगम देखने को मिलता है। यह कला रूप शारीरिक मुद्राओं, हाव-भावों, और रसों के माध्यम से कथाओं को जीवन्त बना देता है, जहां संवादों की भूमिका सीमित होती है और भावनाओं की अभिव्यक्ति नृत्य के द्वारा की जाती है। भरत मुनि के नाट्यशास्त्र और अभिनवगुप्त की व्याख्याएं इस बात की पुष्टि करती हैं कि नृत्य नाटिका न केवल मनोरंजन का साधन है, बल्कि सामाजिक, सांस्कृतिक, और आध्यात्मिक संदेशों को भी प्रभावी रूप से प्रसारित करने का एक शक्तिशाली माध्यम है। अभिनवगुप्त के मतानुसार, यह नृत्य और नाटक की संपूर्णता का प्रतीक है, जहां हाव-भाव और मुद्राएं दर्शकों को भावनात्मक रूप से जोड़ने का कार्य करती हैं। कथक जैसे शास्त्रीय नृत्य और लोक नाटकों में नृत्य नाटिका की यह परंपरा

विभिन्न जीवन के पहलुओं और मानवीय भावनाओं को प्रस्तुत करती है, जो इसे और अधिक प्रासंगिक बनाती है। इस प्रकार, नृत्य नाटिका न केवल एक सांस्कृतिक धरोहर है, बल्कि यह भावनाओं, विचारों और कथाओं को अभिव्यक्त करने का एक अद्वितीय कला रूप भी है, जिसे भारतीय परंपरा में उच्च स्थान प्राप्त है।

रैजिनाल्ड मैसी लिखते हैं— The future of kathak lies in the direction of ballezation. Indeed, of all the Indian classical dances, kathak is best suited for balletic presentation on account of its fluidity scope for improvisation and above all, its capacity for adoption.⁹⁰

अर्थात् पहले जहाँ कथक एकल नृत्य के रूप में ही विकसित हुआ, बैले ने कथक को समृद्ध किया। नृत्य – संयोजन (**Choreography**) की कला ने कथक को सर्वोधिक सहारा दिया है, जिसका प्रयोग नर्तक सचेत रूप से कर रहे हैं। बैले का कन्सेप्ट पश्चिम देशों से लिया गया है। अतः नृत्य संयोजन की आवश्यकता भी अहम हो गयी। कथक जगत में पं० बिरजू महाराज और कुमुदिनी लाखिया जी ने नृत्य संयोजन के रूप में अहम् भूमिका निभाई है। वहीं दूसरी ओर प्रसिद्ध नृत्य संस्थानों ने उचित भौतिक संरचना प्रदान कर उसका उचित विकास किया है।

3.2. नृत्य नाटिकाओ की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

नृत्य और नाट्य का संगम भारतीय सांस्कृतिक धरोहर का अभिन्न अंग रहा है, जिसकी जड़े प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक फैली हुई हैं। भारतीय नाट्यशास्त्र की उत्पत्ति का सबसे प्राचीन उल्लेख त्रेतायुग में मिलता है, जब देवताओं ने ब्रह्माजी से एक ऐसी कला रचना की मांग की जो मनोरंजन के साथ-साथ समाज को नैतिक मार्गदर्शन भी प्रदान कर सके। इस प्रकार, ब्रह्माजी ने "नाट्यवेद" की रचना की, जिसे उन्होंने चारों वेदों से तत्व लेकर बनाया। ऋग्वेद से कथानक, यजुर्वेद से

⁹⁰ Massey , Reginald ,Indian Kathak dance – past, present, future, p64

अभिनय, सामवेद से संगीत, और अथर्ववेद से रस का समावेश करते हुए, इस नाट्यवेद ने भारतीय नाट्य कला की नींव रखी।

प्राचीन भारतीय नाट्य का विकास

ब्रह्माजी द्वारा रचित नाट्यवेद का प्रथम प्रदर्शन "इन्द्रध्वज महोत्सव" में किया गया, जहाँ देवताओं और असुरों के बीच हुए संग्राम को दर्शाया गया। इस नाट्य प्रदर्शन में देवताओं की विजय का वर्णन किया गया था। यह नाट्यकला शारीरिक मुद्राओं, हाव-भावों, और संगीत के माध्यम से कथा का जीवंत प्रस्तुतीकरण था। इस प्रदर्शन ने नाट्यकला की महत्ता को स्थापित किया और ब्रह्माजी ने नाट्य का ज्ञान भरतमुनि को प्रदान किया। भरतमुनि ने इसे अपने सौ पुत्रों के साथ पृथ्वी लोक में प्रचलित किया और इस प्रकार नाट्यकला का प्रसार हुआ **(Joshi 1982)**।

भरतमुनि द्वारा प्रवर्तित इस नाट्यकला का उद्देश्य समाज में नैतिकता और न्याय की भावना को बढ़ावा देना था। नाट्यकला केवल मनोरंजन का साधन नहीं थी, बल्कि इसमें धार्मिक और सामाजिक शिक्षा का समावेश था। भरतमुनि की नाट्यशास्त्र में हाव-भाव, अभिनय, संगीत, और नृत्य के समन्वय को विशेष महत्व दिया गया है। नाट्यशास्त्र में वर्णित नौ रसकृश्रृंगार, वीर, करुण, रौद्र, हास्य, भयानक, बीभत्स, अद्भुत, और शांतिकृइस नाट्यकला के आधार स्तंभ माने जाते हैं। इन रसों के माध्यम से कथा को प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया जाता था, और दर्शक भावनात्मक रूप से उस कथा से जुड़ते थे।

मध्यकालीन युग में नृत्य और नाट्य का विकास

मध्यकालीन युग में नाट्य और नृत्य के विकास में धार्मिक अनुष्ठानों का महत्वपूर्ण योगदान रहा। देवदासी परंपरा के अंतर्गत मंदिरों में नृत्य का आयोजन किया जाता था, जहाँ धार्मिक कथाओं का प्रदर्शन नृत्य के माध्यम से किया जाता था। इस काल

में शास्त्रीय नृत्य शैलियों का उद्भव हुआ, जिनमें भरतनाट्यम, ओडिसी, मणिपुरी, कथकली, और कथक प्रमुख थे। इन नृत्य शैलियों ने भारतीय नाट्य परंपरा को और समृद्ध किया।

विशेष रूप से, कथक का विकास उत्तर भारत में हुआ और यह नृत्य—नाट्य का एक महत्वपूर्ण रूप बन गया। प्रारंभ में, कथक नृत्य का प्रदर्शन मंदिरों में किया जाता था, लेकिन बाद में मुगल काल में यह शाही दरबारों तक पहुंचा। इस काल में तवायफों और दरबारी कलाकारों ने इस कला को आगे बढ़ाया, जिसमें शृंगार रस प्रमुख रूप से दर्शाया जाता था। हालाँकि, समय के साथ, तवायफों से जुड़ी सामाजिक मान्यताओं ने इस कला पर नकारात्मक प्रभाव डाला और इसे नैतिकता के संदर्भ में चुनौती दी गई **(Sahapedia 2020)**।

आधुनिक युग में नृत्य नाटिकाओं का पुनरुद्धार और योगदान

20वीं शताब्दी में, भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान, भारतीय नृत्य और नाट्य कला के पुनरुद्धार की आवश्यकता महसूस की गई। इस पुनरुद्धार में प्रमुख योगदानकर्ताओं में से एक थीं मैडम मेनका। मैडम मेनका, जिनका वास्तविक नाम लेइला रॉय था, ने भारतीय नृत्य, विशेषकर कथक, को एक नई दिशा दी। उन्होंने नृत्य को केवल शृंगारिक तत्वों से जोड़ने की बजाय धार्मिक और आध्यात्मिक कथाओं पर आधारित प्रस्तुतियों के माध्यम से इसे पुनः प्रतिष्ठित किया।

मैडम मेनका का जन्म 1899 में एक ब्राह्मण परिवार में हुआ था और उन्होंने वायलिन वादक के रूप में अपने करियर की शुरुआत की थी। बाद में, उन्होंने कथक नृत्य की शिक्षा पंडित सीताराम प्रसाद से प्राप्त की और इसके माध्यम से शास्त्रीय नृत्य को एक नई पहचान दिलाई। उनके नृत्य नाट्य प्रदर्शन, जैसे कृष्णलीला और देव विजय नृत्य, धार्मिक कथाओं पर आधारित थे और इनमें उन्होंने हिन्दू पौराणिक कथाओं को केंद्र में रखा **(Walker, 2014)**।

मैडम मेनका का योगदान और कथक का पुनरुद्धार

मैडम मेनका ने न केवल नृत्य-नाटिकाओं के माध्यम से कथक को पुनर्जीवित किया, बल्कि उन्होंने इसे एक अंतर्राष्ट्रीय मंच पर भी प्रस्तुत किया। 1930 के दशक में, उन्होंने अपने नृत्य समूह के साथ यूरोप का भ्रमण किया और वहाँ भारतीय नृत्य का प्रदर्शन किया। उनके नृत्य प्रदर्शन में धार्मिक और आध्यात्मिक तत्व प्रमुखता से उपस्थित थे, जिससे उन्हें विदेशों में भी प्रशंसा मिली **(Schlaffke and Schwaderer, 2021)**

मैडम मेनका के प्रदर्शन केवल नृत्य तक सीमित नहीं थे, बल्कि वे मंच पर वेशभूषा, संगीत, और कथानक के माध्यम से एक सम्पूर्ण दृश्यात्मक अनुभव प्रदान करती थीं। उनके नृत्य नाटकों में शास्त्रीय और पाश्चात्य संगीत का मिश्रण होता था, और वे अपनी वेशभूषा को भी विशेष रूप से डिजाइन करती थीं। यह उनकी प्रतिभा और नवाचार का प्रमाण था कि वे कथक को नए तरीके से प्रस्तुत करने में सक्षम हुईं।

उन्होंने नृत्य-नाट्य की एक नयी विधा का विकास किया, जिसमें शास्त्रीय नृत्य की तकनीक और नाट्यकला का समन्वय था। उनके प्रयासों के परिणामस्वरूप, कथक को एक उच्च सांस्कृतिक मान्यता प्राप्त हुई और यह केवल दरबारी नृत्य नहीं रहा, बल्कि एक शास्त्रीय नृत्य शैली के रूप में इसे व्यापक रूप से स्वीकार किया गया **(Chitrolekha Journal, 2018)**।

भारतीय नृत्य-नाटिकाओं की वैश्विक पहचान

मैडम मेनका के योगदान से भारतीय नृत्य-नाटिकाओं को वैश्विक मंच पर पहचान मिली। उनके द्वारा प्रस्तुत नृत्य-नाटिकाओं ने भारतीय संस्कृति और पौराणिक कथाओं को वैश्विक दर्शकों तक पहुँचाया। उनका नृत्य केवल एक कला रूप नहीं था, बल्कि यह भारतीय संस्कृति की समृद्धि और धार्मिकता का प्रतीक था।

उनके समर्पण और नवीन दृष्टिकोण ने भारतीय नृत्य कला को एक नई दिशा दी,

जिससे यह आधुनिक समय में भी प्रासंगिक बनी रही। उनके प्रयासों से नृत्य-नाटिकाओं को नई पहचान मिली और यह कला रूप केवल भारत तक सीमित नहीं रहा, बल्कि वैश्विक दर्शकों के बीच भी इसकी प्रशंसा की गई (**Menaka Archive, 2021**)।

उपरोक्त सभी बातों को ध्यान में रखते हुए यह कहा जा सकता है कि नृत्य-नाटिकाओं का इतिहास प्राचीन काल से लेकर आधुनिक युग तक का है। यह केवल एक कला रूप नहीं है, बल्कि यह समाज और संस्कृति का दर्पण है। भरतमुनि के नाट्यशास्त्र से लेकर मैडम मेनका के आधुनिक नृत्य-नाटिकाओं तक, इस कला रूप ने भारतीय समाज में नैतिकता, धार्मिकता, और सांस्कृतिक समृद्धि का प्रचार-प्रसार किया है।

मैडम मेनका का योगदान विशेष रूप से उल्लेखनीय है, जिन्होंने भारतीय नृत्य को एक नई पहचान दिलाई और इसे वैश्विक मंच पर प्रस्तुत किया। उनके प्रयासों ने न केवल भारतीय नृत्य को पुनर्जीवित किया, बल्कि इसे आधुनिक समय के लिए प्रासंगिक भी बनाया। उनके द्वारा प्रस्तुत नृत्य-नाटिकाएँ भारतीय संस्कृति की जीवंतता और धार्मिकता का प्रतीक हैं, जो आज भी नृत्य और नाट्य कला की धरोहर को संजोए हुए हैं।

3.2.1. भारतीय नृत्य नाटिका

भारतीय नृत्य नाटिका भारतीय कला और सांस्कृतिक परंपरा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा रही है। इसका विकास प्राचीन काल में हुआ, जब ब्रह्माजी ने "नाट्यवेद" की रचना की, जिसमें चारों वेदों के तत्व—कथानक, अभिनय, संगीत, और रस का समावेश था। नृत्य नाटिका में इन तत्वों का समन्वय करते हुए कहानियों को नृत्य और अभिनय के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है। भरतमुनि के नाट्यशास्त्र ने नाट्यकला के सिद्धांतों को स्थापित किया, जिनका नृत्य नाटिकाओं में प्रमुख उपयोग हुआ। मध्यकाल में नृत्य नाटिकाओं का प्रदर्शन मंदिरों में देवदासी परंपरा के तहत हुआ। कालांतर में यह कला दरबारों में पनपी, जहां इसे तवायफों और दरबारी कलाकारों ने बढ़ावा दिया। यद्यपि

इस काल में नृत्य और तवायफों के बीच की कड़ी के कारण इस कला को नैतिकता के संदर्भ में चुनौती दी गई, फिर भी इसका सांस्कृतिक महत्व बना रहा। आधुनिक युग में, नृत्य नाटिकाओं ने राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पहचान प्राप्त की। पौराणिक और धार्मिक कथाओं पर आधारित नृत्य नाटिकाएं भारतीय कला का अभिन्न अंग बन गईं। इन प्रस्तुतियों के माध्यम से नृत्य नाटिकाएं भारतीय सांस्कृतिक धरोहर को संजोए रखती हैं और आधुनिक समय में भी प्रासंगिक हैं।

3.2.1.1. रामलीला

रामलीला में नायिका भेद का चित्रण रामायण के विभिन्न पात्रों के साथ किया जा सकता है, जिसमें प्रमुख नायिकाओं के भावनात्मक और मानसिक स्थितियों को मंचित किया जाएगा। यहाँ कुछ प्रमुख नायिकाओं और उनके भेदों के आधार पर रामलीला में प्रस्तुत किए जा सकने वाले दृश्य हैं:

1. सीता का विरहोत्कण्ठिता नायिका रूप यह दृश्य उस समय को दर्शा सकता है जब सीता राम के वियोग में रहती हैं। अशोक वाटिका में उनके दुःख, विरह और राम के प्रति उनकी असीम भक्ति को प्रमुखता से प्रस्तुत किया जा सकता है। यह दृश्य सीता की मानसिक स्थिति और उनके प्रेम में आत्मसमर्पण को दिखाएगा।
2. कैकेयी का स्वाधीनपतिका नायिका रूप कैकेयी द्वारा दशरथ से राम के वनवास की मांग का दृश्य दर्शाया जा सकता है। यहाँ कैकेयी के स्वार्थी और कर्तव्य से भटके हुए निर्णय को दिखाया जाएगा, जो नायिका भेद के अनुसार 'स्वाधीनपतिका' नायिका के गुणों को प्रदर्शित करेगा।
3. मंदोदरी का पतिव्रता रूप मंदोदरी का रावण के प्रति प्रेम और उसकी गलतियों को समझाते हुए दिखाया जा सकता है। इस दृश्य में मंदोदरी का रावण को समर्पण और उसके प्रति निष्ठा का भाव दिखेगा, जो 'उत्तमा नायिका' का एक आदर्श उदाहरण होगा।
4. तारा का प्रौढ़ा नायिका रूप तारा का वानरराज बाली के प्रति समर्पण और बाद में

उसकी मृत्यु के बाद सुग्रीव को समझाना प्रमुख दृश्य हो सकता है। तारा के साहस और धैर्य का प्रदर्शन यहाँ किया जा सकता है।

रामलीला में नायिका भेद का उपयोग करके न केवल कथानक को गहराई दी जा सकती है, बल्कि भावनाओं और कर्तव्यों के जटिल पहलुओं को भी दर्शकों के सामने प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत किया जा सकता है।

3.2.1.2. यक्षगान

यक्षगान में नृत्य और नाट्य का समन्वय इसे एक विशिष्ट पारंपरिक प्रदर्शन कला बनाता है। यह दक्षिण भारतीय नृत्य-नाट्य शैलियों में से एक है, जिसमें नृत्य के माध्यम से कथानक को प्रस्तुत किया जाता है। यक्षगान का मुख्य आकर्षण इसमें नृत्य और नाटक का जीवंत मिश्रण है, जो इसे अन्य नाट्य रूपों से अलग बनाता है। यक्षगान में नृत्य की भूमिका केवल शरीर की गतियों तक सीमित नहीं है, बल्कि यह कथा को जीवंत करने का एक प्रभावी माध्यम भी है। इसमें कलाकार अपने पैरों के विभिन्न मूवमेंट्स और हाथों के मुद्राओं का उपयोग करते हुए भावनाओं को दर्शाते हैं। 'नाट्यशास्त्र' के सिद्धांतों का प्रयोग करके नायिका-नायक के भावों को प्रकट किया जाता है, जैसे कि शृंगार, वीरता, करुणा आदि। नृत्य का प्रयोग विशेषकर यक्षगान में शृंगारिक और वीर रसों को प्रस्तुत करने के लिए किया जाता है, जैसे रामायण या महाभारत के युद्ध या प्रेम के दृश्यों में।

यक्षगान में नृत्य की शारीरिक गतियों के साथ-साथ अभिनय भी महत्वपूर्ण होता है। कलाकार संवाद के साथ-साथ अपनी शारीरिक भाषा का उपयोग करते हुए कथा को आगे बढ़ाते हैं। यह शैली संवादों, गीतों, और तालों के साथ नृत्य की एक लयबद्ध प्रस्तुति देती है, जिसमें ढोलक, मृदंग, और हारमोनियम जैसे वाद्ययंत्रों का उपयोग होता है। इस प्रकार, यक्षगान में नृत्य और नाट्य का यह गहरा संबंध इसे नाट्य कला का अद्वितीय रूप बनाता है, जहां नृत्य केवल शारीरिक गतिविधि नहीं, बल्कि कथा की आत्मा का अभिव्यक्तिकरण होता है।

3.2.1.3. नौटंकी

नौटंकी उत्तर भारत की एक लोकप्रिय लोकनाट्य शैली है, जो मनोरंजन के साथ-साथ सामाजिक और सांस्कृतिक संदेशों का प्रचार भी करती है। यह लोकनाट्य पारंपरिक रूप से उत्तर प्रदेश, बिहार, राजस्थान, और हरियाणा जैसे राज्यों में प्रचलित है और ग्रामीण क्षेत्रों में बहुत ही प्रसिद्ध है। नौटंकी का नाम 'नौटंकी' इसलिए पड़ा क्योंकि इसकी प्रस्तुति प्रारंभ में राजा नौटंकी की कथा पर आधारित हुआ करती थी, लेकिन बाद में इस नाम से ही यह संपूर्ण शैली प्रसिद्ध हो गई।

नौटंकी का स्वरूप: नौटंकी में नाट्य, संगीत, और संवाद का महत्वपूर्ण समन्वय होता है। इसकी प्रस्तुति अक्सर रंगीन और विस्तृत वेशभूषा के साथ होती है। इस कला में मुख्यतः धार्मिक कथाएं, ऐतिहासिक घटनाएं, प्रेम कहानियां, और सामाजिक मुद्दों को मंचित किया जाता है। गीत और संगीत नौटंकी के प्रमुख तत्व हैं, जो इसे दर्शकों के बीच और भी मनोरंजक बनाते हैं। इसमें ढोलक, हारमोनियम, नगाड़ा, और बांसुरी जैसे वाद्ययंत्रों का इस्तेमाल किया जाता है, जो पूरे प्रदर्शन को संगीतात्मक बनाते हैं।

नौटंकी का महत्व: नौटंकी ने सदियों से ग्रामीण समाज के लिए मनोरंजन के साथ-साथ शिक्षा का भी कार्य किया है। यह लोक शैली जनता के बीच सामाजिक मुद्दों, नैतिकताओं और धार्मिक मूल्यों को पहुँचाने का सशक्त माध्यम रही है। पहले नौटंकी में जादू-टोना, भूत-प्रेत और पौराणिक कथाएं प्रस्तुत की जाती थीं, लेकिन धीरे-धीरे इसमें आधुनिक सामाजिक समस्याओं को भी प्रमुखता मिलने लगी।

नौटंकी और नृत्य-नाट्य: नौटंकी में भी नृत्य का एक प्रमुख स्थान है, खासकर श्रृंगारिक और हास्य रस से भरपूर दृश्यों में। नृत्य और अभिनय के माध्यम से कलाकार दर्शकों को कथा में बांधते हैं। यह शैली नाट्यशास्त्र की परंपराओं पर आधारित है, लेकिन इसमें लोक तत्वों का अधिक समावेश होता है, जिससे इसे अधिक सहज और आकर्षक बनाया जाता है। इस प्रकार, नौटंकी भारतीय लोक नाट्य परंपरा का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जो आज भी मनोरंजन और सामाजिक जागरूकता का एक सशक्त माध्यम बनी हुई है।

3.2.1.4. रास नृत्य

रास नृत्य भारतीय लोक और धार्मिक परंपराओं का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है, जिसे भगवान श्रीकृष्ण और गोपियों के बीच के प्रेम को दर्शाने वाला नृत्य माना जाता है। यह नृत्य विशेष रूप से उत्तर भारत के ब्रज क्षेत्र, जैसे वृंदावन और मथुरा, में प्रचलित है। रास नृत्य की जड़े पौराणिक कथाओं में हैं, जहाँ इसे श्रीकृष्ण की रासलीला के रूप में जाना जाता है। रास नृत्य की प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें शृंगार रस की प्रधानता होती है, जो प्रेम और भक्ति का सर्वोत्तम रूप मानी जाती है। गोपियों और कृष्ण के बीच यह प्रेमपूर्ण संवाद, नृत्य के माध्यम से व्यक्त किया जाता है। इसका धार्मिक महत्व भी अत्यधिक है, क्योंकि इसे भगवान के साथ आत्मा के दिव्य मिलन का प्रतीक माना जाता है। खासकर वृंदावन में, रासलीला का आयोजन कार्तिक मास में होता है, जहाँ बड़ी संख्या में भक्तगण एकत्र होकर श्रीकृष्ण की लीला का आनंद लेते हैं।

रास नृत्य में शास्त्रीय और लोक संगीत का अद्भुत समन्वय होता है, जिसमें बाँसुरी, ढोलक, और मृदंग जैसे वाद्ययंत्रों का प्रयोग किया जाता है। नृत्य के दौरान गोपियों का शृंगार और उनकी वेशभूषा भी विशेष महत्व रखती है, जो नृत्य की सुंदरता को और अधिक बढ़ा देती है। रास नृत्य मुख्य रूप से दो प्रकार के होते हैं: पहला, महारास, जिसमें वृंदावन में श्रीकृष्ण गोपियों के साथ नृत्य करते हैं, और दूसरा, वल्लभाचार्य संप्रदाय का रास, जो विशेष धार्मिक अनुष्ठानों के अंतर्गत किया जाता है। यह नृत्य केवल कला का एक रूप नहीं है, बल्कि आध्यात्मिक प्रेम और भक्ति को व्यक्त करने का माध्यम है, जो इसे भारतीय सांस्कृतिक धरोहर का एक महत्वपूर्ण अंग बनाता है।

3.2.1.5. नक्काली

नक्काली भारतीय लोकनाट्य परंपरा का एक प्रमुख अंग है, जो मुख्य रूप से उत्तर भारत के ग्रामीण क्षेत्रों में प्रचलित है। इसे नकली या नक्काल भी कहा जाता है। नक्काली में नकल करने वाले कलाकार प्रमुखता से हास्य के माध्यम से सामाजिक

और राजनीतिक मुद्दों पर व्यंग्य करते हैं। यह नाट्य शैली विशेषकर उत्तर प्रदेश, पंजाब, और हरियाणा जैसे राज्यों में लोकप्रिय है। नक्काली की सबसे बड़ी विशेषता इसका हास्य और मिमिक्री पर आधारित होना है। कलाकार किसी व्यक्ति, घटना, या सामाजिक समस्या की नकल करते हैं और उसे मजाकिया तरीके से प्रस्तुत करते हैं। इसके प्रदर्शन में संवादों के साथ-साथ शरीर की हरकतों और मुखकृतियों का विशेष महत्व होता है। आमतौर पर नक्काल किसी जाने-माने व्यक्ति की नकल करता है या फिर समाज में हो रही घटनाओं का व्यंग्यात्मक चित्रण करता है। नक्काली में संगीत और नृत्य का भी एक अहम स्थान है। ढोलक, हारमोनियम, और बांसुरी जैसे वाद्ययंत्रों का उपयोग करके नाट्य प्रदर्शन को और भी जीवंत बनाया जाता है। यह नाट्य शैली मनोरंजन के साथ-साथ समाज के प्रति एक संदेश देने का भी माध्यम है, जहाँ हास्य और व्यंग्य के माध्यम से गंभीर मुद्दों पर प्रकाश डाला जाता है। इस प्रकार, नक्काली भारतीय लोककला की एक समृद्ध शैली है, जो मनोरंजन और सामाजिक जागरूकता दोनों का एक प्रभावी माध्यम है।

3.2.1.6 कुचिपुड़ी

कुचिपुड़ी भारतीय शास्त्रीय नृत्य की एक प्रमुख शैली है, जिसका उद्भव आंध्र प्रदेश के कुचिपुड़ी नामक गाँव से हुआ। यह नृत्य-नाट्य परंपरा में निहित है, जिसका मतलब है कि इसमें नृत्य के साथ-साथ नाटक भी शामिल होता है। कुचिपुड़ी की जड़ें प्राचीन धार्मिक और सांस्कृतिक परंपराओं में गहराई से जुड़ी हैं, और यह पौराणिक कथाओं पर आधारित होती है। यह नृत्य-शैली विशेष रूप से हिंदू देवताओं, विशेषकर भगवान कृष्ण, की लीलाओं को दर्शाने के लिए प्रसिद्ध है। कुचिपुड़ी में न केवल नृत्य होता है, बल्कि इसमें संवाद, गीत, और अभिनय का भी महत्वपूर्ण स्थान होता है। नर्तक और नर्तकियां रंगीन वेशभूषा और आभूषण पहनते हैं, और मंच पर अपने हाव-भाव, मुद्राओं, और पदाघाट (पैरों की गतियों) से कहानी को प्रस्तुत करते हैं। इसमें ताल, लय, और अभिनय के माध्यम से दर्शकों के सामने कथानक को जीवंत किया जाता है। कुचिपुड़ी की एक और विशेषता इसका संवादात्मक रूप है, जहाँ कलाकार नृत्य करते हुए नाट्य संवाद भी बोलते हैं। यह नृत्य-शैली 'नाट्यशास्त्र' के

सिद्धांतों पर आधारित है, और इसमें शारीरिक गतिविधियों के साथ-साथ आत्मिक भावनाओं की प्रस्तुति भी होती है।

कुचिपुड़ी की प्रमुख प्रस्तुतियों में 'भामाकलापम' और 'भागवतम' जैसी नाट्य रचनाएँ शामिल हैं, जो भगवान विष्णु और कृष्ण की लीलाओं को मंचित करती हैं। इसके अलावा, गजेंद्र मोक्षम जैसी कथाएँ भी प्रस्तुत की जाती हैं, जिसमें भगवान विष्णु की कहानी दर्शाई जाती है। कुचिपुड़ी नृत्य कला आज भी प्रासंगिक है और इसे वैश्विक मंचों पर प्रस्तुत किया जाता है। इसके नर्तक और नर्तकियां इस कला को समृद्ध करते हुए इसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिला रहे हैं, जिससे यह भारतीय शास्त्रीय नृत्य शैलियों में एक महत्वपूर्ण स्थान बनाए हुए है।

3.3. प्राचीन भारतीय नाट्य की उत्पत्ति

प्राचीन भारतीय नाटक की उत्पत्ति भारत की समृद्ध सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराओं में गहराई से निहित है। भारतीय नाट्य कला का आरंभ धार्मिक अनुष्ठानों, मिथकों और कहानियों से हुआ, जो प्राचीन भारतीय समाज के धार्मिक और सामुदायिक जीवन का अभिन्न हिस्सा थे। भारतीय नाटकों का औपचारिक विकास संस्कृत नाटक के रूप में हुआ, जिसे विस्तार से भरत मुनि के नाट्यशास्त्र में वर्णित किया गया है। हालांकि, भारतीय नाटक की उत्पत्ति और विकास कई शताब्दियों से धार्मिक, सामाजिक और राजनीतिक संदर्भों से प्रभावित हुई है।

भारतीय नाट्य की धार्मिक और पौराणिक जड़ें

भारतीय नाट्य की धार्मिक नींव स्पष्ट है, क्योंकि इसके प्रारंभिक रूपों का गहरा संबंध अनुष्ठानों और देवताओं की पूजा से था। वेद (1500–500 ई.पू.) जैसे प्राचीन धार्मिक ग्रंथों में भजन, मंत्र और अनुष्ठान होते थे, जिन्हें धार्मिक समारोहों के दौरान नाटकीय रूप में प्रस्तुत किया जाता था। इन अनुष्ठानों में गान, जप और पौराणिक कहानियों

का मंचन होता था, जिसे नाट्य के आरंभिक रूपों का बीज माना जा सकता है। भारतीय नाट्य की कथा परंपरा में रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों का भी महत्वपूर्ण योगदान है। ये महाकाव्य जटिल पात्रों, नैतिक दुविधाओं और नाटकीय संघर्षों से भरे हुए थे, जो प्रदर्शन और कथा कहने के लिए समृद्ध सामग्री प्रदान करते थे। प्रारंभिक समय में लोग इन कहानियों का प्रदर्शन धार्मिक और सांस्कृतिक त्योहारों के दौरान करते थे।

नाट्यशास्त्र: भारतीय नाट्य का मूल ग्रंथ

भारतीय नाटक का औपचारिक रूप से भरत मुनि के नाट्यशास्त्र के निर्माण के साथ विकास हुआ, जो दूसरी शताब्दी ईसा पूर्व से दूसरी शताब्दी ईस्वी के बीच रचा गया था। इस ग्रंथ को षाँचवां वेद भी कहा जाता है, जो नाटकीय सिद्धांत पर एक मूलभूत ग्रंथ है। इसमें अभिनय, मंच कला, परिधान, मेकअप और दर्शकों की भागीदारी जैसे सभी पहलुओं के लिए विस्तृत निर्देश दिए गए हैं।

नाट्यशास्त्र में कहा गया है कि नाटक देवताओं द्वारा मनुष्यों को प्रदान की गई एक कला है। ब्रह्मा ने नाट्य की रचना की, जिसमें चारों वेदों के तत्वकृत् ऋग्वेद से संवाद, सामवेद से संगीत, यजुर्वेद से अभिनय और अथर्ववेद से रसकृत् को मिलाकर इसे मनोरंजन और नैतिक शिक्षा का साधन बनाया। यह कला धार्मिक कथाओं और नैतिक संदेशों को जनसामान्य तक पहुँचाने का एक शक्तिशाली माध्यम थी (भरत, नाट्यशास्त्र)। नाट्यशास्त्र में रस (सौंदर्यबोधक भाव) और भाव (भावनात्मक अवस्थाएँ) का विस्तार से वर्णन किया गया है। भरत के अनुसार, एक सफल नाटक वह है जो दर्शकों के मन में आठ प्रमुख रसों को उत्पन्न कर सके कृशंगार (प्रेम), हास्य (हास्य), करुणा (दया), रौद्र (क्रोध), वीर (वीरता), भयानक (भय), बीभत्स (घृणा) और अद्भुत (आश्चर्य)। इन रसों का निर्माण विभिन्न भावों के संयोजन से होता है, जो अभिनेता अपनी शारीरिक गतिविधियों, चेहरे के हाव-भाव और संवादों के माध्यम से व्यक्त करते हैं।

संस्कृत नाटक और उसका विकास

भारतीय नाटकों का स्वर्ण युग संस्कृत नाटक के उदय से जुड़ा हुआ है, जो पहली शताब्दी ईसा पूर्व से लेकर दसवीं शताब्दी ईस्वी तक फला-फूला। संस्कृत नाटकों के प्रमुख नाटककारों में कालिदास, भास, शूद्रक और भवभूति जैसे महान नाटककार शामिल थे।

कालिदास को महानतम संस्कृत नाटककारों में से एक माना जाता है, जिन्होंने शकुंतला और विक्रमोर्वशीय जैसी उत्कृष्ट कृतियाँ लिखीं। उनका नाटक अभिज्ञानशकुंतलम् (शकुंतला की पहचान) प्राचीन भारतीय साहित्य का एक अद्वितीय उदाहरण है, जिसे दुनिया भर में सराहा गया है। संस्कृत नाटक की विशेषता इसकी काव्य और गद्य का मिश्रण है, जहाँ संवादों के साथ-साथ गीत और काव्य भी होते हैं। इन नाटकों की संरचना नाट्यशास्त्र के सिद्धांतों के अनुसार होती थी, जहाँ नाटककारों का उद्देश्य दर्शकों के मन में विशेष रसों का संचार करना होता था। संस्कृत नाटकों का प्रदर्शन राजदरबारों और सार्वजनिक स्थानों पर किया जाता था, लेकिन संस्कृत भाषा की सीमित समझ के कारण यह केवल उच्च वर्ग तक सीमित रहा।

क्षेत्रीय नाट्य परंपराएँ

संस्कृत नाटक के साथ-साथ, भारत के विभिन्न हिस्सों में स्थानीय भाषाओं और बोलियों में क्षेत्रीय नाट्य परंपराओं का विकास हुआ। ये नाटक रूप अधिक जनसामान्य तक पहुँचे और स्थानीय सांस्कृतिक और सामाजिक मुद्दों को प्रतिबिंबित किया। उदाहरण के लिए, यक्षगान (कर्नाटक), कथकली (केरल) और भवाई (गुजरात) जैसी क्षेत्रीय नाट्य शैलियाँ लोक परंपराओं में गहराई से जुड़ी हैं, लेकिन इनमें नाट्यशास्त्र के सिद्धांतों का भी प्रभाव है। प्राचीन भारतीय नाट्य परंपरा का एक उत्कृष्ट उदाहरण रामलीला है, जो रामायण के विभिन्न प्रसंगों का नाटकीय रूप से मंचन करता है। रामलीला का आयोजन विशेष रूप से दशहरे के दौरान किया जाता है और इसमें नाटक और नृत्य का अद्वितीय मिश्रण होता है। इन प्रस्तुतियों में भारतीय नाट्य कला

की जीवंतता और उसका समाज पर प्रभाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है।

पतन और पुनरुद्धार

दसवीं शताब्दी के आसपास संस्कृत नाट्य कला का पतन शुरू हो गया, जब उत्तर भारत में राजनीतिक अस्थिरता और विदेशी आक्रमणों के कारण राजदरबारों का पतन हुआ। इस्लामी शासन के दौरान हिंदू नाट्य परंपराओं को दबाया गया, जिससे संस्कृत नाटक का महत्व कम हो गया। हालांकि, दक्षिण भारत और अन्य क्षेत्रों में क्षेत्रीय नाट्य परंपराओं ने इस कला को जीवित रखा। 18वीं और 19वीं शताब्दी में ब्रिटिश औपनिवेशिक काल के दौरान, भारतीय नाट्य कला ने पुनरुद्धार का अनुभव किया। भारतीय सुधारकों और राष्ट्रवादियों ने नाट्य कला को सांस्कृतिक पहचान और औपनिवेशिक शासन के प्रतिरोध के साधन के रूप में देखा। इस काल में कलकत्ता और बंबई जैसे बड़े शहरों में भारतीय नाट्य कंपनियों की स्थापना हुई, जिन्होंने पश्चिमी नाट्य तकनीकों को अपनाते हुए भारतीय नाटकों को फिर से जीवित किया।

3.4. नृत्य नाटिकाओं द्वारा विभिन्न कलाकारों का योगदान कथक नृत्य के सन्दर्भ में

कथक, भारत के शास्त्रीय नृत्य रूपों में से एक, अपनी अनूठी विशेषता के लिए जाना जाता है, जो कहानी कहने की कला को जटिल लयबद्ध ताल, सुंदर हाथों की मुद्राओं और चेहरे के भावों के साथ जोड़ता है। समय के साथ, कथक ने काफी विकास किया है, जिसमें प्रदर्शन, कथा और लय के तत्व एक साथ आते हैं। इस नृत्य की उत्पत्ति उत्तर भारत के मंदिरों में हुई थी, जहाँ नर्तक रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्यों की कहानियों को अपने हाव-भाव और मुद्राओं के माध्यम से प्रस्तुत करते थे। मुगलकाल के दौरान, जब यह शाही दरबारों में पहुँचा, तब कथक में फारसी प्रभाव जुड़ा, जिसने इस कला में नई शैली और परिधान को जोड़ा, जिससे इसका

आधुनिक स्वरूप विकसित हुआ। कथक का मूल गुण इसकी लय और कहानी कहने की क्षमता में निहित है। नर्तक अपने चेहरे के हाव-भाव के साथ-साथ सटीक पदचाप, घुमाव और हाथों की मुद्राओं के माध्यम से भावनाएँ और कथाएँ व्यक्त करते हैं। लयबद्ध पैटर्न, जिसे 'ताला' कहा जाता है, कथा में गहराई से बुना जाता है, जहाँ नर्तक अक्सर संगीतकारों के साथ संवाद करते हुए प्रदर्शन करता है। इस ताल और कहानी के समन्वय से नर्तक विभिन्न भावनाओं, जैसे आनंद, भक्ति, क्रोध और दुःख, को प्रकट करते हैं। सदियों से, कलाकारों ने कथक के दायरे का विस्तार किया और इसे विभिन्न सांस्कृतिक और विषयगत तत्वों से समृद्ध किया। आज, कथक एक लचीला और गतिशील नृत्य शैली के रूप में जीवंत है, जहाँ कलाकार पारंपरिक जड़ों को संरक्षित रखते हुए नई संभावनाओं को खोजते हैं। अपनी अभिनव कोरियोग्राफियों और विषयगत प्रस्तुतियों के माध्यम से, वे कथक की कथा-संभावनाओं का विस्तार करते हुए इसे समकालीन कलात्मक अभिव्यक्तियों में भी प्रासंगिक बनाए हुए हैं। सदियों से, कई कलाकारों ने कथक में महत्वपूर्ण योगदान दिया है, विशेष रूप से नृत्य नाटकों के माध्यम से, जहाँ कथा और प्रदर्शन को कुशलता से जोड़ा गया है। इन कलाकारों ने न केवल कथक को जीवित रखा है, बल्कि नई तकनीकों और विषयों को जोड़कर इसकी सीमाओं को भी आगे बढ़ाया है, खासकर नृत्य नाटकों के माध्यम से।

3.4.1.

नवाब वाजिद अली शाह



नवाब वाजिद अली शाह का कथक नृत्य और विशेष रूप से नृत्य-नाटिकाओं में योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण है। अवध के अंतिम शासक के रूप में, नवाब वाजिद अली शाह न केवल एक कुशल शासक थे, बल्कि एक महान सांस्कृतिक संरक्षक भी थे, जिनका कला, संगीत और नृत्य में गहरा रुझान था। उन्होंने विशेष रूप से कथक नृत्य को समृद्ध और लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, और इसे दरबार में एक प्रमुख शास्त्रीय कला के रूप में स्थापित किया। नृत्य-नाटिकाओं के संदर्भ में, वाजिद अली शाह की सबसे प्रसिद्ध कृति राधा-कृष्ण लीला है, जिसे उन्होंने खुद लिखा और निर्देशित किया। इस नृत्य-नाटिका में भगवान कृष्ण और राधा के प्रेम को प्रस्तुत किया गया था, और इसे कथक के माध्यम से जीवंत किया गया। नवाब ने इस नाटिका के लिए पारंपरिक कथक के पदचाप, मुद्राओं और भावनाओं का प्रयोग किया, जिससे कथक नृत्य को नाट्य के रूप में स्थापित करने में मदद मिली। उन्होंने रचनात्मकता के साथ नृत्य और नाटक का संयोजन किया, जो उस समय

एक अनूठी पहल थी। इसके अलावा, नवाब वाजिद अली शाह ने “दुमरी” शैली को कथक नृत्य के साथ जोड़ा, जिससे कथक नृत्य-नाट्य में और भी अधिक गहराई और भावना आई। दुमरी की लय और भावनाओं को कथक के पैरों की गति और हाव-भाव के साथ जोड़कर, नवाब ने कथक को एक नए आयाम तक पहुँचाया, जहाँ नृत्य के माध्यम से कहानियाँ सुनाई जाने लगीं। उन्होंने कथक नृत्य-नाटिकाओं के मंचन के लिए अपने दरबार में विशेष संरचना और स्थान उपलब्ध कराए, जहाँ संगीत, नृत्य और नाट्य का संगम होता था। उनकी यह पहल न केवल दरबारी संस्कृति को समृद्ध कर रही थी, बल्कि नृत्य-नाटिका के माध्यम से कथक के व्यापक विकास का मार्ग भी प्रशस्त कर रही थी। नवाब वाजिद अली शाह की इन कलात्मक रचनाओं ने कथक को एक प्रतिष्ठित शास्त्रीय नृत्य शैली के रूप में स्थायी पहचान दी और कथक में नृत्य-नाट्य की समृद्ध परंपरा का सूत्रपात किया।

3.4.2.

उदय शंकर

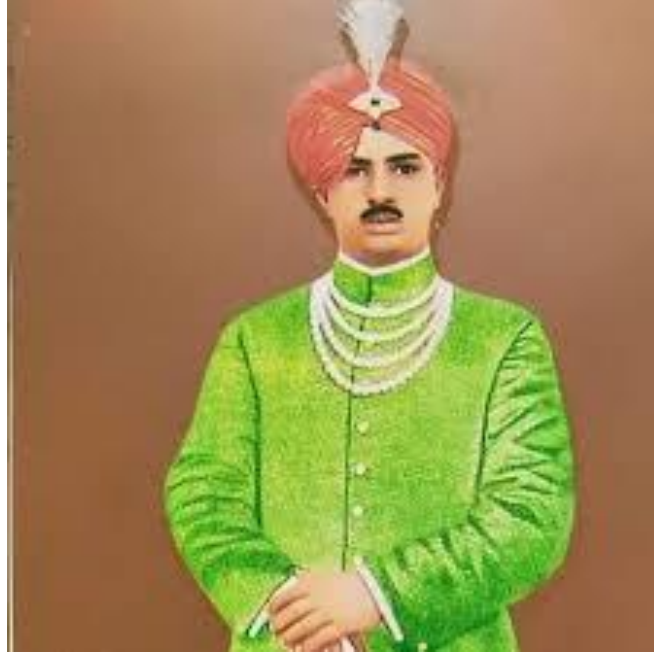


उदय शंकर ने नृत्य-नाटिकाओं के माध्यम से भारतीय नृत्य को एक नई पहचान दी और इसे समकालीन दर्शकों के लिए प्रासंगिक बनाया। उनकी नृत्य-नाटिकाएं पौराणिक, सांस्कृतिक, और सामाजिक विषयों को लेकर बनाई गईं, जिनमें शास्त्रीय नृत्य और नाट्य का अनूठा समन्वय था। उदाहरण के लिए, उनकी नृत्य-नाटिका षशिव-पार्वती में भगवान शिव और पार्वती की कथा को प्रस्तुत किया गया, जिसमें शास्त्रीय नृत्य शैलियों का अद्भुत प्रयोग किया गया। इसके अलावा, उदय शंकर ने “लैबोर एंड मशीन” जैसी नृत्य-नाटिकाओं के माध्यम से समकालीन और सामाजिक मुद्दों को भी नृत्य के माध्यम से प्रस्तुत किया। इस नृत्य-नाटिका में उन्होंने मशीनों के उदय और श्रमिक वर्ग के संघर्ष को दर्शाया, जो उस समय के सामाजिक परिवर्तनों का प्रतीक था। उनकी नृत्य-नाटिकाएं पारंपरिक कथानक से आगे बढ़कर प्रयोगात्मक नृत्य-शैलियों पर आधारित थीं। उनकी फिल्म "कल्पना" जो पूरी तरह से नृत्य और नाटक पर आधारित थी, इसका उत्कृष्ट उदाहरण है। यह फिल्म भारतीय सिनेमा में

नृत्य पर आधारित एक अनूठा प्रयोग थी, जिसमें नृत्य के माध्यम से विचार और संवेदनाओं को प्रस्तुत किया गया। उदय शंकर की नृत्य-नाटिकाओं में केवल नृत्य और कहानी तक सीमित नहीं रहा गया, बल्कि उन्होंने मंच की संरचना, संगीत, और वेशभूषा को भी बहुत महत्व दिया। उनकी नाटिकाएं न केवल प्रदर्शन थीं, बल्कि एक संपूर्ण दृश्य और श्रव्य अनुभव थीं, जो दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देती थीं। इस प्रकार, उदय शंकर ने नृत्य-नाटिकाओं के माध्यम से भारतीय नृत्य को एक नई दिशा दी और इसे वैश्विक मंच पर प्रतिष्ठित किया।

3.4.3.

राजा चक्रधर सिंह

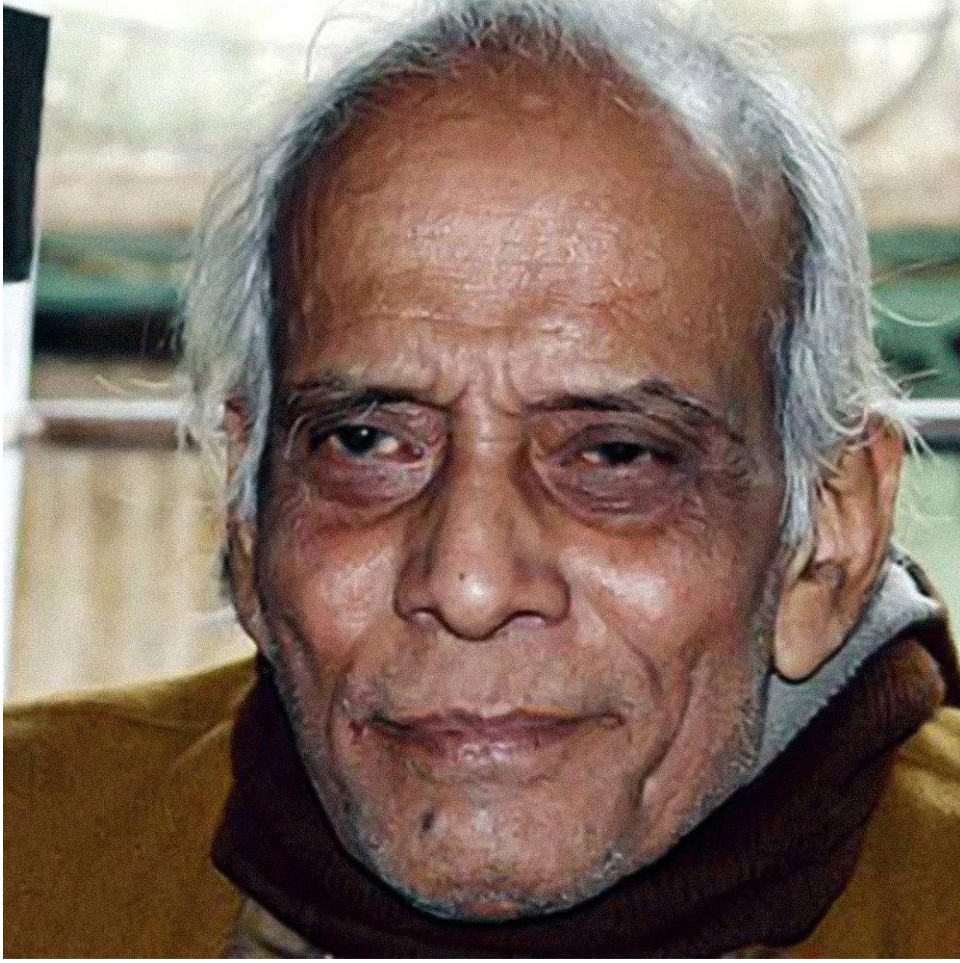


राजा चक्रधर सिंह का योगदान भारतीय नृत्य-नाट्य, विशेषकर कथक में, बेहद महत्वपूर्ण रहा है। उन्होंने नृत्य-नाटकों के माध्यम से शास्त्रीय नृत्य और संगीत को समृद्ध किया। उनका सबसे बड़ा योगदान यह था कि उन्होंने कथक नृत्य को एक संरचनात्मक रूप दिया, जिसे नृत्य-नाटकों के रूप में प्रस्तुत किया जा सके। उनके प्रयासों ने न केवल कथक की तकनीक को उन्नत किया, बल्कि इस नृत्य शैली में कहानी कहने की परंपरा को भी मजबूत किया। राजा चक्रधर सिंह ने रायगढ़ घराने की स्थापना की, जो कथक के सबसे प्रमुख घरानों में से एक है। उन्होंने नृत्य और नाट्य को एक साथ जोड़कर शास्त्रीय नृत्य-नाट्य का एक नया स्वरूप विकसित किया। उनकी नृत्य-नाटिकाएं धार्मिक और पौराणिक कथाओं पर आधारित होती थीं, जिसमें कथक की तकनीकी जटिलताओं का प्रदर्शन होता था। राजा चक्रधर सिंह ने कवित्त, तिहाई, परन, और अन्य ताल रचनाओं का प्रयोग कर कथक नृत्य-नाट्य को समृद्ध बनाया। उनकी नृत्य-नाटिकाएं केवल नृत्य का प्रदर्शन नहीं थीं, बल्कि उन्होंने कथा और नृत्य के माध्यम से सांस्कृतिक और धार्मिक संदेशों का प्रसार किया। उनकी सबसे प्रमुख उपलब्धि यह रही कि उन्होंने नृत्य-नाट्य के लिए एक अनुकूल वातावरण तैयार किया, जहाँ कलाकार अपनी कला का प्रदर्शन कर सकते थे और इसे और

अधिक उन्नत बना सकते थे। उनके शासनकाल में रायगढ़ एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक केंद्र बना, जहाँ नृत्य-नाट्य का संरक्षण और विकास हुआ। उनके योगदान से न केवल कथक को एक नई दिशा मिली, बल्कि इसने नृत्य-नाट्य की परंपरा को भी समृद्ध किया, जो आज भी रायगढ़ घराने में देखी जाती है। राजा चक्रधर सिंह ने अपनी नृत्य-नाटिकाओं के माध्यम से भारतीय शास्त्रीय नृत्य को संरक्षित किया और इसे जन-जन तक पहुँचाया, जो उनके सांस्कृतिक धरोहर को जीवित रखने की दिशा में एक महान कदम था।

3.4.4.

लच्छू महाराज



लच्छू महाराज, जिन्हें पंडित लक्ष्मीनारायण सिंह के नाम से भी जाना जाता है, भारतीय शास्त्रीय नृत्य कथक के महान गुरु और कलाकार थे। उनका योगदान विशेष रूप से कथक नृत्य-नाट्य के क्षेत्र में अद्वितीय रहा है। लच्छू महाराज का जन्म वाराणसी के प्रसिद्ध कथक परिवार में हुआ था, और वे लखनऊ घराना के प्रमुख कथक नर्तक थे। उन्होंने कथक नृत्य को नाट्य और सिनेमा के माध्यम से एक व्यापक दर्शक वर्ग तक पहुँचाने का महत्वपूर्ण कार्य किया।

प्रमुख योगदान:

1. कथक को सिनेमा में प्रस्तुत करना: लच्छू महाराज का सबसे महत्वपूर्ण योगदान

भारतीय सिनेमा में कथक नृत्य का सफलतापूर्वक प्रवेश कराना था। उन्होंने कई बॉलीवुड फिल्मों में कोरियोग्राफी की, जिनमें प्रमुख रूप से “मुगल-ए-आजम” और “पाकीजा” जैसी फिल्मों के नृत्य दृश्य शामिल हैं। इन फिल्मों में उनके नृत्य निर्देशन ने कथक नृत्य को न केवल भारत में बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी ख्याति दिलाई।

2. नृत्य-नाट्य में योगदान: लच्छू महाराज ने कथक में नाटकीय तत्वों को जोड़कर इसे और अधिक अभिव्यक्तिपूर्ण बनाया। उन्होंने कथक नृत्य के माध्यम से कई पौराणिक और धार्मिक कथाओं को मंचित किया। उनकी नृत्य शैली में अभिनय और अंग प्रदर्शन का विशेष महत्व था, जिसके माध्यम से उन्होंने कथक को एक नाट्य रूप दिया। उनके नृत्य में भगवान कृष्ण और राधा की लीलाओं को दिखाने वाली प्रस्तुतियां प्रसिद्ध हैं, जिनमें उन्होंने संगीत, अभिनय और नृत्य का अद्भुत संयोजन प्रस्तुत किया।

3. शास्त्रीय परंपरा को जीवित रखना: लच्छू महाराज ने पारंपरिक कथक की शास्त्रीयता को बनाए रखते हुए इसे नए संदर्भों में प्रस्तुत किया। उन्होंने अपने नृत्य-नाटकों के माध्यम से कथक नृत्य की प्राचीन परंपराओं को संरक्षित किया और उन्हें समकालीन दर्शकों के लिए प्रस्तुत किया। उन्होंने कथक के विभिन्न तत्वों जैसे ताल, लय, और रसायन पर विशेष ध्यान दिया, जिससे यह नृत्य शास्त्रीय होते हुए भी दर्शकों के लिए आकर्षक बना।

4. शिक्षा और प्रशिक्षण: लच्छू महाराज ने कई प्रसिद्ध कथक नर्तकों को प्रशिक्षित किया, जो आगे चलकर कथक नृत्य को नई ऊंचाइयों तक ले गए। उन्होंने कथक को जन-जन तक पहुँचाने का कार्य किया, जिससे यह नृत्य शास्त्रीय कला के साथ-साथ लोक कला के रूप में भी लोकप्रिय हो गया। लच्छू महाराज का योगदान कथक नृत्य और नृत्य-नाट्य के क्षेत्र में सदैव स्मरणीय रहेगा। उनके द्वारा प्रस्तुत कथक नृत्य की शैलियों और उनकी नृत्य-नाटिकाओं ने इस शास्त्रीय नृत्य रूप को नई ऊंचाइयों तक पहुँचाया और इसे सिनेमा और मंच पर लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

3.5. आधुनिक काल के कलाकारों का योगदान

आधुनिक युग में कथक ने तकनीकी नवाचार और समकालीन विषयों के साथ महत्वपूर्ण परिवर्तन देखा है, खासकर नृत्य-नाटकों के संदर्भ में। डिजिटल प्रोजेक्शन, मल्टीमीडिया तत्वों और समकालीन संगीत के फ्यूजन जैसी तकनीकों ने इस कला को नई ऊंचाइयों पर पहुंचाया है। इन तकनीकी साधनों ने कथक को और भी अधिक आकर्षक और प्रभावशाली बनाया है, जिससे यह न केवल अपनी पारंपरिक जड़ों को बनाए रखता है, बल्कि नई पीढ़ियों के लिए भी प्रासंगिक बन गया है। डिजिटल प्रोजेक्शन का उपयोग कथक नृत्य-नाटकों में विभिन्न परिवेश और भावनात्मक स्थितियों को जीवंत बनाने के लिए किया जाता है। चाहे पौराणिक कथाओं पर आधारित हो या आधुनिक कहानियों पर, प्रोजेक्शन के माध्यम से मंच पर एक गतिशील पृष्ठभूमि बनाई जा सकती है, जो प्रदर्शन की गहराई को बढ़ाती है। यह तकनीक सेट की जटिलता को कम करती है और नृत्य के प्रभाव को और अधिक सशक्त बनाती है। मल्टीमीडिया तत्वों का समावेश, जैसे वीडियो, ध्वनि प्रभाव, और लाइटिंग, कथक नृत्य-नाटकों में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह तत्व कथा और भावनाओं को गहराई से व्यक्त करने में मदद करते हैं। लाइटिंग का उपयोग नृत्य में विभिन्न भावनाओं के बीच संक्रमण को सहज बनाता है, जिससे नृत्य की दृश्यता और प्रभाव बढ़ जाता है। समकालीन संगीत का फ्यूजन कथक को आधुनिक दर्शकों के साथ जोड़ने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। पारंपरिक संगीत के साथ आधुनिक संगीत का समन्वय न केवल कथक की लय को बरकरार रखता है, बल्कि इसे और अधिक ताजगी और संवेदनशीलता प्रदान करता है, जिससे यह कला रूप अधिक प्रभावशाली और व्यापक हो जाता है। इन तकनीकी नवाचारों के माध्यम से कथक न केवल आधुनिक बन गया है, बल्कि यह अपनी पारंपरिक शास्त्रीयता को भी बनाए रखता है। तकनीक के साथ कथक का यह सहज समावेश नृत्य को अधिक परिष्कृत और बहुआयामी बनाने में मदद करता है, जिससे यह कला 21वीं सदी में भी प्रासंगिक और जीवंत बनी हुई है।

3.5.1.

पंडित बिरजू महाराज



1938 में जन्मे पंडित बिरजू महाराज, कथक के प्रमुख कलाकारों में से एक हैं और लखनऊ के कलक-बिंदादिन घराने के प्रतिनिधि हैं। कथक में उनकी महारत न केवल उनकी तकनीकी कुशलता में है, बल्कि कहानियों को नृत्य के माध्यम से प्रस्तुत करने की उनकी अद्वितीय क्षमता में भी है। कथक में उनका सबसे बड़ा योगदान नृत्य-नाटकों के माध्यम से इसकी पारंपरिकता को पुनर्जीवित और संरक्षित करना रहा है। उनके नृत्य-नाटकों, जैसे ष्कृष्ण कथा और ष्कथा रघुनाथ की, में भगवान कृष्ण और भगवान राम के जीवन के प्रसंगों को चित्रित किया गया है। इन नृत्य-नाटकों में उन्होंने जटिल पदचाप, भावपूर्ण अभिनय, और नवाचारी कथा कहने की कला का उपयोग किया। हाथों की मुद्राओं, चेहरे के भावों और लयबद्ध आंदोलनों के माध्यम से गहरी भावनाओं को व्यक्त करने की उनकी क्षमता ने दर्शकों को कथाओं के साथ गहराई से जोड़ा। इन प्रस्तुतियों में उन्होंने सूत्रधार और कोरस का भी इस्तेमाल किया, जो कथा को आरंभ से अंत तक दर्शकों के लिए और भी स्पष्ट और आनंदमयी बनाते थे। इस प्रकार के नाटक-प्रस्तुतियों के माध्यम से कथक को और भी सजीव और आकर्षक बनाया गया। पंडित बिरजू महाराज ने कथक की पारंपरिक जड़ों को बनाए रखते हुए आधुनिक तकनीकों और थीम्स को भी अपनाया। उनके नृत्य-नाटकों जैसे शतरंज के खिलाड़ी और कथक की कहानी में सामाजिक और ऐतिहासिक विषयों का समावेश था, जिससे कथक को एक नया आयाम मिला और यह समकालीन मुद्दों को प्रस्तुत करने का माध्यम बना। उन्होंने अपने नृत्य-नाटकों में फ्यूजन म्यूजिक का भी प्रयोग किया, जिसमें उन्होंने हिंदुस्तानी शास्त्रीय संगीत, गजल और ठुमरी का उपयोग किया। इससे कथक की प्रस्तुतियों को और अधिक विविध और गहराई वाला बना दिया। उन्होंने प्रकाश और छाया प्रभावों का भी उपयोग किया, जो नृत्य नाटकों को और अधिक दर्शनीय और भावनात्मक रूप से संवेदनशील बना देता था।

पंडित बिरजू महाराज ने न केवल मंच पर बल्कि भारतीय सिनेमा में भी कथक को प्रस्तुत किया। उनकी कोरियोग्राफी, जैसे ष्देवदास और बाजीराव मस्तानी, ने कथक को एक अंतरराष्ट्रीय दर्शकों के सामने लाया। इन फिल्मों में कथक आधारित नृत्य-नाट्य में जटिल भावनाओं और कथा को प्रदर्शित किया गया, जिसमें उन्होंने

मुखाभिनय, पदचाप और शरीर की मुद्राओं का प्रभावशाली उपयोग किया।

फिल्मों और सिनेमा के माध्यम से पंडित बिरजू महाराज ने कथक को पारंपरिक दायरे से बाहर लाकर एक व्यापक दर्शक वर्ग के सामने प्रस्तुत किया। इस प्रक्रिया में उन्होंने कथक को एक ऐसा मंच प्रदान किया, जिससे यह शास्त्रीय और लोकप्रिय दोनों ही रूपों में प्रचलित हो गया।

3.5.2.

गुरु शोवना नारायण



गुरु शोवना नारायण का भारतीय शास्त्रीय नृत्य, विशेषकर कथक, में योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण है। उन्होंने कथक को न केवल उसकी पारंपरिक सीमाओं में बनाए रखा, बल्कि इसे समकालीन मुद्दों और तकनीकों के साथ जोड़कर नया जीवन दिया। उनके नृत्य में भाव, लय और ताल का अद्वितीय समन्वय देखने को मिलता है, जो उन्हें कथक की दुनिया में एक अलग पहचान दिलाता है। शोवना नारायण की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने कथक को एक संवादात्मक माध्यम के रूप में प्रस्तुत किया, जिसके माध्यम से सामाजिक मुद्दों को प्रभावशाली तरीके से उठाया गया। शोवना नारायण ने कथक का उपयोग केवल एक कला के रूप में नहीं किया, बल्कि इसे सामाजिक जागरूकता का एक सशक्त साधन भी बनाया। उनके नृत्य-नाटकों में नारी सशक्तिकरण, लिंग भेदभाव, मानवाधिकार, और पर्यावरण संरक्षण जैसे विषय प्रमुख रूप से दिखाई देते हैं। उदाहरण के लिए, उनकी नृत्य-नाटिका “कदम्बरी द स्टोरी ऑफ ए म्यूज” में उन्होंने रवींद्रनाथ ठाकुर की भाभी कदम्बरी देवी के जीवन को मंच पर प्रस्तुत किया और इस प्रस्तुति के माध्यम से समाज में महिलाओं की स्थिति को उजागर किया। इस तरह के सामाजिक मुद्दों पर आधारित नृत्य-नाटिकाएं दर्शकों को न केवल आकर्षित करती हैं, बल्कि उन्हें सोचने पर भी मजबूर करती हैं। शोवना नारायण ने कथक के प्रस्तुतीकरण में भी कई नवाचार किए। उन्होंने अपने नृत्य-नाटकों में मल्टीमीडिया तत्वों, ध्वनि प्रभावों, और आधुनिक प्रकाश व्यवस्था का प्रयोग किया, जिससे उनकी प्रस्तुतियां और अधिक दर्शनीय बन गईं। उनका नृत्य केवल पारंपरिक कथक तक सीमित नहीं रहा, बल्कि इसमें आधुनिक तत्वों का समावेश हुआ, जिससे नृत्य को एक समकालीन दृष्टिकोण मिला। उनके नृत्य-नाटकों में विस्तृत सेट, परिधान और मंच सज्जा का विशेष ध्यान रखा जाता था, जिससे दर्शकों के लिए यह एक समग्र दृश्य और श्रवण अनुभव बन जाता था। शोवना नारायण ने पारंपरिक कथक के साथ-साथ आधुनिक संगीत और नृत्य शैलियों को भी अपने नृत्य में शामिल किया। उनके नृत्य-नाटकों में शास्त्रीय कथक की लय के साथ-साथ आधुनिक संगीत का भी समन्वय होता था, जिससे यह नृत्य रूप समकालीन दर्शकों के लिए भी प्रासंगिक बनता गया। उदाहरण के लिए, उनकी प्रस्तुति ‘मीरा’ में उन्होंने संत मीरा बाई के जीवन को समकालीन संदर्भ में प्रस्तुत

किया, जिसमें भक्ति, नारी सशक्तिकरण और संघर्ष के विषयों को उठाया गया। इस प्रकार, उन्होंने पारंपरिक कथाओं को आधुनिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया, जिससे कथक को नए आयाम मिले। शोवना नारायण ने कथक को केवल एक नृत्य कला के रूप में नहीं देखा, बल्कि इसे एक संवाद और सांस्कृतिक आदान-प्रदान का माध्यम बनाया। उनके नृत्य-नाटकों में कथक के साथ अन्य नृत्य शैलियों, जैसे फ्लेमिंगो, बैले और समकालीन नृत्य, का समन्वय देखने को मिला। उनका नृत्य-नाट्य 'इन सर्च ऑफ द गॉडसेस' इसका एक उत्कृष्ट उदाहरण है, जिसमें उन्होंने भारतीय कथक और स्पैनिश फ्लेमिंगो को एक साथ मिलाया। इस प्रकार के सांस्कृतिक संवाद ने कथक की प्रासंगिकता को वैश्विक स्तर पर स्थापित किया और इसे एक बहु-सांस्कृतिक मंच प्रदान किया। शिक्षा के क्षेत्र में भी शोवना नारायण का योगदान उल्लेखनीय रहा है। उन्होंने कथक नृत्य की शिक्षा देकर एक नई पीढ़ी को प्रशिक्षित किया, जिससे यह कला रूप समय के साथ और अधिक समृद्ध हुआ। उनके शिक्षण के माध्यम से कई नए कलाकारों को कथक सीखने और इसे आगे बढ़ाने का अवसर मिला। इसके अलावा, उन्होंने भारतीय और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर कथक का प्रसार किया, जिससे यह नृत्य रूप वैश्विक स्तर पर भी मान्यता प्राप्त कर सका। शोवना नारायण ने कथक को एक संवादात्मक माध्यम के रूप में प्रस्तुत कर इसे समकालीन मुद्दों से जोड़ा और इसे एक नया जीवन दिया। उनके नृत्य-नाटकों ने कथक को केवल एक पारंपरिक नृत्य रूप से बाहर निकालकर एक सामाजिक और सांस्कृतिक मंच के रूप में प्रस्तुत किया। उनके नवाचार, समकालीन दृष्टिकोण, और कथक के माध्यम से सामाजिक जागरूकता फैलाने के उनके प्रयासों ने इस शास्त्रीय कला रूप को नए आयाम दिए और इसे आधुनिक युग में प्रासंगिक बनाए रखा।

गुरु शोवना नारायण जी द्वारा प्रस्तुत की गई नृत्य नाटिकाओं को देश-विदेश में अत्यधिक सराहना और प्रशंसा प्राप्त हुई है। यह कहना बिल्कुल गलत नहीं होगा कि उनके प्रयासों ने कथक नृत्य के प्रचार-प्रसार में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया है। शोवना जी ने कई नृत्य नाटिकाओं का निर्देशन भी स्वयं किया, और इन प्रस्तुतियों के माध्यम से उन्होंने कथक नृत्य को एक उच्चतम स्तर पर पहुँचाया, जिससे इसकी ख्याति व्यापक रूप से फैली। गुरु शोवना नारायण के प्रमुख नृत्य नाटकों की वर्षवार

सूची:-

वर्ष	शीर्षक	संक्षिप्त विवरण
1973	गालिब की दिल्ली	गालिब और मीर तकी मीर की उर्दू शायरी के माध्यम से धार्मिक सद्भाव पर आधारित।
1973	ओमर खय्याम	साधना बोस को समर्पित, सूफी दर्शन को ओमर खय्याम की शायरी के माध्यम से व्यक्त किया।
1979	उमंग: बसंत	युवाओं, नवविवाहितों और वृद्धों के दृष्टिकोण से बसंत का उत्सव।
1980	नेय: बांसुरी	रुमी की पंक्तियों और पारंपरिक लोक संगीत को मिलाकर सूफी और वैष्णव विषयों का समावेश।
1980	इशरत-ए-फर्दा	कबीर, लल देद, और राबिया-अल-बसरा जैसे

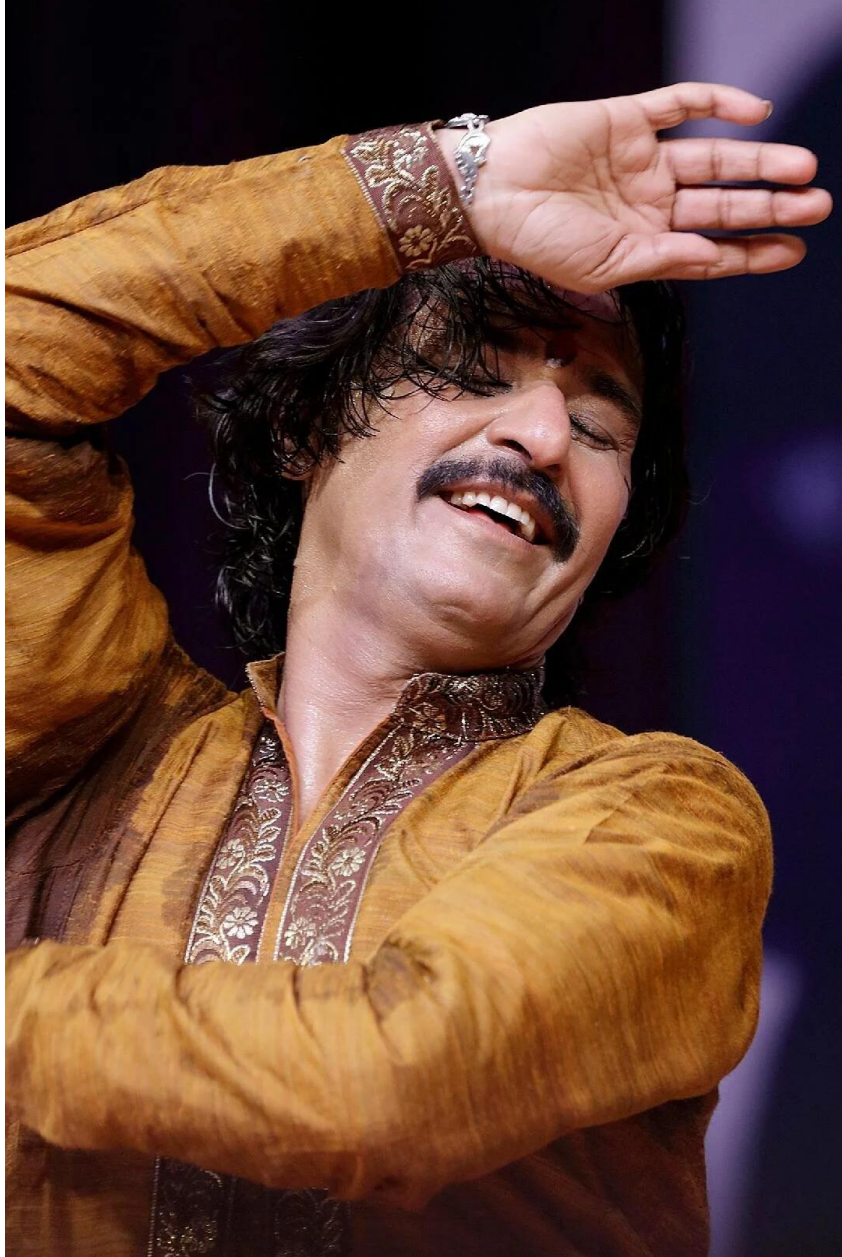
		कवियों की कविताओं का मिश्रण, सूफी और हिंदू रहस्यवाद को प्रदर्शित किया।
1996	शकुंतला	मैथिली शरण गुप्त के काम पर आधारित, शकुंतला की भावनात्मक यात्रा का एकल प्रदर्शन।
2002	कुतुब के रंग	भारतीय और स्पेनिश सहयोग, जिसमें कथक और फ्लेमिंगो का संगम, सांस्कृतिक सामंजस्य का प्रतीक।
2013	जहाँआरा	ऐतिहासिक पात्र जहाँआरा के माध्यम से महिला सशक्तिकरण को रेखांकित किया, स्वतंत्रता और शक्ति के विषय पर केंद्रित।
2013	अष्ट नायिका	भारतीय परंपरा में प्रेम के आठ अवस्थाओं का प्रदर्शन, जिसमें प्रत्येक का अलग ताल और राग से प्रतीकात्मकता।

2018	संगच्छध्वम्रु एकता और शांति का नृत्य	पांच भारतीय शास्त्रीय नृत्य शैलियों के साथ वेदिक मंत्रों के माध्यम से एकता और शांति को बढ़ावा देता एक सहयोगी नृत्य। ⁹¹
------	---	--

⁹¹ Department of Performing arts, Amity University, Noida, Dr. Shubham K. Phone Interview . 30 Aug. 2024.

3.5.3.

पंडित राजेंद्र गंगानी



पंडित राजेंद्र गंगानी भारतीय शास्त्रीय नृत्य, विशेष रूप से कथक के क्षेत्र में एक प्रतिष्ठित नाम हैं। वह कथक के जयपुर घराने से जुड़े हुए हैं और इस घराने की विशिष्टताओं को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाने में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। पंडित राजेंद्र गंगानी का जन्म कथक के एक समर्पित परिवार में हुआ था, जहाँ उन्होंने कथक की शिक्षा अपने पिता और गुरु, पंडित कुंवर श्याम गंगानी से प्राप्त की। उनके नृत्य में जयपुर घराने की जटिल लयकारी, अभिव्यक्ति की गहराई, और

सटीक पदचाप का विशेष स्थान है, जो उनकी शैली को अद्वितीय बनाता है। पंडित राजेंद्र गंगानी का कथक में योगदान बहुआयामी है। सबसे पहले, उन्होंने कथक की शुद्धता को बनाए रखते हुए इसे नई पीढ़ी तक पहुँचाने का काम किया है। उन्होंने कई नृत्य-नाटिकाओं का निर्देशन और प्रस्तुति की है, जिसमें शास्त्रीय कथक की जड़ों को बनाए रखते हुए इसे आधुनिक दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया है। उनके नृत्य में पौराणिक और धार्मिक कथाओं का समावेश होता है, जिसमें शास्त्रीय संगीत और ताल का गहरा संबंध होता है। उनके नृत्य नाटकों में महाभारत, रामायण और कृष्ण लीला जैसी कहानियों को प्रस्तुत किया जाता है, जहाँ कथक के जटिल तत्वों को गहरी भावनाओं और अभिनय के माध्यम से दर्शाया जाता है। उनकी शिक्षा के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण योगदान रहा है। वह नई दिल्ली स्थित कथक केंद्र में एक प्रमुख प्रशिक्षक रहे हैं, जहाँ उन्होंने कई शिष्यों को प्रशिक्षण दिया है। उनके शिष्यों ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाई है। उनकी शिक्षा का एक प्रमुख पहलू यह है कि वे शास्त्रीय कथक के शुद्ध स्वरूप को संरक्षित करते हुए इसे सरल और सहज तरीके से प्रस्तुत करने की कोशिश करते हैं, जिससे यह कला अधिक व्यापक दर्शकों तक पहुँच सके। पंडित राजेंद्र गंगानी ने भारत के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय मंचों पर भी कथक का प्रचार किया है। उन्होंने कई देशों में कथक का प्रदर्शन किया और शास्त्रीय भारतीय नृत्य की सुंदरता और जटिलता को वैश्विक दर्शकों तक पहुँचाया। उनकी प्रस्तुतियों में कथक के न केवल तकनीकी पक्ष को महत्व दिया जाता है, बल्कि इसमें शामिल गहरी भावनाओं और कथा-प्रस्तुति को भी दर्शकों के सामने प्रभावशाली तरीके से प्रस्तुत किया जाता है। उनकी नृत्य शैली में घुंघरुओं की सटीकता, लयकारी और ताल की जटिलताएं कथक की मौलिकता को दर्शाती हैं। कुल मिलाकर, पंडित राजेंद्र गंगानी ने कथक के क्षेत्र में एक विशेष स्थान बनाया है। उन्होंने इस शास्त्रीय नृत्य रूप को संरक्षित किया और इसे वैश्विक मंच पर प्रस्तुत किया। उनके नृत्य-नाटकों और शिक्षण ने कथक की परंपरा को जीवित रखा और इसे नई पीढ़ी तक पहुँचाने का महत्वपूर्ण कार्य किया। पंडित राजेंद्र गंगानी जी द्वारा प्रस्तुत की गई नृत्य नाटिकाओं को देश-विदेश में अत्यधिक सराहना और प्रशंसा प्राप्त हुई है। यह कहना बिल्कुल गलत नहीं होगा कि उनके प्रयासों ने कथक नृत्य के प्रचार-प्रसार में एक महत्वपूर्ण योगदान दिया है। पंडित जी ने कई नृत्य

नाटिकाओं का निर्देशन भी स्वयं किया, और इन प्रस्तुतियों के माध्यम से कथक नृत्य को एक उत्कृष्ट स्तर पर पहुँचाया, जिससे इसकी ख्याति व्यापक रूप से फैली। उनकी प्रमुख नृत्य नाटिकाओं की सूची कुछ इस प्रकार है:-

नृत्य नाटक का नाम	विषय
नृत्यरूपा	कथक की सौंदर्यशास्त्र पर आधारित नाट्य प्रस्तुति
सीता के राम	रामायण पर आधारित नाटक
परम भक्त	महात्मा गांधी के जीवन और विचारों पर आधारित नाटक
छलक	राजस्थानी संस्कृति पर आधारित नाट्य प्रस्तुति
वेदना	ग्लोबल वार्मिंग के मुद्दे पर आधारित नाटक
चतुरंग	कथक के चार प्रमुख शुद्ध तकनीकों पर आधारित नाटक ⁹²

⁹² Gangani, Rajendra. Personal Interview . 11 Apr. 2020.

3.5.4.

शोभा कोसर



शोभा कोसर भारतीय शास्त्रीय नृत्य, विशेष रूप से कथक, की एक प्रमुख हस्ती हैं। उन्होंने कथक के प्रचार और संरक्षण में अत्यधिक योगदान दिया है और इसे एक व्यापक दर्शक वर्ग तक पहुँचाने के लिए निरंतर कार्य किया है। उनके जीवन का अधिकांश हिस्सा कथक के प्रति समर्पित रहा है, और उन्होंने नृत्य को न केवल अपनी कला के रूप में अपनाया, बल्कि इसे कई पीढ़ियों तक पहुँचाया। उनका प्रयास

रहा है कि कथक की शुद्धता और पारंपरिक स्वरूप को संरक्षित किया जाए, साथ ही इसे नई पीढ़ी के लिए भी आकर्षक और सुलभ बनाया जाए। शोभा कोसर की कथक यात्रा बचपन में ही शुरू हो गई थी, जब उन्होंने नृत्य के प्रति अपनी गहरी रुचि दिखाई। उन्होंने जयपुर घराने की पारंपरिक शैली में शिक्षा प्राप्त की और अपनी कला में निपुणता हासिल की। उन्होंने अपने गुरु श्री कर्म नारायण से कथक के गहन तत्वों को सीखा और इसे अपनी प्रस्तुतियों में जीवंत किया। उनकी नृत्य शैली में जयपुर घराने की जटिल लयकारी और सटीक पदचाप का विशेष महत्व है, जिसे उन्होंने अपने शिष्यों को भी सिखाया। शिक्षा के क्षेत्र में शोभा कोसर का योगदान अत्यधिक महत्वपूर्ण रहा है। वह चंडीगढ़ स्थित प्राचीन कला केंद्र की प्रिंसिपल और डायरेक्टर हैं, जहाँ उन्होंने सैकड़ों छात्रों को कथक नृत्य की शिक्षा दी है। उनके शिक्षण से कई शिष्य आज कथक में प्रतिष्ठित स्थान प्राप्त कर चुके हैं। उन्होंने कथक की शिक्षा को समर्पित रहकर यह सुनिश्चित किया कि यह शास्त्रीय नृत्य कला पीढ़ी दर पीढ़ी संरक्षित रहे और इसका प्रसार होता रहे। शोभा कोसर ने न केवल भारत में बल्कि विदेशों में भी कथक का प्रदर्शन किया है। उनकी प्रस्तुतियों में कथक की जटिल लयकारी, भाव-प्रदर्शन, और तकनीकी दक्षता को दर्शाया गया है, जिससे उन्होंने अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी कथक को पहचान दिलाई। उन्होंने कई देशों में अपने नृत्य का प्रदर्शन कर भारतीय शास्त्रीय नृत्य की सुंदरता को विश्व मंच पर प्रस्तुत किया। उनके योगदान के लिए उन्हें कई राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है, जिनमें पद्मश्री और संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार जैसे प्रतिष्ठित सम्मान शामिल हैं।⁹³ ये पुरस्कार उनके समर्पण, कठिन परिश्रम और उत्कृष्टता के प्रमाण हैं। कुल मिलाकर, शोभा कोसर ने कथक नृत्य को एक नई पहचान दी है। उन्होंने इस नृत्य रूप को न केवल संरक्षण दिया है, बल्कि इसे नए आयामों तक पहुँचाया है। उनके द्वारा दिए गए प्रशिक्षण और उनके नृत्य की प्रस्तुतियों ने कथक को नई पीढ़ियों तक पहुँचाया और इसे वैश्विक स्तर पर भी मान्यता दिलाई।

⁹³ Koser, Guru S. Personal Interview . 4 Jan. 2019.

3.5.5.

कुमुदिनी लखिया



कुमुदिनी लखिया भारतीय शास्त्रीय नृत्य के क्षेत्र में एक प्रमुख व्यक्तित्व हैं, जिन्होंने कथक नृत्य को नई ऊंचाइयों तक पहुँचाया है। वह कथक को उसकी पारंपरिक जड़ों से जोड़कर आधुनिक दृष्टिकोण के साथ प्रस्तुत करने के लिए जानी जाती हैं। उनका नृत्य केवल शास्त्रीय रूप की पुनरावृत्ति नहीं है, बल्कि इसमें गहन चिंतन, नई तकनीकों और प्रयोगात्मक दृष्टिकोण का समावेश होता है, जिसने कथक को एक समकालीन स्वरूप प्रदान किया है। कुमुदिनी लखिया का सबसे महत्वपूर्ण योगदान यह रहा है कि उन्होंने कथक को एक नृत्य-नाट्य के रूप में विकसित किया, जिसमें शास्त्रीय तत्वों को बनाए रखते हुए उसमें नए प्रयोग किए। उन्होंने पारंपरिक कथक में नाटकीयता और आधुनिक नृत्य तत्वों का संयोजन किया। उनके नृत्य में गति, मुद्रा, और कहानी कहने की एक नई शैली देखने को मिलती है। उन्होंने कथक में शंतरालश् और श्विरामश् जैसे तत्वों को जोड़ा, जिससे यह नृत्य रूप अधिक गहन

और भावनात्मक रूप से सशक्त बन गया। लखिया ने कथक को केवल मंचीय प्रदर्शन तक सीमित नहीं रखा, बल्कि इसे एक शैक्षिक माध्यम के रूप में भी स्थापित किया। उन्होंने शकदंब सेंटर फॉर डांस की स्थापना की, जहाँ उन्होंने कई शिष्यों को प्रशिक्षण दिया और कथक को नए रूप में प्रस्तुत किया।⁹⁴ उनके छात्रों ने भी इस कला को नई दिशाओं में ले जाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। कुमुदिनी लखिया की प्रस्तुतियों में सामाजिक और समकालीन मुद्दों का भी समावेश होता है, जिससे कथक केवल शास्त्रीय कथाओं का मंचन करने वाला नृत्य रूप नहीं रहा, बल्कि इसे एक विचारोत्तेजक माध्यम के रूप में उभारा। उनके नृत्य में जटिलताओं के बावजूद एक सहजता और सरलता देखने को मिलती है, जो दर्शकों को भावनात्मक रूप से जोड़ता है। उनका दृष्टिकोण हमेशा से कथक को समय के साथ विकसित करने का रहा है, और इसी कारण उन्होंने पारंपरिक कथक को आधुनिक विचारधारा और प्रथाओं के साथ जोड़ा। कुमुदिनी लखिया का यह योगदान कथक नृत्य को समृद्ध और समकालीन बनाने में अत्यधिक महत्वपूर्ण रहा है।

गुरु कुमुदिनी लखिया के प्रमुख नृत्य नाटकों की वर्षवार सूची:-

वर्ष	नृत्य नाटक का नाम
1969	Variation in Thumri
1970	Venu Naad
1970	Hori

⁹⁴ Global Music Institute, Greater Noida, Dr. Ujjwal N. Phone Interview . 2 May 2024.

1971	Kolaahal
1971	Duvidha
1973	Dhabkar
1976	Yugal
1981	Umrao Jaan
1982	Atah Kim
1990	Okha Haran
1993	Hun-Nari
1993	Sam Samvedan
1999	Bhav Krida
2003	Samanvay
2006	Mushti
2009	Feathered Cloth – Hagaromo

3.6. निष्कर्ष

यह निष्कर्ष इस तथ्य को रेखांकित करता है कि कथक एक जीवंत शास्त्रीय नृत्य परंपरा है, जिसकी संरचना केवल तकनीक या शैली तक सीमित नहीं है, बल्कि उसमें गुरु—शिष्य परंपरा, सौंदर्यबोध, सांस्कृतिक संदर्भ तथा व्यक्तिगत कलात्मक दृष्टि का गहरा समावेश है। इस अध्याय में विश्लेषित कलाकारों के योगदान से यह स्पष्ट होता है कि कथक की विकास यात्रा विभिन्न व्यक्तित्वों और दृष्टिकोणों के माध्यम से निरंतर समृद्ध होती रही है।

पंडित बिरजू महाराज ने कथक को भावात्मक अभिव्यक्ति, सूक्ष्म अभिनय और कथात्मक सौंदर्य के उच्च स्तर तक पहुँचाया। उनकी कला में लय, भाव और कथा का संतुलित समन्वय दिखाई देता है, जिसने कथक को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर विशिष्ट पहचान प्रदान की। पंडित लच्छू महाराज ने कथक में नाटकीयता और रचनात्मक प्रयोगों के माध्यम से इसे व्यापक अभिव्यंजना दी, जिससे इस नृत्य रूप में भावनात्मक विस्तार संभव हुआ।

शोभना नारायण का योगदान कथक को शास्त्रीय अनुशासन और अकादमिक गंभीरता प्रदान करने में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। उनके कार्य से यह स्थापित होता है कि कथक केवल मंचीय प्रस्तुति की कला नहीं, बल्कि एक सुविचारित, सैद्धांतिक और बौद्धिक परंपरा भी है। राजेंद्र गंगानी ने जयपुर घराने की सशक्त, तीव्र और ऊर्जावान शैली को समकालीन मंचों पर प्रतिष्ठित किया, जिससे कथक की तकनीकी विविधता और लयात्मक शक्ति और अधिक सुदृढ़ हुई। शोभा कोसर जैसी कलाकारों ने कथक में सौम्यता, संतुलन और नियंत्रित अभिव्यक्ति के माध्यम से इस नृत्य शैली को एक संवेदनशील और परिष्कृत आयाम प्रदान किया। अतः अध्याय तीन का निष्कर्ष यह स्थापित करता है कि कथक की परंपरा किसी एक घराने या शैली तक सीमित न होकर विभिन्न कलाकारों की साधना, नवाचार और दृष्टि से निरंतर विकसित होती रही है। यह अध्याय इस तथ्य की पुष्टि करता है कि कथक की निरंतरता उसकी बहुलता, कलात्मक स्वतंत्रता और परंपरा के साथ संवाद में निहित है, जिसने इसे समय के साथ प्रासंगिक और समृद्ध बनाए रखा है।

चतुर्थ अध्याय

कथक नृत्य के प्रचार प्रसार में विभिन्न माध्यमों का योगदान

4.1. परिचय

भारत के शास्त्रीय नृत्य रूपों में से एक कथक का प्रचार-प्रसार सदियों से विभिन्न माध्यमों द्वारा किया जाता रहा है, जिनमें से प्रत्येक ने इसके विकास, संरक्षण और विस्तार में योगदान दिया है। यह समृद्ध और गतिशील कला रूप, जो अपने जटिल पदचिह्नों, अभिव्यंजक हाव-भाव और लयबद्ध कहानी कहने की विशेषता रखता है, पारंपरिक तरीकों, घरानों की अनूठी शैलियों और आधुनिक शैक्षणिक संस्थानों के माध्यम से आगे बढ़ा है। पारंपरिक गुरु-शिष्य परम्परा (शिक्षक-छात्र वंश) ने कथक की गहरी तकनीकों और दर्शन के प्रसारण के लिए एक आधारभूत संरचना प्रदान की है, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि नृत्य रूप पीढ़ियों में अपनी प्रामाणिकता बनाए रखे। साथ ही, घरानों के उद्भव ने कथक के भीतर अलग-अलग शैलीगत विविधताओं को परिभाषित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जो अभिव्यक्तियों और व्याख्याओं की समृद्ध विविधता प्रदान करता है।

इसके अलावा, समकालीन युग में शैक्षणिक संस्थानों की भूमिका तेजी से महत्वपूर्ण हो गई है, क्योंकि वे संरचित शिक्षण वातावरण और औपचारिक पाठ्यक्रम प्रदान करते हैं जो कथक को व्यापक दर्शकों के लिए सुलभ बनाते हैं। सरकारी और निजी दोनों तरह की संस्थाओं ने कथक के दस्तावेजीकरण और शोध में भी मदद की है, जिससे इसके इतिहास और विकास की गहरी समझ विकसित हुई है। साथ मिलकर, इन विभिन्न माध्यमों ने न केवल कथक के शास्त्रीय सार को संरक्षित करने में मदद की है, बल्कि इसे आधुनिक संदर्भ में अनुकूलित और विकसित होने का अवसर भी दिया है। यह अध्याय उन जटिल तरीकों की पड़ताल करता है, जिनसे पारंपरिक प्रणाली,

घराने और शैक्षणिक संस्थानों ने कथक के प्रचार और प्रसार में योगदान दिया है, कला के रूप की निरंतरता और प्रासंगिकता सुनिश्चित करने में उनकी अनूठी भूमिकाओं पर प्रकाश डाला है।

4.2. परम्परागत प्रणाली

उत्तर भारत के शास्त्रीय नृत्य रूप कथक का प्रचार सदियों से पारंपरिक तरीकों पर बहुत अधिक निर्भर रहा है। इनमें से, गुरु-शिष्य परंपरा (शिक्षक-शिष्य वंश) ने कला की प्रामाणिकता और गहराई को बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यह प्रणाली प्राचीन भारतीय परंपराओं में निहित है, जो गुरु (शिक्षक) और शिष्य (छात्र) के बीच गहरे और व्यक्तिगत संबंध पर जोर देती है, जहां ज्ञान मौखिक और अनुभवात्मक रूप से दिया जाता है। यह निबंध इस बात की पड़ताल करता है कि पारंपरिक प्रणाली ने कथक को कैसे आकार दिया है, जिसमें गुरु-शिष्य परंपरा के इतिहास, तंत्र, महत्व और अनुकूलन पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

गुरु-शिष्य परम्परा की उत्पत्ति भारत में वैदिक काल से देखी जा सकती है, जहाँ शिक्षकों और शिष्यों के बीच घनिष्ठ संबंधों के माध्यम से मौखिक रूप से ज्ञान प्रसारित किया जाता था। इस परंपरा का उल्लेख वेदों और उपनिषदों जैसे प्राचीन ग्रंथों में मिलता है, जो विशेष रूप से आध्यात्मिक, संगीत और कलात्मक गतिविधियों के लिए ज्ञान हस्तांतरण की पवित्रता पर प्रकाश डालते हैं। इस प्रणाली में, ज्ञान केवल तकनीकी नहीं था, बल्कि इसमें जीवन, आध्यात्मिकता और नैतिकता की समग्र समझ शामिल थी। चार वेदों में से एक सामवेद, संगीत के संदर्भ में विशेष रूप से महत्वपूर्ण है। यह संगीत के संगठित शिक्षण का संदर्भ देने वाले सबसे शुरुआती अभिलेखों में से एक है, जिसमें सीखने में याद रखने और मौखिक दोहराव की भूमिका पर जोर दिया गया है। इस दृष्टिकोण ने भारत में शिक्षण प्रणालियों का आधार बनाया, जिसमें कथक जैसे शास्त्रीय नृत्य रूप भी शामिल हैं। भरत मुनि द्वारा प्रदर्शन कलाओं पर एक प्राचीन ग्रंथ नाट्यशास्त्र ने भी नाट्य (नाटक और नृत्य) का ज्ञान प्रदान करने में

गुरु के महत्व को रेखांकित किया, जिसमें शिक्षक की भूमिका को सीखने के लिए केंद्रीय माना गया।

4.3. कथक में गुरु—शिष्य परम्परा के मुख्य सिद्धांत

कथक में गुरु—शिष्य परम्परा कुछ मुख्य सिद्धांतों पर केन्द्रित है जो सदियों से एक समान रहे हैं:

व्यक्तिगत शिक्षण: समकालीन कक्षा सेटिंग के विपरीत, इस परंपरा में आमने—सामने की सलाह शामिल है, जहाँ गुरु प्रत्येक शिष्य की व्यक्तिगत आवश्यकताओं और शक्तियों के अनुसार प्रशिक्षण तैयार करता है। इससे ताल (लयबद्ध पैटर्न), अभिनय (अभिव्यंजक कहानी) और पढ़ंत (लयबद्ध अक्षरों का उच्चारण) की गहन समझ प्राप्त होती है।

मौखिक परंपरा: इस प्रणाली की एक परिभाषित विशेषता मौखिक निर्देश पर इसकी निर्भरता है। लयबद्ध पैटर्न, रचनाएँ और कथाएँ लिखित दस्तावेजीकरण के बिना सीधे प्रदर्शन और मौखिक मार्गदर्शन के माध्यम से सिखाई जाती हैं। यह विधि सुनिश्चित करती है कि नृत्य रूप छात्र द्वारा गहराई से आत्मसात किया जाता है, जो निरंतर दोहराव के माध्यम से प्रत्येक तत्व को याद करता है।

समग्र विकास: तकनीक से परे, गुरु सांस्कृतिक मूल्य, आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि और नैतिक पाठ प्रदान करता है जो कथक के अभ्यास के लिए आंतरिक हैं। ध्यान छात्र के चरित्र, अनुशासन और भावनात्मक परिपक्वता को विकसित करने पर है, जो कला के रूप में महारत हासिल करने के लिए आवश्यक गुण हैं।

4.4. गुरु शिष्य परम्परा में प्रशिक्षण की प्रक्रिया

गुरु—शिष्य परम्परा में प्रशिक्षण एक आजीवन प्रक्रिया है जो एक पाठ्यक्रम की सामान्य अवधि से परे है। इसमें शामिल है:

गुरु के साथ रहना: परंपरागत रूप से, शिष्य अपने गुरु के साथ रहते थे, नृत्य अभ्यास से परे दैनिक गतिविधियों में भाग लेते थे। इस घनिष्ठ संबंध ने छात्रों को न केवल कथक की तकनीकी बल्कि उनके गुरु की जीवनशैली, आचरण और दार्शनिक दृष्टिकोण को भी आत्मसात करने की अनुमति दी।

गहन अभ्यास (रियाज): प्रशिक्षण का केंद्र रियाज या गहन अभ्यास है, जो अक्सर प्रत्येक दिन कई घंटों तक चलता है। यह अभ्यास जटिल फुटवर्क, स्पिन और भावों की सूक्ष्म बारीकियों में महारत हासिल करने के लिए महत्वपूर्ण है। अभ्यास की दोहराव प्रकृति छात्रों को लय और आंदोलनों को आंतरिक बनाने में मदद करती है, जिससे वे उनके प्रदर्शनों की सूची का एक स्वाभाविक हिस्सा बन जाते हैं।

दर्शन और पौराणिक कथाओं को शामिल करना: प्रशिक्षण का एक महत्वपूर्ण हिस्सा पौराणिक कहानियों और आध्यात्मिक अवधारणाओं को समझना है जिन्हें कथक चित्रित करना चाहता है। चाहे वह कृष्ण की लीला हो या महाभारत और रामायण की महाकाव्य कथाएँ, गुरु इन कथाओं को भावों और आंदोलनों के माध्यम से व्यक्त करना सिखाते हैं, जिससे कथक एक गहन कथात्मक कला रूप बन जाता है।

4.5. पारंपरिक प्रणाली में गुरु की भूमिका

कथक की पारंपरिक प्रणाली में, गुरु सिर्फ एक प्रशिक्षक से कहीं ज्यादा होता है। उन्हें एक मार्गदर्शक, संरक्षक और आध्यात्मिक शिक्षक के रूप में देखा जाता है। गुरु की भूमिका में शामिल हैं

नैतिक उदाहरण स्थापित करना: गुरु समर्पण, विनम्रता और अनुशासन के आदर्शों का प्रतीक होता है जिसका शिष्य से अनुकरण करने की अपेक्षा की जाती है। यह नैतिक पहलू महत्वपूर्ण है क्योंकि यह कथक सीखने और प्रदर्शन करने के लिए छात्र के दृष्टिकोण को आकार देता है।

जटिल लयबद्ध पैटर्न की व्याख्या करना: कथक में जटिल लयबद्ध पैटर्न शामिल होते हैं जिन्हें केवल अवलोकन के माध्यम से समझना मुश्किल होता है। गुरु इन पैटर्न को तोड़ने में मदद करते हैं, सादृश्य और लयबद्ध पाठ का उपयोग करते हुए, जटिल लय को छात्रों के लिए सुलभ बनाते हैं।

गुप्त रचनाएँ आगे बढ़ाना: कई पारंपरिक टुकड़ा, परन और कवितंग (लयबद्ध रचनाएँ) एक विशेष वंश या घराने के लिए अद्वितीय हैं। गुरु सावधानीपूर्वक चयन करते हैं कि प्रत्येक छात्र को कौन सी रचनाएँ सिखाई जाएँ, अक्सर केवल सबसे मूल्यवान रचनाएँ उन लोगों के साथ साझा करते हैं जिन्होंने अपनी लगन और महारत साबित की है।

4.6. आधुनिक समय में गुरु—शिष्य परंपरा का अनुकूलन

जबकि गुरु—शिष्य परंपरा कथक की पारंपरिक शिक्षण प्रणाली की आधारशिला रही है, आधुनिक शैक्षिक संरचनाओं और बदलते सामाजिक मानदंडों के आगमन के साथ इसे चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। प्रासंगिक बने रहने के लिए, कई कथक गुरुओं ने अपनी शिक्षण विधियों को अनुकूलित किया है:

औपचारिक शिक्षा को एकीकृत करना: आज, कई कथक शिक्षक पारंपरिक मार्गदर्शन को संरचित कक्षा सेटिंग्स के साथ जोड़ते हैं, जिससे छात्रों को गुरु—शिष्य परंपरा के व्यक्तिगत मार्गदर्शन को संरक्षित करते हुए व्यवस्थित प्रशिक्षण प्राप्त करने की अनुमति मिलती है।

ऑनलाइन शिक्षण और डिजिटल मीडिया: वैश्विक दर्शकों की माँगों और लचीलेपन

की आवश्यकता के जवाब में, कई गुरुओं ने शिक्षण के लिए डिजिटल प्लेटफॉर्म को अपनाया है। ऑनलाइन कक्षाओं, वेबिनार और वीडियो ट्यूटोरियल ने छात्रों के लिए प्रसिद्ध गुरुओं के ज्ञान तक पहुँचना संभव बना दिया है, भले ही वे शारीरिक रूप से मौजूद न हों।

कार्यशालाएँ और गहन पाठ्यक्रम: जो छात्र लंबे समय तक प्रशिक्षण के लिए प्रतिबद्ध नहीं हो सकते, उनके लिए कई गुरु अब गहन कार्यशालाएँ आयोजित करते हैं। ये अल्पकालिक पाठ्यक्रम एक ऐसा गहन अनुभव प्रदान करते हैं जिसमें छात्र एक केंद्रित अवधि में सीधे गुरु से सीख सकते हैं।

4.7. पारंपरिक प्रणाली के लिए चुनौतियाँ

समकालीन युग में गुरु-शिष्य परंपरा को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है:

समय की कमी: आधुनिक जीवनशैली, शैक्षणिक प्रतिबद्धताएँ और पेशेवर दबाव छात्रों के लिए गुरु के साथ गहन प्रशिक्षण के लिए आवश्यक समय समर्पित करना मुश्किल बनाते हैं। इस बदलाव के कारण प्रशिक्षण अवधि कम हो गई है और पारंपरिक प्रणाली द्वारा जोर दिए जाने वाले गहन, आजीवन सीखने की प्रक्रिया के बजाय त्वरित सीखने पर ध्यान केंद्रित किया जा रहा है।

व्यावसायीकरण: जैसे-जैसे कथक अधिक लोकप्रिय होता जा रहा है, गुरु-शिष्य परंपरा के समग्र, प्रक्रिया-उन्मुख दृष्टिकोण के बजाय प्रदर्शन-उन्मुख प्रशिक्षण पर ध्यान केंद्रित करने की प्रवृत्ति बढ़ रही है। यह बदलाव प्रशिक्षण की गहराई और आध्यात्मिक फोकस को कम कर सकता है, क्योंकि छात्र लय और भावों की सूक्ष्म समझ पर मंच-तैयार रचनाओं को प्राथमिकता दे सकते हैं।

पारंपरिक मूल्यों में गिरावट: समाज के विकास के साथ, गुरु को पारंपरिक रूप से

दी जाने वाली श्रद्धा कभी-कभी खो जाती है। शिक्षक-छात्र संबंधों की गतिशीलता बदल गई है, छात्र अधिक स्वतंत्रता और स्वायत्तता की अपेक्षा करते हैं, जो कभी-कभी पारंपरिक प्रणाली की मांगों के विपरीत हो सकती है।

4.8. गुरु-शिष्य परंपरा को संरक्षित करने का महत्व

इन चुनौतियों के बावजूद, गुरु - शिष्य परंपरा कथक के प्रचार और संरक्षण में एक महत्वपूर्ण तत्व बनी हुई है। इसका महत्व इसकी क्षमता में निहित है:

प्रामाणिकता बनाए रखें: करीबी मार्गदर्शन यह सुनिश्चित करता है कि कथक की परंपराओं की शुद्धता बनी रहे, जिससे घराना शैलियों, रचनाओं और तकनीकों का प्रामाणिक संचरण हो सके।

व्यक्तित्व को प्रोत्साहित करें: प्रशिक्षण की व्यक्तिगत प्रकृति प्रत्येक छात्र को कथक की अपनी अनूठी व्याख्या विकसित करने की अनुमति देती है, जबकि इसके मूल सिद्धांतों के प्रति सच्चे रहते हैं। परंपरा के पालन और रचनात्मक स्वतंत्रता के बीच यह संतुलन किसी भी शास्त्रीय कला के विकास के लिए महत्वपूर्ण है।

भावनात्मक गहराई को बढ़ावा दें: कथक के भावनात्मक और आध्यात्मिक पहलुओं को समझने पर जोर यह सुनिश्चित करता है कि छात्र केवल कदम न निभाएं बल्कि अपने नृत्य के माध्यम से गहरी कहानियों और दर्शन को संप्रेषित करें। यह भावनात्मक गहराई ही कथक जैसे शास्त्रीय नृत्य को व्यावसायिक नृत्य शैलियों से अलग करती है।

4.9. निष्कर्ष

गुरु-शिष्य परंपरा पूरे इतिहास में कथक के प्रसारण और संरक्षण के लिए केंद्रीय

रही है। इसने एक ऐसा ढांचा प्रदान किया है जो गहन शिक्षा, व्यक्तिगत विकास और सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण की अनुमति देता है। जबकि इसे आधुनिक समय के अनुकूल होने में चुनौतियों का सामना करना पड़ा है, कई कथक शिक्षकों ने इसके मूल सिद्धांतों को समकालीन शिक्षण विधियों में एकीकृत करने के तरीके खोजे हैं, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि इस पारंपरिक प्रणाली का सार कायम रहे। गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से, कथक लगातार फल-फूल रहा है, बदलती दुनिया की जरूरतों के साथ प्राचीन परंपराओं के ज्ञान को संतुलित कर रहा है, और यह सुनिश्चित कर रहा है कि यह सुंदर नृत्य रूप आने वाली पीढ़ियों के लिए जीवंत बना रहे।

4.10. घरानो के माध्यम से प्रचार – प्रसार

कथक नृत्य के संदर्भ में घराना परम्परा या घरानों की परंपरा बहुत महत्वपूर्ण है। घराने कथक की विभिन्न शैलियों या स्कूलों का प्रतिनिधित्व करते हैं, जिनमें से प्रत्येक की अपनी अनूठी विशेषताएँ, इतिहास और नृत्य शैली की व्याख्या है। भारत के विभिन्न क्षेत्रों में विकसित, इन शैलियों को पीढ़ियों से आगे बढ़ाया गया है। घराना प्रणाली की प्रमुख भूमिकाओं में से एक परंपरा का संरक्षण है, क्योंकि प्रत्येक घराने के पास कथक को पढ़ाने, प्रदर्शन करने और व्याख्या करने की अपनी पद्धति है, जो इसके ऐतिहासिक सार को जीवित रखती है। इस प्रणाली ने तीन प्राथमिक घरानों को जन्म दिया है— लखनऊ, जयपुर और बनारस, जिनमें से प्रत्येक एक अलग शैली पेश करता है। लखनऊ घराना अपने अभिनय (अभिव्यक्ति) और सुंदर चालों पर जोर देने के लिए प्रसिद्ध है, जयपुर घराना अपने जटिल तत्कार (फुटवर्क) और शक्तिशाली चालों के लिए जाना जाता है, जबकि बनारस घराना लयबद्ध पैटर्न और भक्ति (भक्ति) पर ध्यान केंद्रित करता है। ये अंतर कथक नृत्य शैली में विविधता और समृद्धि जोड़ते हैं। घराना परम्परा विशिष्ट तकनीकों, बोल (लयबद्ध शब्दांश) और चक्कर (स्पिन) को विकसित करने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। उदाहरण के लिए, लखनऊ घराना सूक्ष्म और जटिल फुटवर्क के लिए जाना जाता है, जबकि जयपुर घराना अपनी जटिल

लय पैटर्न और शक्तिशाली फुटवर्क के लिए प्रसिद्ध है। घराना सुनिश्चित करता है कि इन तकनीकों को संरचित तरीके से सिखाया जाए, जिससे उनकी विशिष्ट पहचान बनी रहे। इसके अलावा, घराना परम्परा सांस्कृतिक पहचान से बहुत करीब से जुड़ी हुई है, जो उस स्थान की क्षेत्रीय विरासत और इतिहास को दर्शाती है जिसका वह प्रतिनिधित्व करता है। उदाहरण के लिए, लखनऊ घराना नवाबों के दरबार में विकसित हुआ, और इसकी शैली लखनऊ की संस्कृति से जुड़ी एक निश्चित शालीनता और अभिव्यक्ति को दर्शाती है। इसी तरह, जयपुर घराना राजस्थान की योद्धा भावना और जोश का प्रतीक है।

घराना प्रणाली का एक और महत्वपूर्ण पहलू इसकी सलाह और वंश है, जहाँ ज्ञान गुरु (शिक्षक) से शिष्य (छात्र) को दिया जाता है। यह बंधन नृत्य रूप की गहरी समझ की अनुमति देता है और शिक्षक और छात्र के बीच एक मजबूत संबंध बनाता है, जिससे शैली की प्रामाणिकता और शुद्धता सुनिश्चित होती है। संक्षेप में, घराना परंपरा सिर्फ कथक की अलग-अलग शैलियों के बारे में नहीं है, बल्कि नृत्य शैली के सार, विविधता और सांस्कृतिक समृद्धि को संरक्षित करने के बारे में है। यह नर्तकियों को अपनी ताकत के अनुरूप एक रास्ता अपनाने की अनुमति देता है, जबकि कथक की समृद्ध परंपराओं और इतिहास को जीवित रखता है।

4.11. कथक के प्रमुख घराने

- लखनऊ घराना

कथक के लखनऊ घराने का इतिहास समृद्ध है, जो लखनऊ की सांस्कृतिक और कलात्मक विरासत से गहराई से जुड़ा हुआ है। यह घराना 18वीं और 19वीं शताब्दी के दौरान, विशेष रूप से अवध के नवाबों, खासकर नवाब वाजिद अली शाह के संरक्षण में विकसित हुआ। लखनऊ घराने की जड़ें मुगल दरबारों में हैं, जहाँ कथक

नर्तक, जिन्हें कथकार के रूप में जाना जाता है, प्रदर्शन करने के लिए नियुक्त किए जाते थे। मूल रूप से, कथकार कहानीकार थे जो नृत्य और संगीत का उपयोग करके पौराणिक कथाओं को सुनाते थे, जो अक्सर कृष्ण और राधा की कहानियों पर केंद्रित होते थे। मुगल संस्कृति के प्रभाव में, नृत्य शैली विकसित हुई, जिसमें फारसी और मुगल सौंदर्यशास्त्र को इसकी पारंपरिक हिंदू जड़ों के साथ मिलाया गया। लखनऊ घराना अवध के नवाबों के दरबारों में, विशेष रूप से 19वीं शताब्दी में नवाब वाजिद अली शाह के अधीन महत्वपूर्ण रूप से विकसित हुआ। नवाब वाजिद अली शाह खुद कला के बहुत बड़े प्रेमी और एक कुशल कथक नर्तक थे। उन्होंने कलाकारों और नर्तकों का समर्थन किया, जिससे उन्हें अपने शिल्प को नया रूप देने और निखारने का मौका मिला। उन्होंने पारंपरिक कथात्मक शैली के साथ रूमनियत का सम्मिश्रण करते हुए अभिनय (अभिव्यक्तिपरक कहानी) और नृत्य (शुद्ध नृत्य) के विकास को प्रोत्साहित किया।

- **लखनऊ घराने की विशेषताएँ**

लखनऊ घराना अपनी शालीनता, सूक्ष्मता और अभिव्यक्ति पर जोर देने के लिए जाना जाता है। नर्तक भावनाओं को व्यक्त करने के लिए नाजुक हरकतों, चेहरे के भावों और हाव-भावों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। यह घराना अपने अभिनय, या चेहरे के भावों और हाव-भावों के माध्यम से मनोदशाओं और भावनाओं के चित्रण के लिए विशेष रूप से प्रसिद्ध है। यह संगीत की ठुमरी शैली पर भी जोर देता है, जो रोमांटिक और अभिव्यंजक है, जिससे नर्तक प्रेम, अलगाव और भक्ति के विषयों का पता लगा सकते हैं। हालांकि पैरों की हरकतें जटिल हैं, लेकिन अन्य घरानों की तुलना में अधिक नाजुक हैं, जिसमें एक सुंदर, तरल शैली बनाने पर ध्यान केंद्रित किया गया है।

- **वंश के माध्यम से विकास**

लखनऊ घराना कथक के उस्तादों की पीढ़ियों से चला आ रहा है, जिन्हें गुरु के रूप में जाना जाता है, जिन्होंने अपने शिष्यों को गुरु-शिष्य परंपरा में प्रशिक्षित किया। घराना पारंपरिक रूप से महाराज परिवार से जुड़ा हुआ है, जिसमें बिंदादीन महाराज और कालका प्रसाद महाराज जैसे प्रमुख व्यक्ति शामिल हैं। बाद में, पंडित बिरजू महाराज, एक महान नर्तक ने लखनऊ घराने को और अधिक लोकप्रिय बनाया, अपने सुंदर और भावपूर्ण प्रदर्शनों से इसे अंतरराष्ट्रीय ख्याति दिलाई।

- **साहित्य और संगीत का एकीकरण**

लखनऊ घराना नृत्य में तुमरी, गजल और दादरा सहित काव्य रचनाओं को शामिल करता है। साहित्य और संगीत का यह एकीकरण प्रदर्शनों में गहराई जोड़ता है। विषय अक्सर भक्ति आंदोलन के इर्द-गिर्द घूमते हैं, राधा और कृष्ण की कहानियों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, रोमांटिकता, भक्ति और दिव्य प्रेम पर जोर देते हैं।

- **समकालीन प्रभाव**

समय के साथ, लखनऊ घराना ने अपनी मूल परंपराओं को बनाए रखते हुए आधुनिक दर्शकों के लिए खुद को ढाल लिया है। कई समकालीन नर्तक लखनऊ घराना शैली का प्रदर्शन और शिक्षण जारी रखते हैं, जिससे यह सुनिश्चित होता है कि इसकी नाजुक अभिव्यक्ति और समृद्ध कथा शैली आज भी प्रासंगिक बनी हुई है।

लखनऊ घराने के कथक नृत्य को कई महान कलाकारों ने समृद्ध किया है, जिनके योगदान ने इसकी कलात्मक उत्कृष्टता को आकार दिया है। यहाँ लखनऊ घराने के पाँच मुख्य दिग्गज कलाकारों के बारे में जानकारी दी गई है, जिनमें उनके कलात्मक योगदान, पुरस्कार और सम्मान शामिल हैं:

1. बिंदादिन महाराज (1830–1918)

– कलात्मक योगदान: बिंदादिन महाराज और उनके भाई कल्का प्रसाद महाराज को आधुनिक लखनऊ घराने के संस्थापकों में से एक माना जाता है। उन्होंने कथक के अभिनय (भाव व्यक्त करने की कला) को निखारने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जो लखनऊ शैली की पहचान बन गई। उन्होंने कई तुमरी, भजन और गजल की रचनाएँ कीं, जो आज भी कथक प्रस्तुतियों में उपयोग की जाती हैं।

– विरासत: भले ही वे आधुनिक पुरस्कारों के युग से पहले के समय में थे, उनकी शिक्षाओं और रचनाओं ने आने वाली पीढ़ियों के लिए आधारशिला रखी। उनके शिष्य और परिवार ने उनकी कलात्मक विरासत को जीवित रखा, जिससे वे घराने के इतिहास में एक महत्वपूर्ण व्यक्तित्व बन गए।

2. अच्छन महाराज (1883–1946)

– कलात्मक योगदान: अच्छन महाराज, कल्का प्रसाद महाराज के पुत्र थे, जिन्होंने लखनऊ घराने के अभिनय के पहलुओं को और विकसित किया। वे अपनी कोमल गतियों और भावों को व्यक्त करने की महारत के लिए प्रसिद्ध थे। उन्होंने कथक को और अधिक कोमल और काव्यात्मक बनाते हुए इसकी प्रस्तुतियों में एक नई नजाकत और शालीनता जोड़ दी।

– पुरस्कार और सम्मान: यद्यपि उन्होंने शाही दरबारों में बहुत प्रस्तुतियाँ दीं, परंतु उनके समय में औपचारिक राज्य पुरस्कार आम नहीं थे। फिर भी, वे कथक समुदाय और कला प्रेमियों के बीच अत्यधिक सम्मानित और प्रशंसित थे। उनकी प्रतिष्ठा ऐसी थी कि उन्होंने राजाओं और आम जनता दोनों का सम्मान प्राप्त किया।

3. शंभू महाराज (1907–1970)

– कलात्मक योगदान: शंभू महाराज, अच्छन महाराज के पुत्र, अभिनय और नृत्य में माहिर थे। वे एक बेहतरीन कलाकार थे जो चेहरे के हाव-भाव और नाजुक इशारों से गहरी भावनाओं को व्यक्त कर सकते थे। वे ताल के जटिल पैटर्न में भी निपुण थे, जिससे उनकी प्रस्तुतियाँ समृद्ध और जटिल होती थीं।

– पुरस्कार और सम्मान: उन्होंने कई प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त किए, जिनमें 1956 में पद्म श्री शामिल है, जो भारतीय शास्त्रीय नृत्य में उनके योगदान के लिए दिया गया। शंभू महाराज को 1954 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार भी मिला, जो कथक कला में उनके उत्कृष्ट योगदान के लिए दिया गया।

4. लच्छू महाराज (1901–1978)

– कलात्मक योगदान: लच्छू महाराज, कल्का प्रसाद महाराज के एक अन्य पुत्र, अपनी कोरियोग्राफिक प्रतिभा और नृत्य में नवाचार के लिए जाने जाते थे। उन्होंने कथक को मंच पर प्रस्तुत किया और इसे नृत्य-नाटकों और फिल्मों के माध्यम से लोकप्रिय बनाया। उन्होंने कई हिंदी फिल्मों के लिए नृत्य संयोजन किए, जिससे कथक को व्यापक दर्शकों तक पहुँचाया। उनके कार्यों ने कथक की प्रस्तुति में एक नया दृष्टिकोण जोड़ा।

– पुरस्कार और सम्मान: लच्छू महाराज को 1957 में संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उनके सिनेमा और मंच प्रस्तुतियों में योगदान ने कथक के प्रदर्शन में एक स्थायी प्रभाव छोड़ा।

5. पंडित बिरजू महाराज (1938–2022)

– कलात्मक योगदान: पंडित बिरजू महाराज कथक और लखनऊ घराने के सबसे प्रसिद्ध नामों में से एक हैं। अच्छन महाराज के पुत्र, उन्होंने इस कला को

अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाई। उनकी नृत्य शैली में नजाकत, ताल की गहराई और भावपूर्ण अभिनय की विशेषताएँ थीं। उन्होंने कथक को वैश्विक मंचों, कार्यशालाओं और सहयोगों के माध्यम से विस्तार दिया। उन्होंने फिल्मों में भी योगदान दिया, जैसे देवदास और विश्वरूपम में नृत्य संयोजन।

– पुरस्कार और सम्मान: पंडित बिरजू महाराज को कई प्रतिष्ठित पुरस्कार मिले, जिनमें 1986 में पद्म विभूषण शामिल है, जो भारत का दूसरा सबसे बड़ा नागरिक सम्मान है। उन्होंने संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार और कालीदास सम्मान सहित कई अन्य सम्मान भी प्राप्त किए, जो भारतीय शास्त्रीय नृत्य में उनके अपार योगदान के लिए दिए गए।

6. सास्वती सेन

– कलात्मक योगदान: सास्वती सेन ने अपनी प्रस्तुतियों और शिक्षाओं के माध्यम से बनारस घराने को सुरक्षित रखने और बढ़ावा देने में समर्पित भूमिका निभाई है। पंडित बिरजू महाराज की शिष्या के रूप में, उन्होंने भक्ति की गहराई और अभिव्यक्ति को अपने नृत्य में बखूबी समाहित किया, जिससे बनारस शैली की पारंपरिक विशेषताएँ और तकनीकी परिशुद्धता दोनों का संतुलन बना रहा।

– पुरस्कार और सम्मान: सास्वती सेन को संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार सहित कई पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। उनकी शिक्षण और कार्यशालाओं ने बनारस घराने को नए दर्शकों और छात्रों तक पहुँचाया, भारत और विदेश दोनों में।

लखनऊ घराने के इन महान कलाकारों ने प्रत्येक ने अपनी अनूठी शैली में कथक के विकास और संरक्षण में योगदान दिया है, जिससे इस शैली में गहराई, ताल की जटिलता और कलात्मक अभिव्यक्ति आई है। उनकी विरासत आज भी नृत्य के क्षेत्र में नई पीढ़ियों को प्रेरित करती है।

● बनारस घराना

कथक का बनारस घराना, जिसे वाराणसी या बनारस घराना के नाम से भी जाना जाता है, कथक के शास्त्रीय नृत्य रूप के भीतर एक विशिष्ट पहचान रखता है। इसकी उत्पत्ति उत्तर प्रदेश के सांस्कृतिक रूप से समृद्ध शहर वाराणसी (बनारस) में हुई थी। बनारस घराने की स्थापना 19वीं शताब्दी की शुरुआत में जानकी प्रसाद ने की थी। वह एक प्रतिभाशाली नर्तक थे, जिन्होंने शुरुआत में अन्य प्रमुख घरानों में प्रशिक्षण लिया था, लेकिन बाद में उन्होंने वाराणसी में एक अनूठी शैली विकसित की। मुगल दरबारों के प्रभाव में आकार लेने वाले अन्य कथक घरानों के विपरीत, बनारस घराना आध्यात्मिक और भक्तिपूर्ण वातावरण में विकसित हुआ, जो वाराणसी की सांस्कृतिक और धार्मिक परंपराओं से गहराई से प्रभावित था। घराने की जड़ें शहर के मंदिरों और घाटों में समाहित हैं, जहाँ जानकी प्रसाद ने हिंदू पौराणिक कथाओं, विशेष रूप से कृष्ण और शिव की कहानियों पर आधारित कहानी कहने पर जोर दिया।

बनारस घराना भक्ति या भक्ति पर बहुत जोर देता है, जिसमें अक्सर भक्ति और आध्यात्मिक विषयों की अभिव्यक्ति शामिल होती है, जो इसे अन्य घरानों की अधिक दरबारी शैलियों से अलग बनाती है। बनारस घराने का एक अनूठा पहलू नटवारी बोल का उपयोग है, जो लयबद्ध शब्दांश हैं, जिनके बारे में माना जाता है कि वे सीधे भगवान कृष्ण की बांसुरी की आवाज से निकले हैं। ये बोल अन्य घरानों में इस्तेमाल किए जाने वाले तबला और पखावज अक्षरों से अलग हैं, जो इस शैली को एक विशिष्ट लयबद्ध गुणवत्ता प्रदान करते हैं। यह घराना जटिल तत्कार या पदचिह्नों पर जोर देने और जटिल ताल संरचनाओं की महारत के लिए जाना जाता है। इस घराने के नर्तक लयबद्ध स्पष्टता और सटीकता में श्रेष्ठ होते हैं, अक्सर जटिल पदचिह्नों का प्रदर्शन करते हैं जो उनके तकनीकी कौशल को प्रदर्शित करते हैं। बनारस घराना चक्कर या घुमावों के लिए एक अनूठा दृष्टिकोण अपनाता है, जो लखनऊ और जयपुर घरानों में देखे जाने वाले तेज घुमावों के विपरीत, अपने प्रदर्शन की भक्ति प्रकृति के साथ संरेखित चिकनी, गोलाकार हरकतों पर ध्यान केंद्रित करता है। बनारस घराना नृत्य या शुद्ध नृत्य और नृत्य या अभिव्यंजक नृत्य के लिए एक संतुलित दृष्टिकोण

रखता है। जबकि लयबद्ध पहलुओं को महत्वपूर्ण महत्व दिया गया है, वहीं कथावाचन और पौराणिक आख्यानों के चित्रण पर ध्यान केंद्रित करने वाले अभिव्यंजक पक्ष पर भी समान रूप से जोर दिया गया है।

- **बनारस घराने की विशेषताएँ**

भक्ति प्रधान विषय: यह घराना विशेष रूप से भजनों, ठुमरियों और कृष्ण एवं शिव जैसे देवताओं को समर्पित रचनाओं की प्रस्तुतियों के लिए जाना जाता है। भक्ति पर जोर देने से नर्तक और दर्शकों के बीच एक भावनात्मक संबंध स्थापित होता है।

जटिल पढ़ंत (वाचन): बनारस घराने के नर्तक अपनी पढ़ंत (तालों और बोलों के वाचन) की कुशलता के लिए भी जाने जाते हैं। वे अक्सर बोलों को नृत्य करने से पहले गाकर या बोलकर प्रस्तुत करते हैं, जिससे उनके ताल और समय की समझ का पता चलता है।

सुगठित अंग (शारीरिक गतियाँ): बनारस घराने की शैली अपनी सुंदर और सुगठित शारीरिक गतियों के लिए जानी जाती है, जो जयपुर घराने की तुलना में कम तीव्र होती हैं, लेकिन अधिक नियंत्रित होती हैं। इसका उद्देश्य गति में तरलता बनाए रखना है, जिससे नृत्य की काव्यात्मक गुणवत्ता बढ़ती है।

आधुनिक प्रभाव

आधुनिक समय में, बनारस घराने ने अपनी मूल परंपराओं को सुरक्षित रखते हुए समकालीन रुचियों के अनुसार खुद को ढाल लिया है। इस घराने के कलाकार भारत और विदेशों में विभिन्न उत्सवों में प्रदर्शन करते हैं, जिससे कथक की वैश्विक पहचान में योगदान होता है। भक्ति और आध्यात्मिकता पर जोर देने के कारण यह शैली पारंपरिक भारतीय उत्सवों, मंदिरों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में बहुत लोकप्रिय है,

जिससे इसका वाराणसी की जड़ों से मजबूत संबंध बना रहता है। संक्षेप में, बनारस घराने का कथक अपनी आध्यात्मिकता, अनूठे ताल के पैटर्न और भक्ति और अभिव्यक्ति पर जोर देने के लिए विशेष रूप से पहचाना जाता है। यह वाराणसी की मंदिर परंपराओं से विकसित हुआ है, जिसमें जटिल पैर के कार्य और सुंदर कथानक का मिश्रण है, जो आज भी दर्शकों को मोहित करता है।

● बनारस घराने के दिग्गज

बनारस घराने का कथक गुरु-शिष्य परंपरा और पारिवारिक विरासत के माध्यम से फला-फूला है। जनकी प्रसाद द्वारा शुरू की गई इस घराने की परंपरा को कई प्रमुख कलाकारों ने समृद्ध किया, जिन्होंने इस कला रूप को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यहाँ बनारस घराने के पाँच मुख्य कलाकारों के बारे में जानकारी दी गई है, जिनके कलात्मक योगदान, पुरस्कार और सम्मान का उल्लेख है:

1. सितारा देवी (1920-2014)

– कलात्मक योगदान: सितारा देवी, जिन्हें ष्कथक की रानी कहा जाता है, ने बनारस घराने को राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पहचान दिलाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। अपनी सशक्त प्रस्तुतियों के लिए जानी जाने वाली, वे शास्त्रीय कथक को ठुमरी और भजन के तत्वों के साथ बखूबी जोड़ती थीं, जिससे उनकी प्रस्तुतियाँ तकनीकी रूप से उत्कृष्ट और अत्यधिक भावपूर्ण होती थीं।

– पुरस्कार और सम्मान: सितारा देवी को भारतीय नृत्य में उनके योगदान के लिए कई प्रतिष्ठित पुरस्कार मिले, जिनमें संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार, पद्म श्री, और कालीदास सम्मान शामिल हैं। कम उम्र में ही रवींद्रनाथ ठाकुर ने उन्हें ष्कृत्य सम्राज्ञी की उपाधि दी थी।

2. पंडित कुंदन लाल गंगानी (1927–2002)

– कलात्मक योगदान: पंडित कुंदन लाल गंगानी अपने लय और पढ़ंत (ताल और बोल के वाचन) की महारत के लिए प्रसिद्ध थे। वे एक कुशल कोरियोग्राफर और शिक्षक थे, जिन्होंने बनारस घराने के तकनीकी पहलुओं को और निखारा, जिसमें जटिल तत्कार (पैरों की थाप) और चक्कर (घुमाव) शामिल हैं। उनकी शिक्षाओं ने विभिन्न नृत्य विद्यालयों में इस शैली का प्रचार-प्रसार किया।

– पुरस्कार और सम्मान: उन्हें कथक में उनके योगदान के लिए संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार मिला। वे कई पीढ़ियों के नर्तकों के लिए एक आदर्श और प्रेरणास्रोत रहे हैं। उनके तकनीकी कौशल ने बनारस घराने को समृद्ध करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

3. पंडित किशन महाराज (1923–2008)

– कलात्मक योगदान: हालाँकि पंडित किशन महाराज मुख्य रूप से एक तबला वादक के रूप में प्रसिद्ध थे, वे बनारस घराने के कथक के साथ लय (रिदम) और ताल (बीट्स) में अपने योगदान के लिए जुड़े रहे। उन्होंने कई कथक कलाकारों के साथ सहयोग किया, जिससे उनकी प्रस्तुतियों की जटिलताओं में निखार आया।

– पुरस्कार और सम्मान: उन्हें भारतीय शास्त्रीय संगीत में उनके योगदान के लिए पद्म श्री और पद्म विभूषण से सम्मानित किया गया, जिसका कथक की संगीतमयता पर गहरा प्रभाव पड़ा।

4. पंडित गोपी कृष्ण (1935–1984)

– कलात्मक योगदान: पंडित गोपी कृष्ण अपने ऊर्जावान नृत्य शैली के लिए जाने जाते थे, जिसने बनारस घराने में एक जीवंतता और अभिव्यक्तिपूर्ण तत्व जोड़ा। उन्होंने पारंपरिक कथक के साथ आधुनिक प्रभावों को अभिनव रूप से जोड़ा, जिससे

यह समकालीन दर्शकों के लिए भी आकर्षक बना। उन्होंने फिल्मों में भी काम किया, जिससे बनारस घराने की पहचान सिनेमाई मंच पर भी बनी।

– पुरस्कार और सम्मान: उन्होंने अपने करियर के दौरान संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार सहित कई सम्मान प्राप्त किए। उन्होंने शास्त्रीय नृत्य और लोकप्रिय मीडिया के बीच सेतु का काम किया, जिससे बनारस घराने का प्रोफाइल और व्यापक दर्शकों तक पहुँचा।

शास्त्रीय संगीत के साथ जुड़ाव

बनारस घराने ने हमेशा बनारस की शास्त्रीय संगीत परंपराओं, विशेष रूप से तुमरी और भजन, के साथ घनिष्ठ संबंध बनाए रखा है। इस घराने के कलाकार, जैसे सितारा देवी और सास्वती सेन, अक्सर ऐसे शास्त्रीय रचनाओं पर प्रदर्शन करते हैं, जो क्षेत्र की भक्ति भावना को दर्शाते हैं। यह शास्त्रीय संगीत के साथ जुड़ाव कथक की भावपूर्ण कथा कहने की कला को और गहराई देता है, जिससे कलाकार अपने नृत्य में तकनीकी निपुणता और भावनात्मक गहराई दोनों का प्रदर्शन कर पाते हैं। इन महान कलाकारों ने बनारस घराने के संरक्षण और विकास में अपनी अनूठी भूमिका निभाई है, जिससे यह शैली भक्ति, लय, और कथा कहने की कला में समृद्ध हुई है। उनकी प्रतिबद्धता ने न केवल इस घराने की परंपराओं को जीवित रखा है, बल्कि इसे वाराणसी की जड़ों से आगे बढ़ाते हुए व्यापक दर्शकों तक पहुँचाया है।

● जयपुर घराना

जयपुर घराना कथक का एक प्रमुख घराना है, जिसकी उत्पत्ति और विकास राजस्थान के जयपुर में हुआ। यह घराना अपनी ऊर्जा, जटिल तालबद्धता, और विशिष्ट शारीरिक गतियों के लिए प्रसिद्ध है। जयपुर घराने का उदय मुख्य रूप से 18वीं और 19वीं शताब्दी में हुआ, जब यह घराना राजपूत दरबारों में फला-फूला। इस घराने की

विशेषता इसके शक्तिशाली और शास्त्रीय प्रदर्शन शैली में है। जयपुर घराने की उत्पत्ति राजस्थान के राजपूत राजाओं के संरक्षण में हुई, जो कला प्रेमी थे और शास्त्रीय नृत्य व संगीत के संरक्षक माने जाते थे। इस घराने की शुरुआत भानुजी और उनके पुत्र मलूजी द्वारा मानी जाती है, जिन्होंने जयपुर के विभिन्न दरबारों में कथक नृत्य प्रस्तुत किया। राजाओं के संरक्षण में इस शैली को युद्ध कौशल और वीरता की भावना से प्रभावित किया गया, जिससे इस घराने में तेज और शक्तिशाली गतियाँ उभर कर आईं। जयपुर घराने की परंपरा में नृत्य के माध्यम से युद्ध और वीरता को प्रदर्शित करने की प्रवृत्ति शामिल है। राजपूतों की युद्ध परंपरा और शक्ति ने इस घराने की शैली में गहरी छाप छोड़ी है। जयपुर घराना अन्य कथक घरानों से इस मायने में अलग है कि इसमें शरीर की गतियाँ और घुंघरुओं का प्रयोग अधिक उर्जावान और तेज गति में किया जाता है। इस घराने में तंत्र और जटिल तालबद्धता पर विशेष ध्यान दिया जाता है। इसमें तीनताल, झपताल, एकताल जैसी कठिन तालों का प्रयोग किया जाता है। नर्तक उच्च गति में इन तालों का प्रदर्शन करते हैं, जिससे उनकी लय पर पकड़ स्पष्ट होती है। इस घराने में हस्तक (हाथ की गति) और पदचालन (पैरों का कार्य) पर अधिक जोर दिया जाता है, जो इसे अद्वितीय बनाता है।

जयपुर घराने के चक्करों (घूमना) की विशेषता इसकी तीव्रता और तालमेल में है। नर्तक लगातार और तेज गति में चक्कर लगाते हैं, जिससे उनकी सहनशक्ति और नियंत्रण क्षमता का प्रदर्शन होता है। यह शैली अधिक गति और शक्ति का प्रयोग करती है, जो इसकी पहचान बनाता है। यद्यपि जयपुर घराना नृत्य के शुद्ध अंगों पर केंद्रित है, यह अभिनय (हाव-भाव) और भक्ति के विषयों पर भी जोर देता है। जयपुर घराने की प्रस्तुतियों में शिव, दुर्गा, और अन्य देवताओं की कथाओं को अधिक प्रस्तुत किया जाता है। इस घराने की शैली में तांडव (शिव का उग्र नृत्य) के भावों को शामिल किया गया है, जो इस घराने की उग्रता और ऊर्जा को दर्शाता है। जयपुर घराने में ज्ञान का हस्तांतरण गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से हुआ है। दुर्गा लाल जी, कुन्दनलाल गंगानी, और गोपी कृष्ण जैसे प्रमुख नर्तक इस घराने की परंपरा को आगे बढ़ाने में महत्वपूर्ण रहे हैं। इन गुरुओं ने अपने शिष्यों को न केवल तकनीकी कौशल बल्कि घराने की भावनात्मक और सांस्कृतिक गहराई से भी जोड़ा। आधुनिक

समय में जयपुर घराने के कलाकारों ने विभिन्न मंचों पर अपनी शैली का प्रदर्शन किया है, जिससे इस घराने की पहचान वैश्विक स्तर पर बढ़ी है। शास्त्रीय शैली के साथ-साथ इस घराने ने कुछ आधुनिक तत्वों को भी अपनाया है, जिससे यह समय के साथ प्रासंगिक बना हुआ है। संक्षेप में, जयपुर घराना कथक का एक महत्वपूर्ण घराना है जो अपनी ऊर्जा, जटिल तालों, तेज चक्करों और शुद्ध नृत्य पर आधारित प्रस्तुतियों के लिए प्रसिद्ध है। राजपूत दरबारों के संरक्षण में उत्पन्न यह घराना भारतीय सांस्कृतिक धरोहर का एक अद्वितीय हिस्सा है, जो अपनी प्राचीनता के साथ आधुनिकता को भी अपनाए हुए है। इसके नर्तकों ने इस शैली को विकसित और संजोकर रखा है, जिससे जयपुर घराने की विरासत आज भी जीवित है और दर्शकों को अपनी शक्ति और तालमेल से आकर्षित करती है।

जयपुर घराने के कई महान नर्तकों ने इस शैली को विकसित और लोकप्रिय बनाया है। यहाँ पाँच प्रमुख हस्तियों का विवरण दिया गया है, जिनमें उनके कलात्मक योगदान, उनकी विरासत, और परिवार के योगदान का उल्लेख है:

1. पंडित गिरधारी महाराज (1880–1945)

– कलात्मक योगदान: पंडित गिरधारी महाराज जयपुर घराने के एक वरिष्ठ नर्तक और शिक्षक थे, जिन्होंने घराने की पारंपरिक शैली को संरक्षित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उनके नृत्य में युद्ध कौशल और वीरता की भावना प्रमुखता से उभर कर आती थी, जो राजपूत संस्कृति से प्रेरित थी। उन्होंने अपने शिष्यों को कड़े अभ्यास के माध्यम से शुद्ध तकनीकी ज्ञान प्रदान किया।

– विरासतरू पंडित गिरधारी महाराज ने कई प्रतिभावान शिष्यों को प्रशिक्षित किया, जिनमें से कई ने घराने की परंपरा को आगे बढ़ाया। उनकी शिक्षाओं ने जयपुर घराने के नृत्य में शक्ति और परिशुद्धता को बढ़ाया।

2. कुंदनलाल गंगानी (1926–1988)

– कलात्मक योगदान: कुंदनलाल गंगानी जयपुर घराने के एक महान गुरु

और कोरियोग्राफर माने जाते हैं। उनकी प्रस्तुतियाँ और कोरियोग्राफी के लिए वे अत्यधिक प्रसिद्ध थे, विशेषकर उनके तालबद्धता और पदचालन के लिए। वे अपने शिष्यों के साथ ताल, लय और नृत्य की बारीकियों पर गहरी पकड़ बनाते थे।

– पुरस्कार और सम्मान: उन्हें कथक में अपने योगदान के लिए संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। उनकी शिक्षण शैली ने कई नर्तकों को प्रेरित किया और घराने की तकनीकी परिशुद्धता में वृद्धि की।

3. सुंदरलाल गंगानी (1935 –)

– कलात्मक योगदान: सुंदरलाल गंगानी, कुंदनलाल गंगानी के भाई, जयपुर घराने के वरिष्ठ नर्तक और संगीतकार माने जाते हैं। वे अपने जटिल नृत्य संयोजनों और अनूठे ताल प्रबंध के लिए प्रसिद्ध हैं। उन्होंने नृत्य में संगीत और लय को इतनी खूबसूरती से मिलाया कि उनकी प्रस्तुतियाँ अधिक भावनात्मक और प्रभावी होती हैं।

– पुरस्कार और सम्मान: उन्होंने अपने कार्य के लिए कई पुरस्कार प्राप्त किए और राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय मंचों पर जयपुर घराने को सम्मान दिलाया। उनके द्वारा प्रशिक्षित शिष्यों में से कई ने राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त की है।

4. पंडित दुर्गा लाल (1948–1990)

– कलात्मक योगदान: पंडित दुर्गा लाल जयपुर घराने के प्रमुख नर्तकों में से एक माने जाते हैं। वे अपनी तेज गति, जटिल ताल और गहरे अभिव्यक्तिपूर्ण शैली के लिए प्रसिद्ध थे। उन्होंने अपनी पूरी ऊर्जा के साथ मंच पर प्रस्तुति दी, जिसमें उनकी सहजता और तकनीकी दक्षता साफ झलकती थी। दुर्गा लाल ने अपने नृत्य में भक्ति का भाव शामिल किया और शिव के तांडव रूप को बखूबी प्रस्तुत किया।

– पुरस्कार और सम्मान: उन्होंने अपने जीवनकाल में कई प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त किए, जिनमें संगीत नाटक अकादमी पुरस्कार और राष्ट्रीय कलाक्षेत्र पुरस्कार शामिल हैं। उनकी स्मृति में उनके योगदान को याद करते हुए कई युवा नर्तक उन्हें प्रेरणा मानते हैं।

5. रुचि शर्मा

– कलात्मक योगदान: पंडित दुर्गा लाल की बेटी, रुचि शर्मा ने अपने पिता की विरासत को आगे बढ़ाया और जयपुर घराने की शैली को नई पीढ़ी में लोकप्रिय बनाया। वे अपनी माता रेखा दुर्गा लाल से भी प्रशिक्षित हुईं और अपनी कला में उत्कृष्टता प्राप्त की। उनके नृत्य में उनके पिता की शैली और भावनात्मक गहराई स्पष्ट रूप से देखने को मिलती है।

– पुरस्कार और सम्मान: रुचि शर्मा को कई पुरस्कार और सम्मान प्राप्त हुए हैं। उन्होंने अपने पिता की शिक्षाओं और घराने की तकनीकी बारीकियों को जीवित रखा है, जिससे वे जयपुर घराने की महत्वपूर्ण प्रतिनिधि मानी जाती हैं।

इन पाँच हस्तियों ने जयपुर घराने के संरक्षण और विकास में अपनी अनूठी भूमिका निभाई है। उनके योगदान से जयपुर घराना अपनी विशिष्टता और समृद्ध परंपरा के साथ न केवल राष्ट्रीय बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी एक सम्मानित शैली बना है। उनके प्रयासों ने न केवल इस शैली को आधुनिक दर्शकों के लिए प्रासंगिक बनाया है बल्कि नई पीढ़ी के कलाकारों को भी प्रेरित किया है।

• शिक्षण संस्थानों के माध्यम से प्रचार प्रसार

कथक नृत्य का प्रचार-प्रसार और इसे नई पीढ़ी तक पहुँचाने में शिक्षण संस्थानों की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। जहाँ कथक पहले मुख्य रूप से मंदिरों और दरबारों में प्रस्तुत किया जाता था, वहीं आज यह विभिन्न सरकारी और निजी शिक्षण संस्थानों के माध्यम से संरक्षित और संवर्धित किया जा रहा है। ये संस्थान कथक को औपचारिक शिक्षा प्रणाली में शामिल कर रहे हैं, जिससे छात्र इस शास्त्रीय नृत्य शैली की गहराई को समझ सकें और इसकी समृद्ध परंपरा को आत्मसात कर सकें। शिक्षण संस्थान कथक को केवल एक नृत्य के रूप में ही नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति और परंपरा का प्रतीक मानते हुए इसे वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करने में भी योगदान दे रहे हैं। विश्वविद्यालय, कला अकादमियाँ, और सांस्कृतिक संस्थाएँ कथक के तकनीकी और भावनात्मक पक्ष को सिखाने के साथ-साथ इसके इतिहास, विविधता, और शैलियों

के प्रति छात्रों में रुचि पैदा कर रही हैं।

- **औपचारिक शिक्षा और डिग्री प्रोग्राम**

भारत के कई प्रतिष्ठित सरकारी विश्वविद्यालय, जैसे इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय (छत्तीसगढ़), बनारस हिंदू विश्वविद्यालय (उत्तर प्रदेश), मुंबई विश्वविद्यालय (महाराष्ट्र), और महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय (वडोदरा, गुजरात), कथक नृत्य के औपचारिक अध्ययन के लिए जाने जाते हैं। इन विश्वविद्यालयों में कथक नृत्य के डिग्री प्रोग्राम, जैसे बी.ए., एम.ए., और पीएच.डी., उपलब्ध हैं, जो छात्रों को कथक की तकनीकी, शास्त्रीय, और सांस्कृतिक बारीकियों को समझने का अवसर प्रदान करते हैं। इन संस्थानों के पाठ्यक्रम और प्रदर्शन कार्यक्रम न केवल भारत में बल्कि वैश्विक स्तर पर भी कथक के प्रति रुचि बढ़ाने में सहायक हैं।

- **निजी विश्वविद्यालयों की भूमिका**

निजी विश्वविद्यालयों में भी कथक और भारतीय शास्त्रीय नृत्य की शिक्षा पर जोर दिया जा रहा है। डी.वाई. पाटिल विश्वविद्यालय (महाराष्ट्र) और लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी (पंजाब) जैसे निजी संस्थान कथक के प्रति छात्रों की रुचि को बढ़ावा देने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम, कार्यशालाएँ और सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित करते हैं। ये विश्वविद्यालय छात्रों को एक अनुकूल वातावरण में कथक सीखने का अवसर प्रदान करते हैं, जहाँ वे शास्त्रीय नृत्य की बारीकियों को समझते और सीखते हैं।

- **शिक्षण संस्थानों द्वारा कथक नृत्य का प्रचार—प्रसाररू नृत्य महोत्सव, ऑनलाइन शिक्षण और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर विस्तार**

कथक नृत्य भारतीय शास्त्रीय नृत्य का एक महत्वपूर्ण अंग है, जो अपनी भव्यता,

तकनीकी कौशल, और अभिव्यक्ति की गहराई के लिए विख्यात है। इस नृत्य शैली का विकास उत्तर भारत के मंदिरों और दरबारों में हुआ और धीरे-धीरे यह भारतीय सांस्कृतिक धरोहर का हिस्सा बन गया। आज के समय में, कथक नृत्य को संरक्षित और प्रसारित करने का कार्य विभिन्न शिक्षण संस्थानों द्वारा किया जा रहा है। इन संस्थानों में नियमित नृत्य महोत्सवों का आयोजन, ऑनलाइन शिक्षण की सुविधा और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भारतीय शास्त्रीय नृत्य के प्रसार के प्रयास शामिल हैं, जो कथक नृत्य की समृद्ध परंपरा को न केवल भारत में बल्कि विदेशों में भी विस्तार देने में सहायक हैं। शिक्षण संस्थानों द्वारा आयोजित नृत्य महोत्सव और सांस्कृतिक कार्यक्रम कथक नृत्य के प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सरकारी और निजी विश्वविद्यालय जैसे बनारस हिंदू विश्वविद्यालय, इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, मुंबई विश्वविद्यालय, और महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय जैसे संस्थान नियमित रूप से नृत्य महोत्सव और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन करते हैं। इन कार्यक्रमों में उभरते कलाकारों को अपनी कला को प्रदर्शित करने का अवसर मिलता है, जहाँ वे दर्शकों के सामने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर सकते हैं। इस प्रकार के महोत्सवों में भाग लेने से छात्रों का आत्मविश्वास बढ़ता है, और वे कथक नृत्य की बारीकियों को और गहराई से समझ पाते हैं। इसके साथ ही, ये महोत्सव कथक नृत्य के प्रति दर्शकों की जागरूकता बढ़ाते हैं, क्योंकि इनमें स्थानीय से लेकर अंतरराष्ट्रीय दर्शक शामिल होते हैं, जो कथक की सुंदरता और विविधता से प्रभावित होते हैं। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से कथक की परंपरा को न केवल विद्यार्थियों में बल्कि व्यापक समुदाय में प्रोत्साहित किया जाता है, जिससे इसे भारतीय संस्कृति का अभिन्न हिस्सा माना जाने लगा है।

वर्तमान डिजिटल युग में, ऑनलाइन शिक्षण का प्रभाव भी कथक नृत्य के प्रसार में अत्यंत महत्वपूर्ण है। अधिकांश शिक्षण संस्थानों ने ऑनलाइन शिक्षण और डिजिटल संसाधनों का उपयोग करना शुरू कर दिया है, जिससे दूरदराज के छात्रों को भी कथक का प्रशिक्षण प्राप्त हो रहा है। डिजिटल प्लेटफॉर्म के माध्यम से छात्रों को कथक के विभिन्न घरानों, तकनीकों और शैलियों का अध्ययन करने का अवसर मिलता है, जिससे उनकी जानकारी में विस्तार होता है। ऑनलाइन कक्षाओं में

गुरु-शिष्य परंपरा की भावना का पालन करते हुए, छात्रों को उनके स्तर के अनुसार प्रशिक्षित किया जाता है और उन्हें निर्देश दिए जाते हैं। इसके अलावा, ऑनलाइन पाठ्यक्रमों के माध्यम से कथक के सिद्धांत और इतिहास पर भी ध्यान दिया जा रहा है, जिससे छात्र इस नृत्य शैली के सांस्कृतिक महत्व को भी समझ सकें। ऑनलाइन शिक्षण के माध्यम से न केवल भारत में बल्कि विदेशों में भी कथक की पहुँच बढ़ी है और इसे वैश्विक पहचान मिली है। ऐसे कई डिजिटल प्लेटफॉर्म हैं, जहाँ छात्रों को कथक की बारीकियों का ज्ञान दिया जाता है, जिससे वे न केवल तकनीकी दृष्टिकोण से बल्कि भावनात्मक दृष्टिकोण से भी कथक की गहराई को समझ पाते हैं।

अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कथक के प्रसार में भी शिक्षण संस्थानों की महत्वपूर्ण भूमिका है। भारत के कई प्रमुख विश्वविद्यालयों और कला संस्थानों ने विदेशी विश्वविद्यालयों के साथ सहयोग किया है, जिससे भारतीय शास्त्रीय नृत्य का वैश्विक मंच पर प्रचार हो रहा है। विभिन्न साझेदारी कार्यक्रमों के माध्यम से, कई विदेशी छात्रों और शिक्षकों को भारतीय शास्त्रीय नृत्य के प्रति जागरूक किया जा रहा है। ऐसे कार्यक्रमों के माध्यम से न केवल भारतीय संस्कृति और नृत्य शैली का प्रचार हो रहा है, बल्कि इसे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर एक नई पहचान भी मिल रही है। शिक्षण संस्थानों के विदेशी साझेदारियाँ कथक नृत्य को एक ग्लोबल आर्ट फॉर्म के रूप में प्रस्तुत करने में सहायक सिद्ध हो रही हैं। इसके अलावा, कई भारतीय कलाकार और कथक गुरु विदेशी संस्थानों में अतिथि शिक्षकों के रूप में आमंत्रित किए जाते हैं, जो अपने अनुभव और ज्ञान को वैश्विक छात्रों के साथ साझा करते हैं। इस प्रकार, कथक नृत्य को एक वैश्विक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया जा रहा है, जो न केवल भारतीय संस्कृति की गहराई को उजागर करता है, बल्कि इसे एक अंतरराष्ट्रीय दर्शक वर्ग तक पहुँचाने में भी सहायक है।

नृत्य महोत्सवों, ऑनलाइन शिक्षा और अंतरराष्ट्रीय साझेदारियों के माध्यम से कथक नृत्य का प्रचार और प्रसार हो रहा है, जिससे नई पीढ़ी में इस कला के प्रति रुचि बढ़ रही है। सरकारी और निजी विश्वविद्यालयों की पहल ने कथक नृत्य को नए दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है और इसके शिक्षण के लिए एक संगठित दृष्टिकोण प्रदान किया है। इन संस्थानों की बदौलत कथक केवल एक नृत्य शैली तक सीमित नहीं

रहा, बल्कि एक सांस्कृतिक धरोहर के रूप में पहचान बना चुका है। ये प्रयास कथक नृत्य को विश्वस्तर पर बढ़ावा देने में सहायक सिद्ध हो रहे हैं, जिससे यह नृत्य शैली आने वाली पीढ़ियों तक जीवित रहे और भारतीय संस्कृति का प्रतीक बने।

- **तकनीकी प्रणालियाँ: कथक नृत्य के प्रचार-प्रसार में एक साधन के रूप में**

तकनीकी प्रगति ने कला और सांस्कृतिक धरोहरों को संरक्षित करने और प्रचारित करने के क्षेत्र में नए आयाम जोड़े हैं। भारतीय शास्त्रीय नृत्य, विशेष रूप से कथक, भी इस डिजिटल युग में आधुनिक तकनीकी प्रणालियों के माध्यम से व्यापक स्तर पर पहुँच पा रहा है। पहले कथक केवल गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचता था, जो मुख्य रूप से व्यक्तिगत प्रशिक्षण और प्रदर्शन पर आधारित था। लेकिन आज, तकनीकी साधनों और डिजिटल प्लेटफॉर्म के उपयोग से यह नृत्य शैली सीमाओं से परे पहुँच रही है, जिससे कथक न केवल भारत में बल्कि विदेशों में भी लोकप्रियता प्राप्त कर रहा है। तकनीकी प्रणालियों का उपयोग कथक नृत्य के प्रचार-प्रसार में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है और इसे एक आधुनिक आयाम प्रदान कर रहा है।

डिजिटल मीडिया और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे यूट्यूब, फेसबुक, इंस्टाग्राम, और ट्विटर के माध्यम से कथक कलाकार अपने प्रदर्शन वीडियो, शॉर्ट क्लिप्स और शैक्षिक सामग्री साझा कर रहे हैं। इन प्लेटफॉर्मों के माध्यम से वे न केवल अपने नृत्य कौशल को प्रदर्शित कर सकते हैं, बल्कि कथक के प्रति रुचि रखने वाले विद्यार्थियों को सीखने का एक व्यापक अवसर भी प्रदान कर सकते हैं। यूट्यूब जैसे प्लेटफॉर्मों पर कथक की शैलियों, घरानों, और तकनीकी बारीकियों पर आधारित वीडियो के माध्यम से लोग घर बैठे कथक का ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं। ये प्लेटफॉर्म न केवल अधिक दर्शकों को जोड़ते हैं, बल्कि कथक के प्रति जागरूकता भी बढ़ाते हैं। ऑनलाइन शिक्षा प्रणाली भी कथक नृत्य के प्रचार में प्रभावी रही है। डिजिटल कक्षाओं और वेबिनार के माध्यम से कई गुरु और कलाकार कथक का प्रशिक्षण दे

रहे हैं। आजकल कथक के लिए समर्पित कई ऑनलाइन अकादमियाँ और पोर्टल्स हैं, जो विभिन्न स्तरों के पाठ्यक्रम उपलब्ध कराते हैं। यह तकनीकी पहल उन लोगों के लिए एक वरदान साबित हुई है, जो स्थान या समय की सीमाओं के कारण शारीरिक रूप से किसी संस्थान में नहीं जा सकते। इसके माध्यम से वे अपने घर से ही कथक की शिक्षा ले सकते हैं और इसे गहराई से सीख सकते हैं। वर्चुअल रियलिटी (वीआर) और ऑगमेंटेड रियलिटी (एआर) जैसी आधुनिक तकनीकें भी कथक के अनुभव को अधिक सजीव बनाने में सहायक हो रही हैं। वीआर और एआर के माध्यम से दर्शकों को एक ऐसा अनुभव प्रदान किया जा रहा है, जिसमें वे मानो कलाकार के साथ ही मंच पर हों। यह तकनीकी उपयोग दर्शकों को कथक के हर तत्व को महसूस करने का अवसर देता है, जिससे इस नृत्य शैली के प्रति एक नई समझ और रुचि उत्पन्न होती है।

इसके अतिरिक्त, कथक के प्रदर्शन को संरक्षित करने और इसका डिजिटल आर्काइव तैयार करने के लिए कई संस्थान तकनीकी उपकरणों का उपयोग कर रहे हैं। उच्च गुणवत्ता वाले रिकॉर्डिंग उपकरण, डिजिटल स्टोरेज और क्लाउड स्टोरेज के माध्यम से कथक के दुर्लभ प्रदर्शन और प्रशिक्षण सामग्री को संरक्षित किया जा रहा है, जिससे यह भावी पीढ़ियों के लिए भी उपलब्ध रहे। संक्षेप में, तकनीकी प्रणालियाँ कथक के प्रचार-प्रसार में एक महत्वपूर्ण साधन बन गई हैं। डिजिटल प्लेटफॉर्म, ऑनलाइन कक्षाएँ, वीआर/एआर तकनीक, और डिजिटल आर्काइव के माध्यम से कथक को एक नई पहचान मिल रही है, जिससे यह नृत्य शैली एक वैश्विक मंच पर प्रसारित हो रही है। तकनीकी साधनों के प्रभावी उपयोग से कथक न केवल भारतीय बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी एक प्रमुख नृत्य शैली के रूप में उभर रहा है।

● रेडियो

कथक नृत्य के प्रचार में रेडियो की भूमिका महत्वपूर्ण है। रेडियो, भारत में सबसे पुराने और प्रभावशाली संचार माध्यमों में से एक है, जिसने दशकों से कला, संगीत,

और संस्कृति के प्रचार में अहम भूमिका निभाई है। जहाँ कथक जैसी शास्त्रीय नृत्य शैलियाँ आम तौर पर दृश्य माध्यमों पर आधारित होती हैं, वहीं रेडियो ने कथक नृत्य के प्रति लोगों में रुचि जगाने और इसे समझने में एक अद्वितीय भूमिका निभाई है। रेडियो के माध्यम से कथक की जानकारी, इसके इतिहास, घरानों की विविधता, प्रमुख कलाकारों के साक्षात्कार और शास्त्रीय संगीत के बारे में व्यापक जानकारी सुनने को मिलती है, जो श्रोताओं को कथक नृत्य के प्रति आकर्षित करती है। रेडियो के माध्यम से कथक के सैद्धांतिक पहलुओं, इसकी उत्पत्ति, विकास, और विविध शैलियों के बारे में कार्यक्रम प्रसारित किए जाते हैं। रेडियो पर श्रोताओं को कथक के मूल तत्वों, जैसे कि तत्कार (पैरों की थाप), चक्कर (घुमाव), और अभिनय (भाव-भंगिमाएँ) के बारे में जानकारी मिलती है। इसके अतिरिक्त, कथक के प्रमुख घरानोंकृजैसे लखनऊ, जयपुर, और बनारसकृकी विशेषताओं का वर्णन भी रेडियो पर किया जाता है, जिससे श्रोताओं को नृत्य के विभिन्न रूपों की समझ मिलती है।

रेडियो अक्सर कथक के दिग्गज कलाकारों, जैसे पंडित बिरजू महाराज, शंभु महाराज, और सितारा देवी, के साक्षात्कार प्रसारित करता है। इन साक्षात्कारों के माध्यम से कलाकार अपने व्यक्तिगत अनुभव, कथक के प्रति अपने दृष्टिकोण, और नृत्य की बारीकियों के बारे में श्रोताओं से साझा करते हैं। यह न केवल श्रोताओं को कथक नृत्य की गहरी जानकारी देता है, बल्कि उन्हें प्रोत्साहित भी करता है। उभरते कलाकारों के लिए यह अनुभव और ज्ञान प्रेरणादायक होते हैं, जिससे वे इस कला को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित होते हैं। रेडियो पर कथक से जुड़े शास्त्रीय संगीत और ताल का प्रसारण कथक नृत्य के प्रचार में महत्वपूर्ण योगदान देता है। कथक नृत्य में ताल और रिदम की अहम भूमिका होती है, और रेडियो पर तबला, पखावज, और अन्य तालवाद्यों की ध्वनि का प्रसारण श्रोताओं को कथक के संगीत पक्ष से परिचित कराता है। रेडियो के श्रोता इन ध्वनियों के माध्यम से कथक नृत्य की लयबद्धता और ताल का अनुभव कर पाते हैं, जिससे उन्हें कथक का संगीत पक्ष समझने का अवसर मिलता है।

रेडियो चैनल, विशेषकर आकाशवाणी जैसे राष्ट्रीय चैनल, नियमित रूप से कथक महोत्सवों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों, और अन्य शास्त्रीय नृत्य के आयोजनों का प्रसारण

और प्रचार करते हैं। श्रोता इन कार्यक्रमों के प्रसारण से न केवल कथक के बारे में अधिक जानकारी प्राप्त करते हैं, बल्कि उन्हें कथक की विविध प्रस्तुतियों का आनंद भी मिलता है। रेडियो पर लाइव या रिकॉर्डेड कार्यक्रमों का प्रसारण उन लोगों को कथक का अनुभव करने का मौका देता है, जो स्थान और समय की बाधाओं के कारण ऐसे आयोजनों में नहीं जा सकते। रेडियो का उपयोग कथक नृत्य के प्रशिक्षण और शिक्षण कार्यक्रमों की जानकारी देने के लिए भी किया जाता है। रेडियो के माध्यम से कथक से जुड़े शिक्षण संस्थानों, कार्यशालाओं, और प्रशिक्षण कार्यक्रमों की जानकारी श्रोताओं तक पहुँचाई जाती है। यह जानकारी उन लोगों के लिए विशेष रूप से सहायक होती है, जो कथक नृत्य में रुचि रखते हैं और इसे सीखना चाहते हैं। इसके माध्यम से वे सही संस्थान या गुरु का चयन कर सकते हैं और कथक के प्रशिक्षण में शामिल हो सकते हैं।

रेडियो, विशेषकर ग्रामीण और दूरदराज क्षेत्रों में, कथक नृत्य के प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। टेलीविजन और इंटरनेट की सीमित पहुँच के बावजूद, रेडियो अपनी व्यापक पहुँच के कारण इन क्षेत्रों में कथक नृत्य की जानकारी पहुँचाने का एक प्रभावी साधन है। रेडियो कार्यक्रमों के माध्यम से गाँवों और छोटे शहरों के लोग कथक की परंपरा और शास्त्रीयता से परिचित हो पाते हैं, जिससे भारतीय शास्त्रीय नृत्य में उनकी रुचि बढ़ती है। कथक नृत्य के प्रचार में रेडियो की भूमिका महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह नृत्य के सैद्धांतिक और सांस्कृतिक पहलुओं को व्यापक रूप से प्रसारित करने में सहायक है। रेडियो के माध्यम से श्रोता कथक नृत्य की गहराई को समझ सकते हैं, कलाकारों के अनुभवों से प्रेरित हो सकते हैं, और संगीत तथा ताल के माध्यम से इसकी ध्वनियों का आनंद ले सकते हैं। रेडियो का प्रभाव न केवल शहरों में बल्कि ग्रामीण इलाकों में भी कथक के प्रति जागरूकता बढ़ाने में सहायक है। इस प्रकार, रेडियो भारतीय शास्त्रीय नृत्य, विशेषकर कथक, के प्रचार में एक सशक्त माध्यम के रूप में उभर कर आया है।

• टेलीविजन

टेलीविजन, भारत में सबसे व्यापक और प्रभावशाली संचार माध्यमों में से एक है, जिसने कला, संगीत, और संस्कृति के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। विशेषकर कथक नृत्य जैसी शास्त्रीय कलाओं के लिए, टेलीविजन ने एक ऐसा मंच प्रदान किया है, जहाँ न केवल भारतीय दर्शक बल्कि अंतरराष्ट्रीय दर्शक भी इस कला से परिचित हो सकते हैं। टेलीविजन के माध्यम से कथक नृत्य की तकनीकी बारीकियों, इसकी विविध शैलियों और घरानों, और प्रमुख कलाकारों के अद्वितीय प्रदर्शन को एक विशाल दर्शक वर्ग तक पहुँचाया जा रहा है। कई चैनल, जैसे दूरदर्शन और अन्य कला-आधारित चैनल, शास्त्रीय नृत्य पर विशेष कार्यक्रमों का प्रसारण करते हैं। ये कार्यक्रम कथक नृत्य के ऐतिहासिक पहलुओं, इसकी विविधताओं और तकनीकी बारीकियों पर ध्यान केंद्रित करते हैं। दर्शक इन कार्यक्रमों के माध्यम से कथक के विभिन्न घरानों, जैसे लखनऊ, जयपुर और बनारस घराने की विशेषताओं को समझ सकते हैं। इन कार्यक्रमों में पारंपरिक और समकालीन कथक प्रदर्शनों को प्रस्तुत किया जाता है, जिससे कथक के प्रति दर्शकों की रुचि बढ़ती है और वे इस नृत्य शैली के प्रति आकर्षित होते हैं।

वर्तमान में, कई टेलीविजन रियलिटी शो, जैसे डांस इंडिया डांस, इंडिया गॉट टैलेंट, और नृत्य सागर जैसे कार्यक्रमों ने कथक नृत्य को बढ़ावा देने में बड़ी भूमिका निभाई है। इन शो में कई युवा और अनुभवी कथक कलाकार अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हैं, जिससे दर्शकों को कथक नृत्य की महत्ता का एहसास होता है। रियलिटी शो की लोकप्रियता ने कथक को न केवल आम लोगों तक पहुँचाया है, बल्कि इसे आधुनिक परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत करने का अवसर भी प्रदान किया है। इन शो में कथक के पारंपरिक तत्वों के साथ-साथ आधुनिक तत्वों को भी प्रस्तुत किया जाता है, जो इसे नई पीढ़ी के लिए आकर्षक बनाता है। टेलीविजन पर कई कलाकारों के विशेष साक्षात्कार, वर्कशॉप, और परफॉर्मेंस का प्रसारण किया जाता है, जहाँ दर्शकों को कथक के प्रमुख कलाकारों के विचार और उनके अनुभव जानने का अवसर मिलता है। इन कार्यक्रमों में दिग्गज कथक कलाकारों जैसे पंडित बिरजू महाराज, सितारा

देवी, और शंभु महाराज के साक्षात्कार भी प्रसारित किए जाते हैं, जिनमें वे कथक के महत्व, तकनीकी कौशल, और इस कला के प्रति अपने दृष्टिकोण को साझा करते हैं। ऐसे कार्यक्रम उभरते कलाकारों को प्रेरणा देते हैं और दर्शकों को कथक की गहराई से परिचित कराते हैं। विभिन्न त्योहारों और सांस्कृतिक महोत्सवों के अवसर पर टेलीविजन चैनल विशेष रूप से कथक और अन्य शास्त्रीय नृत्य शैलियों का सीधा प्रसारण करते हैं। ये महोत्सव न केवल कथक के प्रचार में सहायक होते हैं, बल्कि उन दर्शकों के लिए भी लाभकारी होते हैं जो स्थान और समय की सीमाओं के कारण इन आयोजनों में स्वयं शामिल नहीं हो सकते। टेलीविजन के माध्यम से वे इन महोत्सवों का घर बैठे आनंद ले सकते हैं, जिससे कथक की पहुँच और अधिक व्यापक हो जाती है।

इसके अतिरिक्त, डिजिटल टीवी और ओटीटी प्लेटफार्मों के माध्यम से भी कथक का प्रसार हो रहा है। आजकल टेलीविजन के कई चैनल अपने एप्स और वेबसाइट्स के माध्यम से कथक प्रदर्शनों और कार्यक्रमों की रिकॉर्डिंग उपलब्ध करा रहे हैं, जिससे दर्शक किसी भी समय इनका आनंद ले सकते हैं। यह सुविधा न केवल शहरी क्षेत्रों में बल्कि ग्रामीण क्षेत्रों में भी कथक की पहुँच को बढ़ा रही है। कुल मिलाकर, टेलीविजन ने कथक नृत्य को एक वैश्विक मंच पर प्रस्तुत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इसके माध्यम से दर्शक न केवल कथक की तकनीकी और सांस्कृतिक विशेषताओं को समझ सकते हैं, बल्कि इसे एक मनोरंजन और सांस्कृतिक अनुभव के रूप में भी देख सकते हैं। टेलीविजन के बढ़ते प्रभाव के साथ, कथक नृत्य की लोकप्रियता और इसकी शास्त्रीयता को संजोए रखने की दिशा में भी प्रयास हो रहे हैं, जो आने वाली पीढ़ियों के लिए एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक धरोहर के रूप में स्थापित हो रही है।

• मुद्रण

कथक नृत्य की प्राचीन परंपरा और सांस्कृतिक धरोहर को संरक्षित और प्रसारित करने में मुद्रण माध्यम का विशेष योगदान रहा है। समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, सांस्कृतिक

जर्नल, पुस्तकें, और अन्य मुद्रित सामग्री कथक के प्रचार-प्रसार में सहायक सिद्ध हुए हैं। मुद्रण माध्यमों ने न केवल कथक के इतिहास, तकनीकी बारीकियों और शैलियों को दर्ज किया है, बल्कि इस नृत्य शैली से जुड़े कलाकारों के योगदान को भी विस्तृत रूप से प्रस्तुत किया है। मुद्रित माध्यम ने कथक नृत्य के विभिन्न पहलुओं जैसे इसके इतिहास, उत्पत्ति, और घरानों का दस्तावेजीकरण किया है। विभिन्न सांस्कृतिक और शैक्षिक पत्रिकाओं में प्रकाशित लेखों और शोध-पत्रों ने कथक के मूल तत्वों, लखनऊ, जयपुर, और बनारस घरानों की विशेषताओं को विस्तार से प्रस्तुत किया है। ये लेख और शोध-पत्र कथक के तकनीकी और सांस्कृतिक पहलुओं की जानकारी देने के साथ-साथ इसकी परंपराओं को संरक्षित करने में सहायक होते हैं। मुद्रण माध्यम ने कथक नृत्य से जुड़े प्रमुख कलाकारों के जीवन और उनके योगदान को आम जनता तक पहुँचाया है। पंडित बिरजू महाराज, सितारा देवी, शंभु महाराज, और अन्य कथक कलाकारों के योगदान को विभिन्न बायोग्राफी, इंटरव्यू, और फीचर आर्टिकल्स के माध्यम से प्रस्तुत किया गया है। इन लेखों के माध्यम से पाठक कलाकारों की कला और उनके समर्पण को समझ सकते हैं, जिससे कथक के प्रति जागरूकता और रुचि बढ़ती है।

कथक नृत्य की तकनीकी बारीकियों, उसके सैद्धांतिक और व्यावहारिक पहलुओं पर आधारित पुस्तकों का प्रकाशन इस कला को संरक्षित और प्रसारित करने में एक अहम भूमिका निभाता है। विभिन्न लेखकों, कलाकारों, और विद्वानों द्वारा लिखी गई पुस्तकें कथक के विभिन्न पहलुओं, जैसे तत्कार, मुद्राएँ, चक्कर, और अभिनय के बारे में जानकारी देती हैं। शैक्षिक पाठ्यक्रम में कथक को शामिल करने के लिए भी मुद्रण माध्यम में सामग्री का उपयोग किया गया है, जिससे नई पीढ़ी कथक की गहराई को समझ सके और इसे संरक्षित कर सके। मुद्रित माध्यम ने कथक से जुड़े सांस्कृतिक कार्यक्रमों, महोत्सवों और नृत्य उत्सवों का प्रचार करने में भी बड़ी भूमिका निभाई है। समाचार पत्रों और पत्रिकाओं में कथक महोत्सवों, कार्यशालाओं, और विशेष प्रदर्शनियों की जानकारी प्रकाशित की जाती है, जिससे न केवल दर्शकों को ऐसे कार्यक्रमों के बारे में जानकारी मिलती है, बल्कि इन आयोजनों में अधिक से अधिक लोगों की सहभागिता भी सुनिश्चित होती है। इससे कथक के प्रति आम जनता में

जागरूकता और आकर्षण बढ़ता है। मुद्रण माध्यम में प्रकाशित विभिन्न शोध-पत्र और आलेख कथक के सैद्धांतिक अध्ययन को बढ़ावा देते हैं। कई शैक्षिक संस्थानों के विद्वानों द्वारा लिखे गए शोध-पत्र कथक नृत्य के ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, और तकनीकी पहलुओं पर गहन शोध करते हैं। ये शोध-पत्र और जर्नल लेख कथक नृत्य के बारे में एक गहन दृष्टिकोण प्रदान करते हैं, जिससे यह नृत्य शैली केवल प्रदर्शन तक सीमित नहीं रहती, बल्कि शैक्षिक अध्ययन का एक विषय भी बन जाती है।

मुद्रण माध्यम के माध्यम से नई पीढ़ी को कथक के प्रति प्रेरित करना आसान हुआ है। जब युवा पाठक कथक नृत्य से जुड़े लेख और कहानियाँ पढ़ते हैं, तो वे इस कला रूप के प्रति आकर्षित होते हैं और इसे सीखने के लिए प्रेरित होते हैं। कलाकारों के साक्षात्कार और उनके अनुभवों को पढ़कर, वे कथक नृत्य के प्रति एक सम्मान और रुचि का भाव विकसित करते हैं, जो उन्हें इस कला को आगे बढ़ाने के लिए प्रेरित करता है। मुद्रण माध्यम ने कथक नृत्य की समृद्ध परंपरा को संरक्षित करने और इसे व्यापक स्तर पर प्रसारित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, और पुस्तकों के माध्यम से कथक के प्रति जागरूकता बढ़ी है, जिससे यह नृत्य शैली आज भी अपनी सांस्कृतिक विरासत को संजोए हुए है और नई पीढ़ी में अपनी पहचान बनाए हुए है।

● इंटरनेट

इंटरनेट ने कथक जैसी शास्त्रीय नृत्य शैलियों के प्रचार और प्रसार में अभूतपूर्व योगदान दिया है। जहाँ पहले कथक को गुरु-शिष्य परंपरा के माध्यम से सीखने की प्रक्रिया का एक विशेष स्थान था, वहीं इंटरनेट ने इसे वैश्विक स्तर पर उपलब्ध कराते हुए एक व्यापक दर्शक वर्ग तक पहुँचाया है। ऑनलाइन प्लेटफॉर्म, सोशल मीडिया, और डिजिटल वीडियो स्ट्रीमिंग ने कथक नृत्य को एक नई पहचान और पहुँच प्रदान की है, जिससे यह न केवल भारत में बल्कि पूरी दुनिया में लोकप्रिय हो रहा है। इंटरनेट के माध्यम से कथक नृत्य के लिए कई ऑनलाइन पाठ्यक्रम और

प्रशिक्षण कार्यक्रम उपलब्ध हैं। विभिन्न डिजिटल प्लेटफार्मों पर गुरुओं और प्रशिक्षकों द्वारा लाइव और रिकॉर्डेड कक्षाएँ आयोजित की जाती हैं, जो छात्रों को कहीं से भी कथक सीखने की सुविधा देती हैं। इन ऑनलाइन कोर्सेस में विभिन्न स्तरों के लिए सामग्री उपलब्ध होती है, जिससे शुरुआती से लेकर उन्नत स्तर के छात्र भी कथक के गुरु सीख सकते हैं। यह उन लोगों के लिए विशेष रूप से लाभकारी है जो स्थान, समय, या संसाधनों की सीमाओं के कारण शारीरिक रूप से कक्षाओं में भाग नहीं ले सकते।

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे यूट्यूब, इंस्टाग्राम, फेसबुक, और ट्विटर ने कथक के प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। यूट्यूब पर कई कथक कलाकार अपने प्रदर्शन, प्रशिक्षण और सैद्धांतिक जानकारी के वीडियो साझा करते हैं, जिन्हें दुनिया भर के लोग देख सकते हैं। इंस्टाग्राम और फेसबुक जैसे प्लेटफार्मों पर कलाकार अपने नृत्य की छोटी क्लिप्स और लाइव सत्र आयोजित करते हैं, जहाँ वे न केवल अपनी कला का प्रदर्शन करते हैं, बल्कि दर्शकों से सीधे संवाद भी कर सकते हैं। सोशल मीडिया की इस पहुँच ने कथक को एक बड़े दर्शक वर्ग तक पहुँचाया है और इसे नई पीढ़ी के बीच और अधिक प्रचलित किया है। कथक पर आधारित ब्लॉग्स, लेख, और डिजिटल जर्नल्स ने भी इस नृत्य शैली को समझाने और प्रसारित करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। इंटरनेट पर कई ऐसे ब्लॉग्स और वेबसाइट्स उपलब्ध हैं जहाँ कथक की तकनीकी बारीकियों, विभिन्न घरानों, प्रमुख कलाकारों, और इस कला के इतिहास के बारे में जानकारी मिलती है। ये लेख और डिजिटल सामग्री न केवल कथक के अध्ययन को आसान बनाते हैं, बल्कि इसकी समृद्ध संस्कृति और परंपरा के प्रति लोगों में जागरूकता भी बढ़ाते हैं।

वीडियो स्ट्रीमिंग प्लेटफॉर्मस जैसे यूट्यूब लाइव, जूम, और अन्य डिजिटल मंचों पर कथक के लाइव प्रदर्शन और ऑनलाइन महोत्सव आयोजित किए जाते हैं। यह कलाकारों को एक बड़ा मंच प्रदान करता है जहाँ वे अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर सकते हैं और विभिन्न क्षेत्रों के दर्शकों से जुड़ सकते हैं। लाइव स्ट्रीमिंग के माध्यम से दुनियाभर के लोग कथक के लाइव प्रदर्शन का आनंद ले सकते हैं, जो किसी एक स्थान तक सीमित नहीं है। इस प्रकार, डिजिटल मंच कथक नृत्य की लोकप्रियता

बढ़ाने में सहायक सिद्ध हुए हैं। कथक नृत्य में ताल और संगीत का विशेष महत्व होता है, और ऑनलाइन प्लेटफॉर्म ने कलाकारों को ताल और संगीत सत्रों को इंटरनेट पर उपलब्ध कराने में सहायक बनाया है। विभिन्न ऑनलाइन ताल और संगीत कार्यशालाओं के माध्यम से कलाकारों और छात्रों को कथक के संगीत पक्ष से जोड़ने का अवसर मिलता है। ये सत्र न केवल कलाकारों को अभ्यास करने का अवसर देते हैं, बल्कि छात्रों को भी कथक की संगीतमयता और ताल की बारीकियों को सीखने का अवसर प्रदान करते हैं।

इंटरनेट के माध्यम से कथक नृत्य का प्रचार न केवल भारत में बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी हुआ है। कई विदेशी छात्र और कला प्रेमी, जो कथक नृत्य के प्रति रुचि रखते हैं, अब ऑनलाइन माध्यमों से इस कला को सीख सकते हैं। इसके अलावा, विदेशी नृत्य संस्थान और कला विद्यालय भी कथक के ऑनलाइन कोर्स और प्रदर्शन आयोजित कर रहे हैं, जिससे इस नृत्य शैली की पहुँच दुनिया के विभिन्न हिस्सों में भी बढ़ी है। इससे कथक को वैश्विक स्तर पर पहचान मिली है और इसे अंतरराष्ट्रीय दर्शकों तक पहुँचाया गया है।

इंटरनेट के प्रभाव से कथक नृत्य न केवल एक शास्त्रीय कला के रूप में संरक्षित हुआ है, बल्कि नई पीढ़ी और वैश्विक दर्शकों के बीच इसकी पहचान भी बढ़ी है। डिजिटल प्लेटफॉर्म, ऑनलाइन कोर्सेस, सोशल मीडिया, और वीडियो स्ट्रीमिंग ने कथक को एक वैश्विक मंच प्रदान किया है, जहाँ यह नृत्य शैली भारतीय संस्कृति की समृद्धि को पूरी दुनिया में फैलाने में सहायक हो रही है। इस प्रकार, इंटरनेट कथक के प्रचार और प्रसार में एक सशक्त साधन के रूप में उभर कर आया है।

● चलचित्रों के माध्यम से कथक का प्रचार एक सांस्कृतिक यात्रा

भारतीय सिनेमा ने कथक नृत्य के प्रचार और प्रसार में एक विशेष स्थान हासिल किया है। हिंदी सिनेमा, विशेष रूप से बॉलीवुड ने कथक नृत्य को बड़े पर्दे पर प्रस्तुत कर इसे लोकप्रिय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। जहाँ कथक एक

समय में केवल मंदिरों और दरबारों तक सीमित था, वहीं फिल्मों के माध्यम से यह कला आम दर्शकों के लिए सुलभ हो गई है। कथक के शास्त्रीयता और भावनात्मक अभिव्यक्ति को फिल्मों में एक विशेष शैली और सुंदरता के साथ प्रदर्शित किया गया है, जिससे कथक को न केवल भारत में, बल्कि अंतरराष्ट्रीय दर्शकों के बीच भी लोकप्रियता मिली है।

- **प्रसिद्ध कथक आधारित फिल्में और उनका प्रभाव**

बॉलीवुड की कई फिल्मों में कथक नृत्य को बड़ी भव्यता के साथ प्रदर्शित किया गया है, जिससे कथक को विशेष पहचान मिली है। एक प्रमुख उदाहरण 1960 में आई फिल्म 'मुगल-ए-आजम' है। इस फिल्म में मधुबाला का नृत्य, खासतौर से गीत प्यार किया तो डरना क्या के दृश्य में, कथक के अद्वितीय तत्वों का प्रदर्शन करता है। इस गीत में कथक का उपयोग न केवल एक शास्त्रीय नृत्य के रूप में किया गया, बल्कि एक भावनात्मक अभिव्यक्ति का भी माध्यम बना, जिससे कथक की तकनीकी और सांस्कृतिक गहराई को दर्शकों तक पहुँचाया गया। इसी तरह, 'अनारकली' जैसी फिल्में भी कथक को व्यापक दर्शक वर्ग तक पहुँचाने में सफल रहीं, जिसमें नृत्य के माध्यम से प्रेम, पीड़ा और त्याग जैसे गहरे भावों को प्रस्तुत किया गया। पाकीजा (1972) एक और ऐसी फिल्म है जिसमें कथक को उसकी पूर्णता के साथ प्रदर्शित किया गया। इस फिल्म में मीना कुमारी का नृत्य न केवल उनकी भूमिका को और अधिक गहराई देता है, बल्कि कथक की शुद्धता और तकनीकी बारीकियों को भी प्रदर्शित करता है। ष्टाड़े रहियो गीत में मीना कुमारी का नृत्य उनके अभिनय और कथक के संयुक्त भाव-प्रवाह को दर्शाता है। इस फिल्म ने कथक को केवल नृत्य तक सीमित न रखकर दर्शकों के लिए एक भावनात्मक अनुभव बना दिया, जिससे कथक की परंपरागत शैलियों का प्रचार हुआ।

- **सुप्रसिद्ध कथक कलाकारों की भागीदारी और फिल्मों का योगदान**

कथक के प्रमुख कलाकारों ने भी फिल्मों के माध्यम से इस कला को लोकप्रिय बनाने में योगदान दिया है। उमराव जान (1981) में रेखा द्वारा कथक का प्रदर्शन एक अद्वितीय उदाहरण है। इस फिल्म में रेखा ने कथक के शास्त्रीय तत्वों को जीवंत किया और उनकी भूमिका में नृत्य का सम्मिश्रण दर्शकों के लिए एक यादगार अनुभव बन गया। रेखा ने 'दिल चीज क्या है' और 'इन आँखों की मस्ती के' जैसे गीतों में कथक का बेहतरीन प्रदर्शन किया, जिससे कथक को एक भावनात्मक और सौंदर्यपूर्ण तरीके से प्रस्तुत किया गया। देवदास (2002) में माधुरी दीक्षित ने पारंपरिक कथक का प्रदर्शन किया, जिसने उनकी नृत्य प्रतिभा और कथक के प्रति उनकी गहरी समझ को उजागर किया। 'भार डाला' गीत में माधुरी ने कथक के चक्कर, तत्कार और अभिनय का समावेश कर इस नृत्य शैली को एक नई पहचान दी। इसी तरह, 'कांचीवरम' जैसी फिल्मों में भी प्रमुख अभिनेत्रियों ने कथक को अपने अभिनय के माध्यम से प्रस्तुत किया, जिससे दर्शकों में इस कला के प्रति रुचि बढ़ी।

- **नृत्य आधारित फिल्मों का योगदान और कथक की लोकप्रियता**

कुछ फिल्मों में कथक पर केंद्रित होती हैं और इनमें कथक को विशेष स्थान दिया गया है। नृत्य (1942) और कथकली (1957) जैसी फिल्मों में शास्त्रीय नृत्य पर गहन अध्ययन किया गया है, जिससे कथक के पारंपरिक तत्वों को फिल्मी माध्यम से दर्शकों तक पहुँचाया गया। इन फिल्मों में कथक के विभिन्न तत्वों जैसे अभिनय, मुद्राओं, चक्कर और तालों को प्रदर्शित किया गया है, जिससे यह कला रूप और भी आकर्षक और रोचक बन गया। हाल के वर्षों में, कथक पर आधारित फिल्मों की संख्या में कमी आई है, लेकिन फिर भी कथक का प्रभाव बॉलीवुड फिल्मों में देखा जा सकता है। नृत्य आधारित फिल्मों में कथक को केवल मनोरंजन का एक माध्यम न बनाकर इसे एक सांस्कृतिक और शैक्षिक अनुभव के रूप में प्रस्तुत करती हैं। इन फिल्मों ने दर्शकों को कथक के तकनीकी और शास्त्रीय पक्षों से परिचित कराया है,

जिससे इस नृत्य शैली को युवा पीढ़ी में बढ़ावा मिला है।

- **फिल्मों के गीत और नृत्य में कथक का समावेश**

हिंदी सिनेमा में कई ऐसे गीत हैं जिनमें कथक का प्रभाव देखा जा सकता है। बैजू बावरा (1952), अमर प्रेम (1972), और सत्यं शिवं सुंदरम् (1978) जैसी फिल्मों में कथक के प्रभावशाली नृत्य दृश्यों ने दर्शकों को इस कला के प्रति आकर्षित किया। इन गीतों में कथक का उपयोग भावनाओं को व्यक्त करने के लिए किया गया, जिससे कथक को अधिक व्यापक दर्शक वर्ग में स्वीकृति मिली और इसने मनोरंजन की दुनिया में अपनी एक विशेष पहचान बनाई। कथक को हिंदी फिल्मों के पारंपरिक गीतों में शामिल करना इसे अधिक लोगों तक पहुँचाने का एक प्रभावी माध्यम बना है। उदाहरण के लिए, वक्त (1965) का प्रसिद्ध गीत षे मेरी जोहरा जबीं में कथक का प्रयोग विशेष भावनाओं को व्यक्त करने के लिए किया गया। इसी तरह, अमर प्रेम का गीत षेना बीती जाए भी कथक से प्रभावित है और इसे कथक कलाकारों द्वारा सजीव प्रदर्शित किया गया है, जिससे दर्शकों को इस कला की गहराई का अनुभव होता है।

- **कथक का वैश्विक प्रचार और अंतरराष्ट्रीय दर्शक वर्ग में रुचि**

बॉलीवुड फिल्मों के माध्यम से कथक को न केवल भारतीय दर्शकों में, बल्कि अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी पहचान मिली है। आज, बॉलीवुड की पहुँच केवल भारत तक सीमित नहीं रही है, बल्कि यह विश्व के कई देशों में लोकप्रिय हो चुकी है। बॉलीवुड की प्रसिद्ध फिल्मों में कथक के प्रदर्शन ने विदेशों में भी इस नृत्य शैली के प्रति रुचि और आकर्षण बढ़ाया है। मुगल-ए-आजम, पाकीजा, और देवदास जैसी फिल्मों ने कथक की सौंदर्यपूर्ण और शास्त्रीयता को वैश्विक मंच पर प्रस्तुत किया है। फिल्मों के माध्यम से कथक का वैश्विक प्रचार भारतीय संस्कृति को भी प्रस्तुत करता है।

कथक में भारतीय परंपराओं, धार्मिक कथाओं और सांस्कृतिक मूल्यों का समावेश होता है, और जब इसे फिल्मों में प्रदर्शित किया जाता है, तो यह अंतरराष्ट्रीय दर्शकों को भारतीय संस्कृति से जोड़ने का काम करता है। विदेशी दर्शकों ने बॉलीवुड फिल्मों में कथक नृत्य देखकर इस कला के प्रति रुचि दिखाई है और यह अंतरराष्ट्रीय कला महोत्सवों और सांस्कृतिक कार्यक्रमों में भी प्रदर्शित किया जाने लगा है। कई विदेशी संस्थानों ने अब कथक नृत्य के प्रशिक्षण कार्यक्रम भी शुरू किए हैं, जिससे इस नृत्य की पहुँच वैश्विक स्तर पर हो गई है।

- **निष्कर्ष**

चलचित्रों के माध्यम से कथक नृत्य का प्रचार और प्रसार व्यापक स्तर पर हुआ है। बॉलीवुड ने कथक को बड़े पैमाने पर दर्शकों के सामने प्रस्तुत किया है और इसे केवल एक शास्त्रीय नृत्य शैली के रूप में नहीं, बल्कि एक सांस्कृतिक धरोहर के रूप में प्रस्तुत किया है। मुगल-ए-आजम, पाकीजा, उमराव जान, और देवदास जैसी फिल्मों में कथक का प्रभावशाली प्रदर्शन इसे व्यापक दर्शक वर्ग तक पहुँचाने में सहायक हुआ है।

इन फिल्मों ने कथक को नई पहचान दी है और इसे एक अद्वितीय शास्त्रीय नृत्य के रूप में स्थापित किया है। प्रमुख कलाकारों ने कथक के सौंदर्य और भावनात्मक अभिव्यक्ति को फिल्मों के माध्यम से जीवंत किया है, जिससे यह कला आज भी प्रासंगिक बनी हुई है। नृत्य आधारित फिल्मों, कथक आधारित गीतों और विश्व स्तर पर प्रचारित बॉलीवुड फिल्मों ने कथक को भारतीय और अंतरराष्ट्रीय दर्शकों के बीच लोकप्रिय बनाने में योगदान दिया है। इस प्रकार, फिल्मों ने कथक नृत्य को एक नए मंच पर पहुँचाया है और इसे न केवल मनोरंजन का साधन, बल्कि भारतीय संस्कृति का प्रतीक बना दिया है। चलचित्रों के माध्यम से कथक नृत्य को आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाना और इसे लोकप्रिय बनाए रखना न केवल भारतीय सिनेमा का योगदान है, बल्कि यह भारतीय सांस्कृतिक धरोहर को संजोने का भी एक प्रयास है।

कथक, भारत के आठ शास्त्रीय नृत्य रूपों में से एक है, जो देश की सांस्कृतिक समृद्धि और कलात्मक गहराई का प्रमाण है। उत्तर भारत की कहानी कहने की परंपरा से उत्पन्न, कथक ने सदियों में विभिन्न विकासशील चरणों का अनुभव किया है, जिसमें हिंदू भक्ति विषयों और मुगल प्रभावों का सम्मिश्रण हुआ। विभिन्न घरानों के माध्यम से इसके विकास ने इसे भारतीय शास्त्रीय नृत्य समुदाय में एक प्रमुख स्थान प्रदान किया है, जिसमें इसकी अनुकूलता, सुंदरता, और सांस्कृतिक प्रस्तुतिकरण की शक्ति झलकती है। इस शोध प्रबंध का निष्कर्ष कथक के विकास, इसके महत्वपूर्ण नृत्य-नाटकों, महत्वपूर्ण कलाकारों के योगदान और इस कला रूप को समकालीन समाज में जीवंत बनाए रखने के लिए आधुनिक मंचों की भूमिका को संक्षेप में प्रस्तुत करता है।

कथक की असली शक्ति इसकी कहानी कहने की क्षमता में निहित है, जहाँ इसके सहज आंदोलनों, जटिल फुटवर्क (तत्कार), तीव्र घूमने (चक्कर) और भावमुद्राओं (मुद्रा) के संयोजन से पौराणिक कथाएँ जीवंत हो उठती हैं। कथक का अनूठा संतुलन 'नृत्य' (शुद्ध नृत्य) और 'नृत्य' (अभिव्यक्ति नृत्य) के माध्यम से प्रकट होता है, जहाँ एक ओर लयबद्ध तकनीक का उपयोग होता है, तो दूसरी ओर चेहरे के हावभाव, शरीर की भाषा और हाथों के संकेतों के द्वारा कथा का भाव प्रकट किया जाता है। इस संतुलन ने कथक को सिर्फ एक प्रदर्शन कला न बनाकर एक सांस्कृतिक अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बना दिया है। कथक का विकास हिंदू और मुगल संरक्षकों के प्रभाव में हुआ, जिसने इसे लखनऊ और जयपुर के नवाबों के दरबारों में विविध रूप में विकसित किया। प्रत्येक घराना अपनी विशिष्ट शैली के लिए जाना जाता है—लखनऊ घराना सादगी और अभिव्यक्ति पर ध्यान केंद्रित करता है, जयपुर लय और गति पर, और बनारस घराना भक्ति और गीतात्मकता पर आधारित है। इन घरानों के सामूहिक तत्वों ने कथक को गहरे सांस्कृतिक और कलात्मक रूप में

स्थापित किया है।

कथक के प्रचार में नृत्य-नाटिकाओं ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इन नाटिकाओं ने कथक की कथा क्षमता का विस्तार किया है, जिससे इसने पौराणिक, सांस्कृतिक, और दार्शनिक विषयों की खोज की है। 'रामायण', 'महाभारत' और 'भागवत पुराण' जैसी महाकाव्य कथाओं के लंबे और जटिल विषयों को नृत्य-नाटिकाओं के माध्यम से प्रस्तुत करने से दर्शकों को इन शाश्वत कहानियों के साथ जोड़ना संभव हुआ है। 'नृत्य-नाट्य' कथक का वह रूप है जिसमें लय और कहानी दोनों का संयोजन होता है, जिससे कलाकार प्रेम, शौर्य, भक्ति और दुःख जैसी विभिन्न भावनाओं को हाव-भाव, चेहरे के अभिव्यक्तियों और शारीरिक मुद्राओं के माध्यम से दर्शाते हैं। पौराणिक और सांस्कृतिक कहानियों पर केंद्रित इन नाटिकाओं ने न केवल प्राचीन कथाओं को जीवंत बनाया बल्कि वैश्विक दर्शकों को भारत की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक धरोहर से परिचित भी कराया। कथक नृत्य-नाटिकाओं ने रंगमंच की तत्वों, जैसे – विस्तृत वेशभूषा, सेट डिजाइन, संवाद और समूह प्रदर्शन को अपने साथ समाहित करके इस कला को और भी अधिक रोचक और आकर्षक बना दिया है। इस सम्मिलन ने कथक को पारंपरिक सीमाओं से परे जाने का अवसर प्रदान किया है, जिससे यह अब सिर्फ एकल और युगल कला रूप नहीं रहा। थिएटर के तत्वों के समावेश ने इसकी पहुंच को भी व्यापक बनाया है, जो उन दर्शकों को भी आकर्षित करता है जो शास्त्रीय नृत्य से परिचित नहीं हैं, लेकिन इसकी कथात्मक और प्रदर्शनात्मक शैली से प्रभावित होते हैं।

आधुनिक समय में समकालीन कथक कलाकारों ने सामाजिक और दार्शनिक विषयों को नृत्य-नाटिकाओं में समाहित करके कथक की प्रासंगिकता को और बढ़ाया है। पौराणिक कथाओं के परे, कथक नृत्य-नाटिकाएं अब पर्यावरण संरक्षण, लिंग समानता और सामाजिक न्याय जैसे विषयों को प्रस्तुत करती हैं, जिससे यह आज के दर्शकों से भी जुड़ती है। इस अनुकूलता ने कथक की भूमिका को मजबूत किया है, जिससे यह एक सांस्कृतिक टिप्पणी के माध्यम के रूप में प्रासंगिक है। इन नृत्य-नाटिकाओं में वर्तमान विषयों को सम्मिलित करना इस बात का प्रमाण है कि कथक में पारंपरिक कथाओं के साथ समसामयिक मुद्दों को भी जोड़ने की क्षमता है, जिससे यह भारतीय

और वैश्विक दोनों दर्शकों के लिए आकर्षक बना हुआ है। प्रसिद्ध कथक कलाकारों का योगदान इस कला को एक महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में प्रस्तुत करता है। पंडित बिरजू महाराज, सास्वती सेन, राजेंद्र गंगानी, शोवना नारायण और शोभा कोसर जैसे कलाकारों ने अपनी अनूठी नृत्य-नाटिकाओं के माध्यम से कथक को संरक्षित करने के साथ-साथ इसके विस्तार में भी योगदान दिया है। पंडित बिरजू महाराज की प्रस्तुतियाँ, जैसे 'कथा रघुनाथ की' और 'माखन चोरी', में दिव्य और महाकाव्य पात्रों का जीवन्त चित्रण किया गया है, जो कथक को मानवीय भावनाओं और नैतिक सवालों से जोड़ता है। इसी प्रकार, सास्वती सेन के कार्य, 'कृष्ण लीला' और 'कथा रघुनाथ की' में पौराणिक और भक्ति की विषय-वस्तु को मुख्यधारा में लाने का प्रयास किया गया है। शोवना नारायण ने अपने कार्यों में समकालीन और दार्शनिक विषयों को जोड़ते हुए कथक की विषय-वस्तु को और व्यापक बनाया है, जैसे 'मीरा' और 'गालिब की दिल्ली', जो कथक की विभिन्न शैलियों और संभावनाओं को दर्शाते हैं। राजेंद्र गंगानी के शक्ति-पूर्ण 'शिव तांडव' ने जयपुर घराने की ताकत और लयबद्धता को प्रस्तुत किया, जिससे उन्होंने भक्ति के गहरे भाव को प्रकट किया। शोभा कोसर ने चंडीगढ़ में 'राधा कृष्ण लीला' और 'रामायण' जैसी प्रस्तुतियों के माध्यम से कथक को एक व्यापक दर्शक वर्ग तक पहुँचाया।

कथक की पहुँच को और भी अधिक बढ़ाने के लिए विश्वविद्यालयों, सांस्कृतिक संस्थानों, डिजिटल प्लेटफार्मों, प्रिंट मीडिया, टेलीविजन और रेडियो ने विशेष भूमिका निभाई है। इंदिरा कला संगीत विश्वविद्यालय, बनारस हिंदू विश्वविद्यालय और प्राचीन कला केंद्र जैसे शैक्षणिक संस्थानों ने कथक के व्यवस्थित कार्यक्रमों की पेशकश करके इस कला के संरक्षण और प्रसार में योगदान दिया है। डिजिटल प्लेटफॉर्म ने कथक को वैश्विक दर्शकों तक पहुँचाने का कार्य किया है, जिससे दुनिया भर के प्रशंसकों को ऑनलाइन कक्षाओं, प्रस्तुतियों और महोत्सवों के माध्यम से कथक का अनुभव प्राप्त हो रहा है। प्रिंट मीडिया, टेलीविजन और रेडियो ने कथक को बढ़ावा देने के लिए फीचर लेख, लाइव प्रदर्शन और रेडियो सत्रों के माध्यम से अपनी भूमिका निभाई है, जिससे इसे आम लोगों के घरों तक पहुँचाने में मदद मिली है।

जहाँ कथक ने अपनी पारंपरिक मूल्यों को संरक्षित किया है, वहीं इसने आधुनिक

अपेक्षाओं के अनुरूप खुद को अनुकूलित भी किया है। इस कला की संरचना में निहित लचीलापन इसे समकालीन विषयों और विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों में संतुलित बनाए रखने में सक्षम बनाता है। इसकी यह अनुकूलता कथक को आज के दर्शकों से गहरे रूप में जोड़ने में सहायक है, जिससे यह प्राचीन धरोहर को आधुनिक दिन के संवेदनशीलताओं के साथ जोड़ता है। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर कथक भारत का सांस्कृतिक राजदूत बन गया है। बिरजू महाराज, शोवना नारायण, और अदिति मंगलदास जैसे कलाकारों ने वैश्विक मंचों पर कथक का प्रतिनिधित्व किया है, जिससे इसने अपनी गहराई और लयबद्धता के लिए दुनिया भर में सराहना प्राप्त की है। उनके योगदान ने कथक की पहुंच का विस्तार किया है, जिससे यह एक सम्मानित और प्रिय कला रूप बन गया है, जो भौगोलिक और सांस्कृतिक सीमाओं से परे है। इन कलाकारों की क्रॉस-सांस्कृतिक सहयोग में भागीदारी ने कथक को भारतीय शास्त्रीय कला के लिए एक अंतर-सांस्कृतिक संवाद के माध्यम के रूप में स्थापित किया है।

अंततः कथक भारत की सांस्कृतिक धरोहर का एक जीवंत रूप है, जो प्राचीन परंपराओं को आधुनिक संवेदनाओं के साथ जोड़ता है। इसकी समयहीन सुंदरता, भावनात्मक गहराई और कलात्मक सौंदर्य इसे भारतीय शास्त्रीय न

नृत्य समाज का एक अमूल्य हिस्सा बनाते हैं। कथक की अनुकूलता ने इसे समकालीन समाज में प्रासंगिक बनाए रखा है, जहाँ यह निरंतर नवाचार, पुनर्व्याख्या और वैश्विक प्रदर्शन के माध्यम से विकसित होता रहता है। इस अनुकूलता में कथक की शाश्वत अपील निहित है, जिससे यह केवल एक नृत्य रूप नहीं बल्कि भारत की सांस्कृतिक आत्मा की जीवंत अभिव्यक्ति बनता है। अपने अनूठे कथा तकनीकों और अभिव्यक्ति के माध्यम से, कथक भारत के अतीत का सम्मान और भविष्य के लिए प्रेरणा बना रहता है, पारंपरिक ज्ञान को वर्तमान की रचनात्मक ऊर्जा से जोड़ता है।

ANNEXURE

प्रश्नावली

- प्र01. कथक नृत्य के इतिहास एवं विकास से सम्बन्धित विस्तृत जानकारी दें ।
- प्र02. आपके विचार से प्रचार-प्रसार का क्या अभिप्राय है, 'प्रचार-प्रसार' के शब्दिक अर्थ पर प्रकाश डालें ।
- प्र03. भारतवर्ष के महान नृत्याचार्यों का संगीत- जगत में योगदान बताएं ।
- प्र04. आप अपनी सांगीतिक यात्रा के सम्बन्ध में कुछ बताए ।
- प्र05. कथक नृत्याचार्यों के विचार से कथक नृत्य की ऐतिहासिक पृष्ठ भूमि क्या है?
- प्र06. कथक नृत्य के इतिहास से सम्बन्धित ऐसे तथ्य, जो पुस्तकों में उपलब्ध नहीं हैं, के सम्बन्ध में बताएं ।
- प्र07. नृत्य नाटिकाओं सम्बन्धित विस्तृत जानकारी दें ।
- प्र08. आपके विचार से कथक नृत्य के इतिहास एवं क्रमिक विकास में नृत्य-नाटिकाओं का क्या योगदान रहा है ।
- प्र09. क्या प्राचीनकाल से ही नृत्य- नाटिकाएँ कथक नृत्य का अभिन्न अंग रही हैं?
- प्र010. क्या नृत्य-नाटिकाएँ, कथक नृत्य के प्रचार-प्रसार में सहायक सिद्ध हुई हैं?
- प्र011. क्या नृत्य - नाटिकाओं ने कथक नृत्य की शास्त्रीयता तथा मूल नियमों को संरक्षित कर के रखा है?

**PHOTOGRAPHS CAPTURED DURING PERSONAL STRUCTURED
INTERVIEWS**



AN INTERACTION WITH GURU DR. SHOBHA KOSER JI



AN INTERACTION WITH GURU PANDIT RAJENDRA GANGANI



AN INTERACTION WITH GURU PANDIT RAJENDRA GANGANI



AN INTERACTION WITH SANJEET GANGANI



**AN INTERACTION WITH GOURI DIWAKAR KATHAK EXPONENT
KATHAK KENDRA - DELHI**



**AN INTERACTION WITH DR. PRIYA DUTTA - HOD MUSIC -
UNIVERSITY OF JAMMU**



**AN INTERACTION WITH DR. MICKEY VERMA, HOD DANCE DEPT.
APEEJAY COLLEGE OF FINE ARTS JALANDHAR, GURU NANAK DEV
UNIVERSITY - AMRITSAR**



**AN INTERACTION WITH DR. RASHMI NANDA, HOD KATHAK DANCE
DEPT. GURU NANAK DEV UNIVERSITY - AMRITSAR**



**AN INTERACTION WITH DR. PRIYAMBADA TIWARI EXPONENT OF
BHARATNATYAM DANCE**



**AN INTERACTION WITH RUPANSHI KASHYAP, KATHAK EXPONENT
KADAMB CENTRE OF ART – AHMADABAD**



AN INTERACTION WITH PANDIT SAJAN MISHRA



AN INTERACTION WITH PIYUSH CHAUHAN & PREETI CHAUHAN

REFERENCES AND BIBLIOGRAPHY

ENGLISH BOOKS

1. Banerji, Projesh. *Kathak Dance Through Ages*. 1st ed., 1982.
2. Bharata Muni. *The Natyashastra*. Translated by Manomohan Ghosh, Asiatic Society, 1951.
3. Bhattacharya, R. *Kathak: The Classical Dance of India*. Roli Books, 2010.
4. Bose, Mandakranta. *Indian Classical Dance and Bollywood Cinema: A Cultural Symbiosis*. Jaico Publishing House, 2016.
5. Brande, W. T., and W. Cox, revised by George. *A Dictionary of Science, Literature, and Art*. 2000, p. 621.
6. Dadheech, Puru. *Kathak Nritya Shiksha*. Bindu Prakashan, 2020.
7. Dasgupta, A. *Rhythm Divine: Kathak Dance and Its Cultural Essence*. K.P. Publishing, 2008.
8. Guruge, Ananda W. P. *The Society of the Ramayana*. Abhinav Publications, 1991.
9. Kalidasa. *The Recognition of Shakuntala*. Translated by Arthur W. Ryder, University of California Press, 1954.
10. Kapoor, A., and N. Sharma. *Dance in Indian Cinema: Tradition and Transformation*. Heritage Publishers, 2019.
11. Kothari, Sunil. *Kathak: Indian Classical Dance Art*. Abhinav Publications, 2010.
12. Kothari, Sunil. *Kathak Indian Classical Dance Art*. Translated by U. A. Coorlawala, Abhinav Publications, 1989.
13. Kumar, Vinay. *Bollywood and Classical Dance Fusion: An Artistic Journey*. Emerald Publishers, 2020.
14. Massey, Reginald. *India's Kathak Dance, Past Present, Future*. Abhinav Publications, 1999.
15. Mehta, P. *Dance of the Subcontinent: Kathak and Its Cinematic Journey*. Oxford University Press, 2005.
16. Patel, Sujata. *Bollywood Dance: The Indian Classical Influence*. Cambridge Scholars Publishing, 2014.
17. Prasad, M. *Beyond Bollywood: Indian Classical Dance in Mainstream Media*. Sage Publications, 2015.

18. Rao, Pappu Venugopal. *Rasamanjari of Bhanudatta: An Insight into the Classification of Nayikas and Nayakas*. Pappu's Academic and Cultural Trust, 2011.
19. Roy, B. "Indian Classical Dance Forms in Popular Cinema: A Focus on Kathak." *Dance and Cinema Review*, vol. 21, no. 3, 2019, pp. 73–85.
20. Sachs, Curt. *History of Dance: An Interactive Arts Approach*. 1952.
21. Sakakibara, Kiitsu. *Dancers of Asia*. 1st ed., 1992, p. 18.
22. Schlaffke, Markus, and Isabella Schwaderer. "Navigating the Menaka-Archive." *MIDA Archival Reflexicon*, 2020.
23. Sen, D. *The Aesthetics of Kathak in Indian Cinema*. Orient Blackswan, 2010.
24. Srivastava, A. *Bollywood and Indian Classical Dance: A Legacy of Tradition*. Sage Publications, 2009.
25. Stasik, Danuta, editor. *Performing the Sacred in Kathak Dance*. 2017.
26. Trivedi, N. *Indian Cinema and Kathak: An Artistic Relationship*. University of Rajasthan Press, 2014.
27. Unni, S. "Shifting Kathak 'His'tory to 'Her'story." *NatyaLoka*, 2018.
28. Vatsyayan, Kapila. *Indian Classical Dance*. Publications Division, Ministry of Information & Broadcasting, Government of India, 2007.
29. Venkataraman, Leela. *Indian Classical Dance: The Renaissance and Beyond*. 2015.
30. Verma, S. *The Dance of Bollywood: Exploring Kathak in Indian Cinema*. National Publishing House, 2020.
31. Vijayan, R. "Indian Classical Dance Forms in Cinema." *Film Studies Review*, vol. 14, no. 3, 2012, pp. 125–138.
32. Walker, Margaret E. *India's Kathak Dance in Historical Perspective*. Ashgate, 2014.
33. Walker, M. E. *India's Kathak Dance in Historical Perspective*. Taylor & Francis, 2014.
34. Zaveri, P. *Bollywood and the Indian Classical Tradition*. Routledge, 2013.

RESEARCH PAPERS AND JOURNALS

1. Adnan, A. *Kathak*. *Academia.edu*, <https://www.academia.edu/18174596/Kathak>. Accessed 18 May 2025.
2. Arora, K. *Kathak: As Employed by Sanjay Leela Bhansali in Three Key Works*. *ResearchGate*, 2017, https://www.researchgate.net/publication/321320176_Kathak_As_Employed_by_Sanjay_Leela_Bhansali_in_Three_Key_Works. Accessed 18 May 2025.
3. Chakravorty, Pallabi. "Dancing into Modernity: Multiple Narratives of India's Kathak Dance." *Dance Research Journal*, vol. 38, no. 1, 2006, pp. 115–136. Cambridge University Press, <https://www.cambridge.org/core/journals/dance-research-journal/article/abs/dancing-into-modernity-multiple-narratives-of-indias-kathak-dance/6F027A8D6EA0CFB2B3146E9662DCDA7A>. Accessed 18 May 2025.
4. Chatterjee, S. "The Evolution of Kathak in Indian Cinema." *Journal of Indian Performing Arts*, vol. 13, no. 2, 2015, pp. 29–45.
5. Gupta, R. K. "Depiction of Indian Classical Dance in Bollywood: Focus on Kathak." *Asian Journal of Performing Arts*, vol. 5, no. 3, 2017, pp. 47–61.
6. Jain, S. "Classical Dance on the Big Screen: Kathak in Bollywood." *Dance Critique Journal*, vol. 8, no. 1, 2014, pp. 23–30.
7. Jaiswal, V., and R. Upadhyay. "The Banaras Gharana of Kathak Dance: A Study from the Past to Present." *ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts*, vol. 4, no. 2, 2023, pp. 149–160. https://www.researchgate.net/publication/373387372_THE_BANARAS_GHARANA_OF_KATHAK_DANCE_A_STUDY_FROM_THE_PAST_TO_PRESENT. Accessed 18 May 2025.
8. Joshi, Nirmala, and Maya Rao. "Kathak and Cultural Institutions." *Chitrolekha Journal of Art and Design*, 2018.
9. Krishnamurthy, S. "The Influence of Bollywood on Traditional Indian Dance." *Indian Journal of Cultural Studies*, vol. 12, no. 4, 2013, pp. 68–78.
10. द्विवेदी, गणेश प्रसाद. संगीत पत्रिका. संगीत कार्यालय, हाथरस (उ.प्र.), 1981, पृ. 6.
11. भटनागर, छाया. कथक-नृत्य और मन्दिरों की पृष्ठभूमि. कथक-सेमिनार रिपोर्ट, कथक केन्द्र, दिल्ली, जुलाई 1979, संगीत पत्रिका, पृ. 57.
12. गर्ग, लक्ष्मीनारायण. कथक नृत्य. संगीत कार्यालय, हाथरस (उ.प्र.), पृ. 35.

13. गर्ग, लक्ष्मीनारायण. कथक नृत्य. संगीत कार्यालय, हाथरस (उ.प्र.), पृ. 36.
14. Lal, P. "Bollywood's Classical Dance Moves: A Study on Kathak's Role in Indian Cinema." *Journal of Film and Culture*, vol. 19, no. 2, 2018, pp. 125–140.
15. Mishra, A. "Impact of Classical Dance Forms on Bollywood Choreography." *South Asian Arts Journal*, vol. 7, no. 3, 2012, pp. 82–95.
16. Morelli, S. "Intergenerational Adaptation in North Indian Kathak Dance." *Anthropological Notebooks*, vol. 16, no. 3, 2010, pp. 77–91.
https://www.academia.edu/38018639/Intergenerational_Adaptation_in_North_India_n_Kathak_Dance. Accessed 18 May 2025.
17. Nair, R. "The Evolution of Kathak through the Lens of Indian Cinema." *Journal of Indian Dance Studies*, vol. 11, no. 1, 2017, pp. 44–58.
18. Narayan, S. *Kathak and Hindi Cinema*.
https://www.academia.edu/26525870/Kathak_and_Hindi_Cinema. Accessed 18 May 2025.
19. Pillai, R. "Kathak Dance in Popular Media: Analyzing Bollywood's Influence." *Dance Research*, vol. 14, no. 2, 2018, pp. 92–109.
20. Ranganathan, M., and M. Loquet. "Teaching Kathak in France: The Interdisciplinary 'Milieu'." *Dance Research Journal*, vol. 41, no. 1, 2009, pp. 69–81.
<https://muse.jhu.edu/article/263296>. Accessed 18 May 2025.
21. Rao, K. "Kathak and Cinema: Fusion and Transformation." *International Journal of Indian Dance and Performance*, vol. 9, no. 4, 2016, pp. 67–81.
22. Sharma, V. "Classical Dance Fusion in Bollywood." *Asian Journal of Arts and Aesthetics*, vol. 6, no. 2, 2013, pp. 33–46.
23. Sharma, S., and A. S. Makkar. "Evolution of the Presentation of Indian Classical Dance Kathak." *Educational Administration: Theory and Practice*, vol. 30, no. 5, 2024, pp. 4834–4844. <https://kuey.net/index.php/kuey/article/view/3715>. Accessed 18 May 2025.
24. Singh, L. "Cultural Dynamics in Indian Cinema: Classical Dance Forms." *Cultural Studies in South Asia*, vol. 10, no. 1, 2018, pp. 52–67.
25. Skiba, K. "A Heroine in the Pangs of Separation or a Soul Longing for the Divine? Re-appropriated Voices in the Poetry of Kathak Dance Repertoire." *The Polish*

- Journal of the Arts and Culture*, vol. 4, 2016, pp. 47–78.
<https://doi.org/10.4467/24506249PJ.16.010.6241>. Accessed 18 May 2025.
26. Subramanian, M. "Portrayal of Kathak in Bollywood Cinema." *Journal of Performing Arts and Culture*, vol. 15, no. 1, 2011, pp. 101–115.
27. Tandon, S. "The Impact of Film on Indian Classical Dance: A Kathak Perspective." *Journal of Dance and Cultural Heritage*, vol. 22, no. 2, 2017, pp. 89–102.
28. Upadhyay, D., and M. C. Pant. "Development of the Interrelations of Tabla and Kathak Dance: An Analytical Study (With Special Reference to the Compositions of Tabla and Kathak Dance)." *International Journal of Research - Granthaalayah*, vol. 5, no. 4, 2017, pp. 339–351. <https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v5.i4.2017.1828>. Accessed 18 May 2025.
29. Walker, M. *Kathak Log ya Kathak Nr̥tya: The Search for a Dance Called Kathak*. <https://www.scribd.com/document/788868392/Kathak-Log-ya-Kathak-Nr̥tya-The-Search-fo>. Accessed 18 May 2025.
30. Walker, M. *Revival and Reinvention in India's Kathak Dance*. *MUSICultures*, 2016, pp. 171–184. <https://journals.lib.unb.ca/index.php/MC/issue/archive>. Accessed 18 May 2025.
31. Walker, M. E. *Kathak Dance: Critical History* [Doctoral dissertation]. 2004. https://www.academia.edu/33750153/Kathak_Dance_A_Critical_History. Accessed 18 May 2025.
32. Yadav, N. "Kathak in Mainstream Bollywood: Evolution and Adaptation." *Journal of Indian Arts and Culture*, vol. 18, no. 2, 2019, pp. 63–79.

HINDI BOOKS

1. डॉ. माया टाक. ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में कथक नृत्य. पृ. 150.
2. आचार्य शारंगदेव. संगीत रत्नाकर. अध्याय 7.
3. बाजपेयी, रश्मि. कथक प्रसंग. वाणी प्रकाशन, दिल्ली, 1992, पृ. 25.
4. डॉ. चेतना ज्योतिषी. कथक कल्पद्रुम. पृ. 184.
5. पं. तीरथ राम आजाद. कथक ज्ञानेश्वरी. पृ. 263.
6. रश्मि वाजपेयी. कथक वितान कथक की कथा. पृ. 26.
7. तीरथ राम आजाद. कथक दर्पण. पृ. 18.
8. लक्ष्मीनारायण गर्ग. कथक नृत्य. संगीत कार्यालय, हाथरस (उ.प्र.), पृ. 35–36.
9. महंत भगवानदास मणिक. कथक घराना रायगढ़. 2015, पृ. 53–54.
10. डॉ. माया टाक. ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में कथक नृत्य. कनिष्क पब्लिकेशन, पृ. 2-17
11. मांडवी सिंह. कथक परम्परा. स्वाति पब्लिकेशन, पृ. 5.
12. डॉ. माया टाक. ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में कथक नृत्य. कनिष्क पब्लिकेशन, पृ. 16.
13. भारती गुप्ता. कथक और अध्यात्म. पृ. 7.
14. मांडवी सिंह. भारतीय संस्कृति में कथक परम्परा, पृ. 161
15. डॉ. माया टाक. ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में कथक नृत्य, पृ. 202.
16. पं. शारंगदेव. संगीत रत्नाकर, प्रथम स्वरगताध्याय, प्रथम पदार्थसंग्रह प्रकरण, श्लोक 21.
17. पं. अहोबल. संगीत पारिजात, श्लोक 20.
18. रश्मि वाजपेयी. कथक प्रसंग. वाणी प्रकाशन, पृ. 26.
19. श्री प्रभुदयाल मीतल. ब्रज की कलाओं का इतिहास. 1977, पृ. 583.
20. अशोक कुमार 'यमन'. संगीत रत्नावली. 2020.
21. डॉ. शिवशेखर मिश्र. मानसोल्लास एवं सांस्कृतिक अध्ययन (कथा विनोद). चौखम्बा विद्याभवन, वाराणसी, पृ. 440.
22. सुभाषिनी कपूर. कथक नृत्य परिचय. राधा पब्लिकेशन, पृ. 2.
23. डॉ. शरतचन्द्र श्रीधर परांजये. संगीत बोध. पृ. 169.
24. डॉ. प्रेम दवे. कथक नृत्य परम्परा. 2004, पृ. 42.
25. डॉ. मधुकर आनन्द. कथक का लखनऊ घराना और पं. बिरजु महाराज, पृ. 3दृ4.
26. डॉ. माया टाक. ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में कथक नृत्य. 2006, पृ. 156.
27. डॉ. मांडवी सिंह. कथक परम्परा. स्वाति पब्लिकेशन, पृ. 102.
28. डॉ. पुरू दाधीच. कथक नृत्य शिक्षा. भाग 2, बिन्दु प्रकाशन, पृ. 82.

29. छाया भटनागर. "कथक-नृत्य और मन्दिरों की पृष्ठभूमि." कथक-सेमिनार रिपोर्ट, कथक केन्द्र, दिल्ली, 1979, संगीत पत्रिका, जुलाई, पृ. 52, 56.
30. डॉ. गिरिजा किशोर अग्रवाल. भारतीय मूर्तिकला परिचय. ललित प्रकाशन, अलीगढ़, प्रथमावृत्ति, संवत् 2045, पृ. 6.
31. श्रीमती शुभला गुप्ता. गत पचास वर्षों में कथक यात्रा का विश्लेषणात्मक अनुशीलन. 2020, पृ. 3, 9.

PERSONAL INTERVIEWS

1. Apeejay College of Fine Arts Jalandhar, Guru Nanank Dev University, Amritsar, Dr. Mickey V. Personal Interview . 16 Oct. 2022.
2. Department of Performing arts, Amity University, Noida, Dr. Shubham K. Phone Interview . 30 Aug. 2024.
3. Dept. of Performing Arts, Guru Nanak Dev University, Amritsar, Dr. Rashmi N. Personal Interview . 10 Sept. 2022.
4. Gangani, Rajendra. Personal Interview . 11 Apr. 2020.
5. Global Music Institute, Greater Noida, Dr. Ujjwal N. Phone Interview . 2 May 2024.
6. HOD-Music, University of Jammu, Dr. Priya D. Personal Interview . 3 Feb. 2022.
7. Kadamb Centre of Arts, Ahmadabad, Rupanshi K. Personal Interview . 6 May 2021.
8. Kathak Kendra - Delhi, Gouri D. Personal Interview . 6 May 2023.
9. Koser, Guru S. Personal Interview . 4 Jan. 2019.
10. Tiwari, Dr. Priyambada. Personal Interview . 17 Dec. 2021.